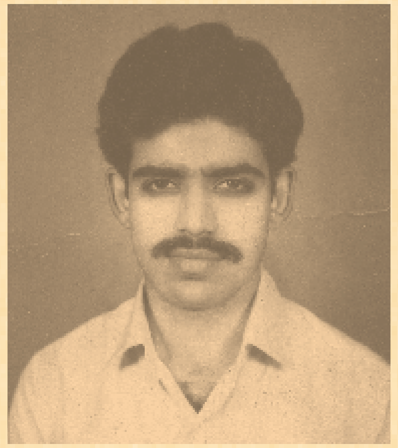

सांसद शंकर लालवानी

शंकर लालवानी का जन्म 16 अक्टूबर 1961 को इंदौर में हुआ था। उनके पिता जमनादास लालवानी अखण्ड भारत के विभाजन से पहली ही आए। शंकर लालवानी की माताश्री श्रीमती गोरा देवी लालवानी घरेलू महिला हैं। पारिवारिक वातावरण में शंकर लालवानी की पढ़ाई–लिखाई हुई। मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से उन्होंने हायर सेकेण्डरी की परीक्षा पास की और फिर मुंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध वीर माता जीजाबाई टेक्नोलॉजिकल इंस्टीट्यूट में बी–टेक की पढ़ाई करने के लिए चले गए। उन्होंने बी–टेक की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास की और फिर इंदौर आकर कारोबार और कंसल्टेंसी में जुट गए।

शिकारपुर से हुई शुरूआत

1994 से 1999 तक वे इंदौर नगर निगम में पार्षद रहें। इसके बाद 1999 से 2009 तक 10 साल वे इंदौर नगर निगम में सभापति के पद पर रहे। 2013 में उन्हें 5 साल के लिए इंदौर विकास प्राधिकरण का अध्यक्ष बनाया गया। 2019 में जब उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा का टिकट दिया, तब वे लगभग साढ़े पांच लाख ऐतिहासिक वोटों से जीतें। सांसद बनने के बाद वे लोकसभा में हाउसिंग और अर्बन अफेयर्स की स्थायी समिति के सदस्य तो है ही। कमेटी ऑन एप्सेंस ऑफ मेम्बर फ्रॉम द सिटिंग ऑफ द हाउस के सदस्य भी हैं। इसके अलावा वे संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय की कंसल्टीव समिति के सदस्य भी हैं।

शंकर लालवानी का सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान रहा है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में 2 वाचनालयों की स्थापना करने में प्रमुख भूमिका निभाई। लोक संस्कृति मंच के माध्यम से वे भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र को संपन्न बनाने में जुटे है। कला और संस्कृति के कार्यक्रमों में युवाओं को जोड़ना इनका लक्ष्य रहा है और बड़ी संख्या में लोग उनके आयोजनों से जुड़े हैं। इंदौर के छोटे से छोटे सांस्कृतिक आयोजन से लेकर बड़े से बड़े आयोजन में उनकी भूमिका साफ नजर आती है। चाहे हरतालिका महोत्सव हो या गुड़ी पड़वा महोत्सव, सिंधी समाज के लोगों के आयोजन हो या पाकिस्तान से आए अप्रवासी हिन्दुओं के कार्यक्रम।

वे हर साल इंदौर में मालवा उत्सव जैसा सजीव आयोजन करते है, जिसमें लाखों लोग शामिल होकर भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता से रूबरू होते है। मालवा उत्सव के माध्यम से उन्होंने देश की संस्कृति को लोकप्रिय बनाने का काम किया है और कलाकारों के लिए भी नई संभावनाएं खोजी है। इसके साथ ही उन्होंने लुप्त हो रही कलाओं को मंच दिया और भारतीय हस्तशिल्प और कारीगरों के लिए भी बाजार उपलब्ध कराने का काम किया।

शंकर लालवानी को इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में गहन रूचि है। इंदौर और आसपास के तमाम शहरों के विकास को लेकर वे बहुत गंभीर हैं। शायद उनकी रूचि को देखते हुए ही उन्हें संसदीय समिति का सदस्य बनाया गया हैं। इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने 5 साल तक इंदौर और उसके आसपास के क्षेत्र में विकास के लिए अनेक योजनाएं बनाई और उन पर अमल करने के लिए प्रेरित किया। यदि आज इंदौर अपने विकसित रूप में नजर आता है, तो इसके पीछे शंकर लालवानी के योगदान को याद रखा जाना चाहिए, जो उन्होंने पार्षद, सभापति नगर निगम और इंदौर विकास प्राधिकरण के प्रमुख होने के नाते किया था।

स्वच्छता में इंदौर के लगातार 5 बार अव्वल रहने के पीछे भी शंकर लालवानी का योगदान रहा है। जब पांचवीं बार स्वच्छता सर्वे किया जा रहा था, तब इंदौर नगर निगम में जनप्रतिनिधियों के पद रिक्त थे, क्योंकि निवर्तमान निगम परिषद के चुनाव कोरोना काल में

शिकारपुर से हुई शुरूआत

नहीं हो पाए थे। ऐसे में स्वच्छता के कार्यों का समन्वय भी शंकर लालवानी के नेतृत्व में ही किया गया। जब पांचवीं बार इंदौर को सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया और दिल्ली में भव्य समारोह में इंदौर के प्रतिनिधियों को पुरस्कृत किया गया, तब शंकर लालवानी को भी आमंत्रित किया गया था। स्वच्छता के लिए जन-जन में जागरूकता फैलाने का काम भी वे हमेशा से करते आए है।

शंकर लालवानी कबड्डी और तैराकी के खेलों में रूचि रखते हैं। सांस्कृतिक आयोजनों में भी उनकी अच्छी खासी रूचि है। वे नियमित रूप से योग करते है और शाकाहारी जीवन शैली को अपनाए हुए है। उनके प्रयासों से इंदौर में कला और संस्कृति के क्षेत्र में 9 विश्व रिकॉर्ड बनें। इंदौर की यातायात समस्या को हल करने के लिए उन्होंने शहर में अनेक पुलों और फ्लायओवर के लिए पहल की थी। आज वे सब इंदौर में होने से यातायात में काफी हद तक सुविधा मिल चुकी हैं। उन्होंने शहर में और शहर के आसपास बड़ी संख्या में पेड़ लगाने का अभियान चलाया था। इसी के साथ युवाओं को रोजगार देने के लिए उन्होंने अनेक तरह की योजनाएं भी शुरू करवाई है। इंदौर शहर की सुंदरता में भी उनक योगदान अतुलनीय हैं।

सिन्धी समाज के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन

विस्थापन के बाद अर्श तक

शंकर लालवानी के पिता श्री जमनादास लालवानी अखण्ड भारत के सिंध इलाके के शिकारपुर कस्बे में रहते थे। लक्खीदार चौराहे नामक व्यस्त और महंगे इलाके में उनकी हवेली थी। भारत के विभाजन के ठीक पहले के दौर में अनिश्चितता का माहौल था, इसलिए वे अपना सबकुछ छोड़कर राजस्थान के रास्ते से ब्यावरा पहुंचे। अपने पैतृक स्थान से वे केवल जरूरत का सामान ही लेकर आ सके थे। उस दौर में भी लूटपाट की वारदातें बहुत होती थी, इसलिए कोई महंगा सामान नहीं ला सकें। शिकारपुर के लक्खीदार चौराहे की जिस हवेली में उनका निवास था, उसी हवेली की तल मंजिल पर उनकी सराफे की दुकान थी। आज भी यह इलाका शिकारपुर का सबसे व्यस्ततम और उसी तरह का महंगा इलाका है, जैसा इंदौर के राजबाड़ा क्षेत्र को माना जाता है।

विभाजन की विभीषिका में दुकान बंद हो गई, घर बार छोड़ना पड़ा और मामूली सामान लेकर जमनादास लालवानी का परिवार कुछ दिन ब्यावरा में रूका।

जब जमनादास जी शिकारपुर में रहते थे, तब वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता थे। विभाजन के पहले वर्तमान पाकिस्तान और बांग्लादेश भी भारत का ही हिस्सा थे और वहां भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की गतिविधियां नियमित रूप से चला करती थी। एक बार आरएसएस के सरसंघ चालक गुरू गोलवलकर शिकारपुर गए, तब जमनादास जी ने उनकी मेजबानी की थी, क्योंकि वे संघ के कट्टर और महत्वपूर्ण स्वयंसेवक थे। उसी दौर में उनका सम्पर्क आरएसएस के देशभर के कार्यकर्ताओं से था।

ब्यावरा में रहते हुए इन्दौर के कुछ संघ कार्यकर्ताओं ने उन्हें सलाह दी कि वे ब्यावरा से इन्दौर आ जाए, क्योंकि इंदौर में सिंध से आए बहुत से हिन्दू परिवार पहुंच चुके थे। विभाजन के पूर्व दंगों एवं धर्मांतरण की आशंका के चलते अप्रैल और मई 1947 के महीनों में जमनादास लालवानी पैदल चलते हुए शिकारपुर से राजस्थान में प्रवेश कर चुके थे। उन दिनों सड़कें नहीं थी, न ही आवागमन के इतने आधुनिक साधन थे। रास्ते में किसी भी तरह की अनहोनी होना आम बात थी। तरह–तरह की बीमारियां भी घेर लेती थी और नई जगह का खानपान भी लोगों के जीवन को प्रभावित करता था। स्थान बदलने पर होने वाले मौसमी बदलाव का भी लोगों के शरीर पर कभी–कभी बुरा प्रभाव होता था। विभाजन की विभीषिका के पहले आतंक के साए में रहने वाले पाकिस्तान के हिन्दू अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार विस्थापित हो रहे थे, जो बहुत संपन्न हिन्दू थे, वो विमानों के जरिये हैदराबाद पहुंच चुके थे और वहीं बसने की योजना बना रहे थे। पानी के जहाजों और स्टीमर से आए हिन्दू विस्थापितों को कच्छ और मुंबई के आसपास का इलाका पसंद आया। वे वहां शरणार्थी कैम्पों में रूक गए। मुंबई के पास उल्हास नगर और उपनगर चेम्बूर में सिंधी शरणार्थियों के लिए कैम्प बसाए गए। राजस्थान की सीमा से आने वाले शरणार्थी जोधपुर, जयपुर, अजमेर, उदयपुर आदि स्थानों में बड़ी संख्या में डेरा डालकर रूक गए।

विस्थापन के बाद अर्श तक

संघ के स्वयंसेवकों के आग्रह पर जमनादास जी इन्दौर आए और सिंधी कॉलोनी के कैम्प में ठहरे। उन दिनों वर्तमान का सिंधी कॉलोनी एरिया बिल्कुल उजाड़ था। जमनादास लालवानी जी को संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि वे सराफा व्यवसाय करते थे, इसलिए इंदौर के सराफा में किराये पर कोई दुकान लेकर नए सिरे से कारोबार शुरू करें। जमनादास जी अपनी संगठन क्षमता और व्यावसायिक गुणों के कारण 1964 से कई वर्षों तक मध्यप्रदेश सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहें। यह वह चुनौतीपूर्ण दौर था, जब तत्कालीन वित्तमंत्री मोरारजी देसाई ने गोल्ड कंट्रोल एक्ट लागू कर दिया था और सोने-चांदी का व्यवसाय करने वाले लाखों लोगों का जीवन अनेक परेशानियों से घिर गया था। बाद में गोल्ड कंट्रोल एक्ट से राहत दी गई और सुनार का काम करने वाले लाखों लोगों को ओबीसी वर्ग में शामिल किया गया। आगे जाकर विस्थापन की विभिषीका झेल रहे सिन्धी हिन्दुओं ने जयरामपुर कॉलोनी बसाई। इस कॉलोनी के लिए सरकार ने शरणार्थियों को प्लॉट फ्री में दिए थे और विभिन्न संस्थाओं से कर्जे की व्यवस्था की थी, ताकि शरणार्थी किसी तरह अपना ठिकाना बना सकें। कॉलोनी को बसाने में जयरामदास जी दौलतराम (जिनके नाम पर कॉलोनी बसी है), रिझाराम मूलचंदानी एडवोकेट, सिरुमल खतुरिया और तत्कालिन कांग्रेस के नेता डॉ. प्रभुदास बदलानी आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इंदौर आने के बाद भी जमनादास लालवानी आरएसएस में सक्रिय थे और जनसंघ पार्टी में भी कार्य करते थे। इंदौर में जब 1967 में नगर निगम के चुनाव हुए, तब जमुनदास लालवानी ने जनसंघ के टिकट पर पार्षद का चुनाव लड़ा था, जिसका चुनाव चिन्ह दीपक हुआ करता था। जयरामपुर कॉलोनी बसाने में सक्रिय भूमिका रखने वाले डॉ. प्रभुदास बदलानी कांग्रेस के टिकट पर उसी वार्ड से चुनाव में खड़े हुए, जिसमें जमनादास लालवानी भी खड़े थे। चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार की जीत हुई और जमनादास लालवानी पराजित हुए। उन दिनों आजादी के दौर को मतदाता हमेशा याद करते थे और कांग्रेस का एक पका-पकाया वोट बैंक निर्धारित था।

स्वतंत्र भारत में जमनादास और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गौरी देवी की 7 संतानें हुई, जिनमें 5 बेटे और 2 बेटियां थी। जमनादास लालवानी को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि केवल शिक्षा ही है, जो समाज में बदलाव ला सकती है। इसीलिए उन्होंने अपने बच्चों को हमेशा पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। जमनादास के प्रयासों से उनके सभी बच्चों ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की। 3 बेटे इंजीनियर बनें और 2 ने अन्य विधाओं में पोस्ट ग्रेजुएट और पीएच.डी जैसी उपाधियां प्राप्त की। उन्होंने बेटियों को सावित्री और कोमल नाम दिया और बेटों के नाम महेश, शंकर, राजकुमार, प्रकाश और कमल रखें। परिवार में तीन-तीन इंजीनियर हो गए। जमनादास जी की इच्छा थी कि शंकर डॉक्टरी की पढ़ाई करें। इसी इरादे से उन्होंने शंकर को 10वीं बोर्ड की परीक्षा में विज्ञान विषय दिलाया था। बॉयोलॉजी की कक्षा में जब मेंढकों की चीरफाड़ करने का प्रेक्टिकल इम्तिहान आया, तब बेटे शंकर को उपकाई आने लगी और उन्होंने पिता की मंशा के विरूद्ध विज्ञान छोड़ दिया। 1 साल उन्होंने ड्रॉप किया और फिर गणित विषय लेकर पढ़ाई शुरू की।

विस्थापन के बाद अर्श तक

इसी उफाओह में उन्होंने वैष्णव विद्यालय छोड़कर परसरामपुरिया विद्यालय में प्रवेश किया और गणित में अच्छे नंबर प्राप्त किए। शंकर के बड़े भाई ने आईआईटी खड़कपुर में प्रवेश पाया था। उनके पिता की अपेक्षा थी कि शंकर लालवानी भी अपनी प्रतिभा के दम पर देश के सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान में प्रवेश ले। पिता के सपनों को शंकर लालवानी को पूरा किया और बिना किसी ट्यूशन या कोचिंग के प्रतिष्ठित वीजेटीआई मुंबई में प्रवेश पाया।

वीजेटीआई संस्थान से बी.टेक की डिग्री अच्छे अंकों से प्राप्त करने के बाद बॉम्बे डाइंग कंपनी के प्रमुख नुस्ली वाडिया के साथ एक इंटरेक्शन में शंकर लालवानी को बॉम्बे डाइंग कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गई। उन्होंने 3 साल तक उस कंपनी में कार्य किया, लेकिन फिर उन्हें इंदौर की याद आने लगी और वे 1990 में इंदौर आ गए। इंदौर आने पर भी वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक के रूप में कार्य करने लगे। भारतीय जनसंघ पार्टी भी अपने नए रूप भारतीय जनता पार्टी में देश की मुख्यधारा में आ चुकी थी। भारतीय जनता पार्टी की विद्यार्थी शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए शंकर लालवानी इंदौर में कार्य करने लगे। उनका परिवार इंदौर के पुराने विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 का एक प्रतिष्ठित परिवार था। जब इंदौर नगर निगम के चुनाव हुए, तब भारतीय जनता पार्टी ने शंकर लालवानी को वार्ड क्रमांक 56 से टिकट दे दिया और वे अपने चुनाव में व्यस्त हो गए।

इंदौर नगर निगम के वार्ड क्रमांक 56 के चुनाव उस दौर में हमेशा सुर्खियों में रहे, क्योंकि भाजपा के पार्षद प्रत्याशी शंकर लालवानी के खिलाफ उन्हीं के छोटे भाई प्रकाश लालवानी कांग्रेस पार्टी की तरफ से प्रत्याशी थे। दोनों ही प्रत्याशी एक ही घर में, एक ही छत के नीचे रहते थे और अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेकर चुनाव प्रचार में जुट जाते थे। तब यह बात पक्की थी कि वार्ड क्रमांक 56 से जीतेगा तो लालवानी ही। चाहे शंकर लालवानी हो या प्रकाश लालवानी। चुनाव नतीजों में शंकर लालवानी विजयी हुए और उसके बाद प्रकाश लालवानी ने सक्रिय राजनीति से मुंह मोड़ लिया।

इंदौर नगर निगम के पार्षद के रूप में शुरू हुआ शंकर लालवानी का राजनैतिक सफर देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था संसद के सदस्य तक पहुंचा है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। शंकर लालवानी ने अपनी राजनीति में लगातार एक के बाद एक सीढ़ियां चढ़ी हैं। पार्षद बनने के पहले वे भारतीय जनता पार्टी के वार्ड अध्यक्ष और मंडल अध्यक्ष भी रहे हैं, लेकिन ये पद संगठन के पद है। पार्षद बनने के बाद उन्हें इंदौर महानगर परिषद में जनकार्य प्रभारी का दायित्व सौंपा गया। अपने शैक्षणिक ज्ञान और अनुभव के आधार पर उन्होंने इंदौर नगर निगम में बेहद उल्लेखनीय कार्य किए, जो आज भी कीर्तिमान हैं। इसके बाद हुए नगर निगम चुनाव में वे इंदौर नगर निगम में सभापति पद पर रहे।

सभापति पद से मुक्त होने के बाद उन्होंने इंदौर नगर भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष का पद दो बार संभाला और दो बार ही इंदौर डेवलपमेंट अथॉरिटी के चेयरमैन भी नियुक्त हुए। इनमें से एक कार्यकाल ऐसा रहा, जब इंदौर डेवलपमेंट अथॉरिटी में बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के पद रिक्त थे। यह एक बहुत ही चुनौती भरा दौर था, जिसे उन्होंने पूरी गंभीरता से निभाया और इंदौर के विकास

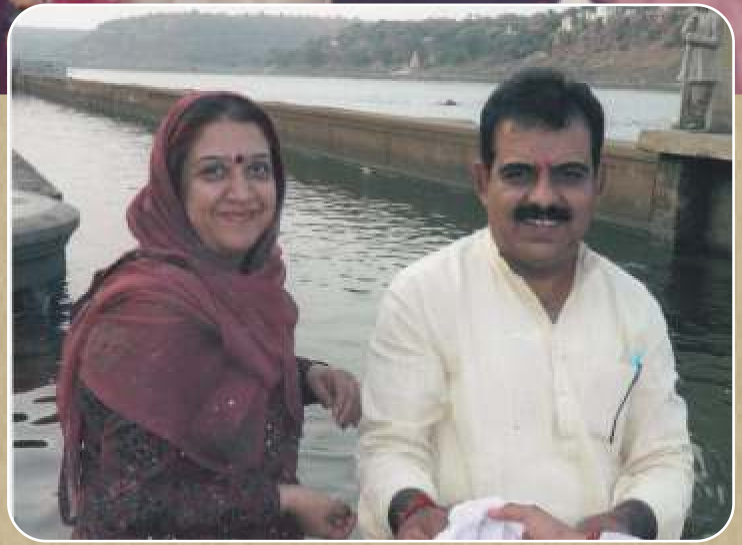

विस्थापन के बाद अर्श तक

को नई दिशा दी।

मुंबई से इंदौर आने के बाद भी शंकर लालवानी का विवाह दयालदास चांवला की बेटी अमिता से हुआ। अमिता लालवानी ने भी अपने पति के कार्यों में पूरी तरह से सहयोग दिया। चुनाव के दौर में वे महिला मतदाताओं के साथ हमेशा ही जनसंपर्क में जुटी रही। दुर्भाग्य से कैंसर ने अमिता लालवानी को परिवार से छीन लिया। कोरोना काल में एक तरफ तो लाखों इंदौरवासियों की मदद करना और निजी तौर पर अपनी पत्नी के इलाज के लिए अस्पताल में उपलब्ध रहना निश्चित ही एक बेहद दुखद और जिम्मेदारी भरा कार्य था।

कई महीनों तक श्रीमती अमिता लालवानी को अस्पताल में आईसीयू में रहना पड़ा। उस दौर में शंकर लालवानी ने अस्पताल के ही एक कक्ष को अपना कार्यालय बना लिया था। वहीं से बैठकर उन्होंने अपनी पत्नी की चिकित्सा व्यवस्था की निगरानी की और इंदौर शहर के बाशिंदों को कोरोना से जूझने में होने वाली परेशानियों से मदद दिलाने के प्रयास भी किए। वर्तमान में उनका परिवार संयुक्त रूप से रहता है और परिवार के लोगों में शंकर लालवानी को परिवार के लगभग सभी दायित्वों से मुक्त कर दिया है, ताकि वह पूरा समय इंदौर के लोगों की सेवा कर सकें। शंकर लालवानी के परिवार में एक बेटा मीत लालवानी भी हैं। राजनीति में आने की मीत की फिलहाल कोई मंशा नहीं है। इस परिवार ने वह दृश्य भी देखा है, जब मीत के दादाजी ने 1967 में जनसंघ की तरफ से पार्षद का चुनाव लड़ा था और मीत की दादी गौरी देवी अपने बचों को गोद में लेकर चुनाव प्रचार के लिए जाती थीं।

शंकर लालवानी ने विधानसभा चुनाव में भी पार्टी की तरफ से चुनाव लड़ने की मंशा जाहिर की थी, लेकिन पार्टी ने उन्हें टिकट देने की बजाय उन पर यह जिम्मेदारी सौंपी थी कि वह पार्टी के प्रत्याशी को जिताने का कार्य करें। जब इंदौर विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 से कैलाश विजयवर्गीय को भाजपा प्रत्याशी बनाया गया था, तब कई लोगों को लगता था कि इस क्षेत्र में सिंधी मतदाताओं की संख्या देखते हुए शंकर लालवानी को उम्मीदवार बनाया जाएगा, लेकिन शंकर लालवानी पर यह जिम्मेदारी दी गई और उन्हें चुनाव प्रभारी बनाया गया कि वे विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 से भाजपा प्रत्याशी कैलाश विजयवर्गीय को जिताने के लिए पूरा जोर लगा दें। ऐसे मौके पर शंकर लालवानी ने अपनी निजी महत्वाकांक्षा की परवाह नहीं की और उस दायित्व को पूरा करने में जुटे, जो पार्टी ने उन्हें सौंपा था।

भारतीय जनता पार्टी ने शंकर लालवानी को किसी भी विधानसभा चुनाव के लिए टिकट नहीं दिया, लेकिन पार्टी की विचारधारा में उनकी निष्ठा, कठोर परिश्रम, निर्व्यसनी, निर्विवाद रहने की उनकी शैली, उनके व्यवहार और मृदुभाषी स्वभाव को देखते हुए 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्हें लोकसभा की स्पीकर रहीं श्रीमती सुमित्रा महाजन के स्थान पर लोकसभा का टिकट दिया। श्रीमती सुमित्रा महाजन यानी ताई का आशीर्वाद शंकर लालवानी के साथ रहा और शंकर लालवानी ने इंदौर लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक वोट हासिल करके शानदार जीत हासिल की।

लोकसभा की दहलीज तक पहुंचने वाले शंकर लालवानी की खूबी यह रही कि उन्होंने कभी भी लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए पार्टी

विस्थापन के बाद अर्श तक

में जोड़–तोड़ नहीं की। पार्टी ने उन्हें जो भी दायित्व सौंपा, उसका उन्होंने पूरे मनोयोग से निर्वाह किया। पार्टी के ही कई नेता चाहते थे कि लोकसभा का टिकट उन्हें मिले, इसीलिए भारतीय जनता पार्टी ने अपना उम्मीदवार के नाम की घोषणा में कुछ विलम्ब भी किया।

शंकर लालवानी का लोकसभा चुनाव लड़ना और भारी मतों से जीतना इस बात का सबूत है कि भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें अपना उम्मीदवार बनाकर सही निर्णय किया था। लोकसभा सदस्य होने की कल्पना शंकर लालवानी ने अपने विद्यार्थी जीवन में कभी शायद ही की हो, लेकिन पार्टी के प्रति निष्ठा और संघ परिवार के प्रति पूरे परिवार का समर्पण भाव उन्हें इस मुकाम तक लेकर आया। उनके परिवार के सदस्य इंदौर शहर की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अनेक सरकारी, शिक्षा और व्यवसायिक संगठनों में उनके परिजन पराधिकारी हैं, लेकिन फिर भी वे शंकर लालवानी के नाम का उपयोग अपनी संस्थाओं में आमतौर पर नहीं करते।

शंकर लालवानी ने इस बात की पूरी व्यवस्था कर रखी है कि कोई भी उनके नाम का दुरुपयोग नहीं कर पाए। उनके सभी परिजन इस बात को समझ चुके हैं, इसलिए कोई भी उनके पास ऐसे कार्य कराने की सिफारिश लेकर नहीं जाता, जो वे नहीं करना चाहते या जो पार्टी की नीतियों के अनुकूल नहीं है। शंकर लालवानी के छोटे भाई प्रकाश लालवानी ने जब कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में प्रवेश किया था, तब इंदौर विकास प्राधिकरण के एक अधिकारी ने उनकी किसी समस्या के समाधान में बेहद अनुचित जवाब लिखा था। उस जवाब से नाखुश प्रकाश लालवानी वह पत्र लेकर अधिकारी के चेम्बर में पहुंचे थे और उस अधिकारी को खरी खोटी सुनाने लगे थे।

संयोग की बात है कि उस दौर में शंकर लालवानी आईडीए के चेयरमैन थे। बाद में जब उन्हें अपने छोटे भाई की उस हरकत के बारे में पता चला, तब उन्होंने घर पर अपने छोटे भाई को ताकीद दी कि भविष्य में इस तरह की कोई भी हरकत न करें। शंकर लालवानी के कड़े शब्दों और रवैये से उनका पूरा परिवार सहमत हुआ और इतने महत्वपूर्ण पदों पर रहने वाले व्यक्ति के परिवार के किसी भी सदस्य ने दोबारा कभी वैसी हरकत नहीं की। परिवार के लोग भी यह बात समझ चुके हैं कि विनम्र रहने वाले शंकर लालवानी अपने कर्त्तव्य के प्रति कितने सतर्क और ईमानदार हैं।

LAUNCHING OF WOMEN'S EMPOW
and
AWARD OF STREE SHAKTI
4th January

नगर निगम में शंकर लालवानी

प्लान ग्लोबल, थींक लोकल एंड एक्ट रिजनल यह सूत्र वाक्य रहा शंकर लालवानी का। जब वे इंदौर नगर निगम के सभापति थे, तब उन्होंने यही फॉर्मूला अपनाया। इसे वे अपना जीवन मंत्र भी कहते थे। इंजीनियरिंग का शानदार कॅरियर छोड़कर शंकर लालवानी स्वेच्छा से राजनीति में आए, उन्होंने लाखों की नौकरी छोड़कर जनसेवा का कार्य अपनाया। जब शंकर लालवानी वीजेटीआई में मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे, तभी केम्पस इंटरव्यू में उनका सामना बॉम्बे डाइंग के प्रमुख नुस्ली वाडिया से हुआ। नुस्ली वाडिया को शंकर लालवानी ने इतना प्रभावित किया कि शंकर लालवानी को बॉम्बे डाइंग में नौकरी मिल गई। तीन साल तक उन्होंने यह नौकरी की और फिर नौकरी छोड़कर वापस इंदौर आ गए।

संघ के संस्कारों के कारण शंकर लालवानी विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने के लिए राजनीति से जुड़े। छात्रों की समस्याओं के निवारण के लिए हरसंभव कोशिश करते हैं। आज भी उनके सहपाठी उन्हें याद करते हुए कहते है कि शंकर लालवानी ने कभी श्रेय लेने की होड़ नहीं की। जब वे बाम्बे डाइंग की नौकरी छोड़कर इंदौर आए, तब भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें पहला बड़ा दायित्व यह सौंपा कि विधानसभा चुनाव में क्षेत्र क्रमांक 4 से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार कैलाश विजयवर्गीय को विजयी बनाना है। कैलाश विजयवर्गीय का पैतृक निवास विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 2 था, लेकिन पार्टी ने उन्हें क्षेत्र क्रमांक 4 से उम्मीदवार बनाया था।

क्षेत्र क्रमांक 4 में सिंधी मतदाता बड़ी संख्या में थे। कैलाश विजयवर्गीय के सामने एक सिंधी निर्दलीय उम्मीदवार भी खड़ा हुआ था। पार्टी ने शंकर लालवानी को काम दिया कि विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 से किसी भी कीमत पर कैलाश विजयवर्गीय को विजयी बनाना है और इसके लिए क्षेत्र के तमाम मतदाताओं को बीजेपी की तरफ वोट देने के लिए प्रेरित करना जरूरी था। शंकर लालवानी ने अपना पूरा जोर लगाया और कैलाश विजयवर्गीय इंदौर विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 से विजयी हुए।

1995 में भारतीय जनता पार्टी ने शंकर लालवानी को वार्ड क्रमांक 56 से टिकट दिया था। शंकर लालवानी उस चुनाव में विजयी हुए, लेकिन भारतीय जनता पार्टी की परिषद नहीं बन सकीं। पार्षद के रूप में उन्होंने अपने क्षेत्र के विकास के लिए जी–जान लगा दी और वार्ड 56 का नक्शा बदलकर रख दिया। इससे पार्टी की साख बड़ी और पार्टी ने उन्हें भारतीय जनता पार्टी के नगर मंत्री की जिम्मेदारी सौंप दी। 5 साल बाद सन 2000 में भारतीय जनता पार्टी ने शंकर लालवानी को फिर पार्षद का टिकट दिया और इसमें वे विजयी हुए। शंकर लालवानी की इंजीनियरिंग की पढ़ाई और प्रतिभा को देखते हुए इंदौर नगर निगम में उन्हें जनकार्य समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

पार्षद के रूप में शंकर लालवानी ने अपने क्षेत्रों में इतना कार्य किया कि उसका हिसाब रखना आसान नहीं है। खुद उनके पास भी इस बात का कोई हिसाब नहीं है कि उन्होंने कितनी सड़कें बनवाई, कितने चौराहों का सौंदर्यीकरण करवाया और कितने बोरवे खुदवाए। वे कहते है कि जनप्रतिनिधि का काम है, लोगों के लिए कार्य करना, न कि अपने काम का हिसाब किताब रखना। कोई बैंककर्मी यह नहीं कहता कि आज मैंने इतने चेक क्लीयर किए।

जब इंदौर के विकास की बात आई और उन्नत किस्म की सड़कें बनाने का मुद्दा उठा, तब शंकर लालवानी की तकनीकी शिक्षा ने उनकी बड़ी मदद की। नगर निगम के पास संसाधनों की कमी थी और इंदौर की सड़कें हर साल खराब हो जाती थी। इसका दोष यहां की काली मिट्टी को दिया जाता है, लेकिन शंकर लालवानी ने जनकार्य समिति के प्रमुख के रूप में यह तय किया कि अब इंदौर की सड़कें गड्ढों से परहेज करेंगी।

नगर निगम में शंकर लालवानी

धन की कमी दूर करने के लिए इंदौर नगर निगम ने बांड जारी किए और बांड से प्राप्त आय से इंदौर की सड़कें बनाई जाने लगी। तकनीकी रूप से उन्नत ये सड़कें बनाने का काम मशहूर एल एंड टी कंपनी को दिया गया था। इन सड़कों पर बरसाती पानी की निकासी की व्यवस्था का खास ध्यान रखा गया। इस बात का भी ध्यान रखा गया कि सिवरेज लाइन भी हमेशा चालू रहे। शंकर लालवानी के कार्यकाल में बनाई गई ये सड़कें आज भी निराबद्ध रूप से उपयोग में लाई जा रही है, न तो उन सड़कों पर गड्ढे पड़े और न तो कभी बरसात में वहां जल भराव हुआ।

जनकार्य समिति के प्रमुख रहते हुए भी शंकर लालवानी ने रहवासी इलाकों की अंदरूनी सड़कों को सीमेंट कांक्रीट से बनाने का फैसला किया। इसके लिए जनभागीदारी भी की गई। लोगों ने सीमेंट के लिए आर्थिक सहयोग दिया और नगर निगम ने अपने संसाधनों का उपयोग करके सड़कें बनाई। इंदौर की अनेक कॉलोनियों में आज सीमेंट कांक्रीट की जो सड़कें है, वे शंकर लालवानी के उन्नत दृष्टिकोण के कारण ही संभव हो सकीं।

इंदौर नगर निगम में जनकार्य समिति के अध्यक्ष रहते हुए शंकर लालवानी ने नगर निगम के संसाधनों से माणिकबाग फ्लायओवर का निर्माण करवाया। इस फ्लायओवर में अत्याधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल किया गया। जनकार्य समिति के अध्यक्ष रहते हुए नगर निगम की कार्य प्रणाली में भी सुधार और आधुनिकीकरण हुआ। नगर निगम के कर्मचारी कम्प्यूटर पर काम करने लगे, जिससे एक्यूरेसी बढ़ी। नगर निगम की आय में भी इससे वृद्धि हुई, जिसका उपयोग नगर के विकास में किया जाने लगा।

जनकार्य समिति के अध्यक्ष रहते हुए शंकर लालवानी ने शहर के विकास पर विशेष ध्यान दिया। सौंदर्यीकरण का कार्य भी व्यापक स्तर पर किया गया। हेमू कालानी चौराहे का सौंदर्यीकरण इस माइने में अनूठा था कि चौराहे के बीचो–बीच लगी प्रतिमा को हटाकर सम्मानजनक तरीके से पुर्नस्थापित किया गया। शहीद हेमू कालानी सिंधी समाज के ही नेता थे और शंकर लालवानी भी सिंधी हैं। कई लोगों ने इस पर असहमति जाहिर की, लेकिन शंकर लालवानी ने समाज के लोगों को बताया कि कार्य किस तरह होने चाहिए। हेमू कालानी चौराहे के बाद महाराणा प्रताप चौराहे को भी विकसित करने में इसी तरीके का उपयोग किया गया। महाराणा प्रताप चौराहा सड़क के बीच रोटरी न होने के कारण बड़े और प्रमुख चौराहे के रूप में नजर आता है। महाराणा प्रताप की प्रतिमा बेहद सम्मानजनक तरीके से स्थापित की गई हैं।

जब भंवरकुआ बांड रोड का निर्माण किया जा रहा था, तब वहां 100 साल पुराना एक मंदिर सड़क के बीचों–बीच आ रहा था। इस संवेदनशील मुद्दे को भी बहुत सावधानी से समाधान की ओर ले जाया गया। मूर्तियां नए मंदिर में स्थापित की गई और पूरे विधि–विधान के साथ यह कार्य हुआ। इस मंदिर में आज पहले से ज्यादा श्रद्धालु आते है और क्षेत्र भी विकसित नजर आता हैं। जनकार्य समिति प्रभारी के रूप में नगर निगम में अपने सभी संसाधनों का समुचित उपयोग किया और इंदौर शहर को नया रूप देने में अहम भूमिका निभाई।

श्विनी रेडियोज
9425125207

भाजपा के सेनापति

इंदौर नगर निगम में तीन बार पार्षद का चुनाव जीतने वाले और जनकार्य समिति के अध्यक्ष तथा नगर निगम के सभापति रहने वाले शंकर लालवानी को भारतीय जनता पार्टी ने जून 2010 में नगर अध्यक्ष का दायित्व सौंपा। एमआईसी के सदस्य और नगर निगम सभापति रहते हुए शंकर लालवानी ने जो भी कार्य किए थे, वे उल्लेखनीय माने गए। शंकर लालवानी के नगर भाजपा अध्यक्ष बनने पर भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर फैल गई। पार्टी कार्यालय के बाहर ढोल– नगाड़े बजने लगे, आतिशबाजी होने लगी और उत्सवी माहौल में शंकर लालवानी ने अपना दायित्व संभाला।

इंदौर जैसे शहर में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष का दायित्व मिल पाना कोई आसान बात नहीं है। अनेक नेता इसके लिए दावा प्रस्तुत कर रहे थे। पार्टी में अनेक लोग ऐसे भी थे, जो शंकर लालवानी को नगर भाजपा अध्यक्ष बनाने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन शंकर लालवानी के शुभचिंतकों की भी एक बड़ी संख्या थी। जब नगर भाजपा अध्यक्ष बनने का मौका आया, तब वरीयता क्रम में शंकर लालवानी का नाम पहले नंबर पर था। तत्कालीन प्रदेश भाजपा अध्यक्ष प्रभात झा और भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने शंकर लालवानी के नगर भाजपा अध्यक्ष बनने का मार्ग प्रशस्त किया।

शंकर लालवानी भारतीय जनता पार्टी में सभी के हितों के लिए लगातार संघर्ष करते रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि भारतीय सिंधु सभा से लेकर सिंधु सभा की सेंट्रल पंचायत तक उनके पक्ष में थी। भारतीय जनता पार्टी ने शंकर लालवानी को यह जिम्मेदारी सौंपी थी, तो बहुत सोच–समझकर सौंपी थी, क्योंकि पार्टी के नेताओं को लगता था कि शंकर लालवानी ही ऐसी नेता है, जो पार्टी में समन्वय का कार्य बेहतर तरीके से कर सकते है और कार्यकर्ताओं का हौंसला भी लगातार बढ़ा सकते हैं।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी संगठन के कार्यक्रमों में पहले ही बोल चुके थे कि हमारा लक्ष्य आगामी चुनावों में वोटों की संख्या में 10 प्रतिशत वृद्धि करने का है। शंकर लालवानी ने भी इसी फॉर्मूले को अपनाया और पार्टी के वोटों में 10 प्रतिशत वृद्धि करने की दिशा में काम किया। उन्होंने संगठन में कार्य करने वाले छोटे कार्यकर्ताओं को सम्मान दिया और उनके विचारों को पार्टी के बड़े नेताओं तक पहुंचाने में बड़ी भूमिका निभाई।

शंकर लालवानी ने नगर भाजपा अध्यक्ष पद संभालने के बाद भी यही कहा कि मैं पार्टी का एक छोटा कार्यकर्ता हूं और संगठन ने मुझे जो भी जिम्मेदारी दी है, मैं उसे पूरा करने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगा दूंगा। मेरी पहली प्राथमिकता होगी कि पार्टी 10 प्रतिशत वोट बढ़ाने का लक्ष्य पूरा करें। जनाधार के लिए पार्टी में हर संभव कार्य शंकर लालवानी ने किया और साथ ही साथ शहर के विकास में भी सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका निभाई। उन्होंने 10 प्रतिशत वोटों में वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पोलिंग स्तर पर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी।

नगर भाजपा अध्यक्ष बनने के बाद शंकर लालवानी ने अपनी विनम्रता का परिचय देते हुए कार्यकर्ताओं से कहा कि वे उनके स्वागत में पोस्टर, बैनर और रैली नहीं निकाले। पार्टी के हितों में लगातार कार्य करें और पार्टी हित में कार्य करना ही सबसे महत्वपूर्ण बात होती है। श्री शंकर लालवानी को नगर भाजपा अध्यक्ष बनाने के पीछे उनकी कड़ी मेहनत, परिश्रम और विनम्रता का बड़ा योगदान रहा है। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 4 में भाजपा के वोटों का प्रतिशत बढ़ाने में भी उनकी बड़ी भूमिका रही हैं। उन्हें चुनाव

भाजपा के सेनापति

संचालन का खासा अनुभव था और जब इंदौर नगर निगम के चुनाव में कृष्णमुरारी मोघे भाजपा के उम्मीदवार थे, तब शंकर लालवानी ने बड़ी कुशलता से उनका चुनाव संचालन किया। नगर निगम में भारतीय जनता पार्टी का महापौर चुने जाने के पीछे शंकर लालवानी की दूरदर्शिता और कड़ी मेहनत सामने आई।

राजनीति में बड़े और महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए भी शंकर लालवानी ने अपनी सादगी और विनम्रता कभी नहीं छोड़ी। यही कारण है कि पार्टी में उनके प्रतिद्वंदी माने जाने वाले नेता भी हमेशा उनके साथ खड़े होते हैं। वे अजातशत्रु की भूमिका में रहते हैं। सभी से दोस्ती और किसी से बैर नहीं। बैर तो क्या, प्रतिस्पर्धा भी किसी से नहीं। पार्टी के अनुशासन का पूरी तरह पालन करना और सभी को साथ लेकर चलना उनकी खासियत है।

शंकर लालवानी की हमेशा यह खूबी रही है कि पार्टी ने उन्हें जब भी कोई दायित्व सौंपा, तब वे उसे निभाने में जी जान से जुट गए। बात चाहे विद्यार्थी परिषद के दिनों की हो या पार्षद के चुनाव की हो। विधानसभा चुनाव में पार्टी ने उन्हें जिस भी नेता के लिए दायित्व सौंपा, वे उसे जीताने में लगे रहे। इसके अलावा एक खास बात यह है कि उनके दुश्मनों की संख्या शून्य है। भारतीय जनता पार्टी में तो क्या किसी भी पार्टी में उनके दुश्मनों की संख्या है ही नहीं। उनका एक ऐसा व्यक्तित्व है कि वे हमेशा ही सभी को साथ लेकर चलते हैं और पार्टी के लक्ष्यों को पूरा करने में कभी भी कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। नगर भाजपा अध्यक्ष के लिए उनके नाम की घोषणा होने में जो मामूली विलंब हुआ था, वह निर्मूल था, यह बात उन्होंने अध्यक्ष पद का दायित्व संभालने के बाद साबित कर दिया था।

समाचार पत्रों में शंकर लालवानी के भाजपा नगर अध्यक्ष के रूप में जो भी खबरें छपती रही, वे बताती है कि शंकर लालवानी मीडिया जगत में भी अच्छे खासे लोकप्रिय है। उनके घर पर सुबह से लगने वाला कार्यकर्ताओं का हुजूम लगातार बढ़ता जा रहा है और वे अधिकांश लोगों की समस्याओं का समाधान करने में सफल रहे है।

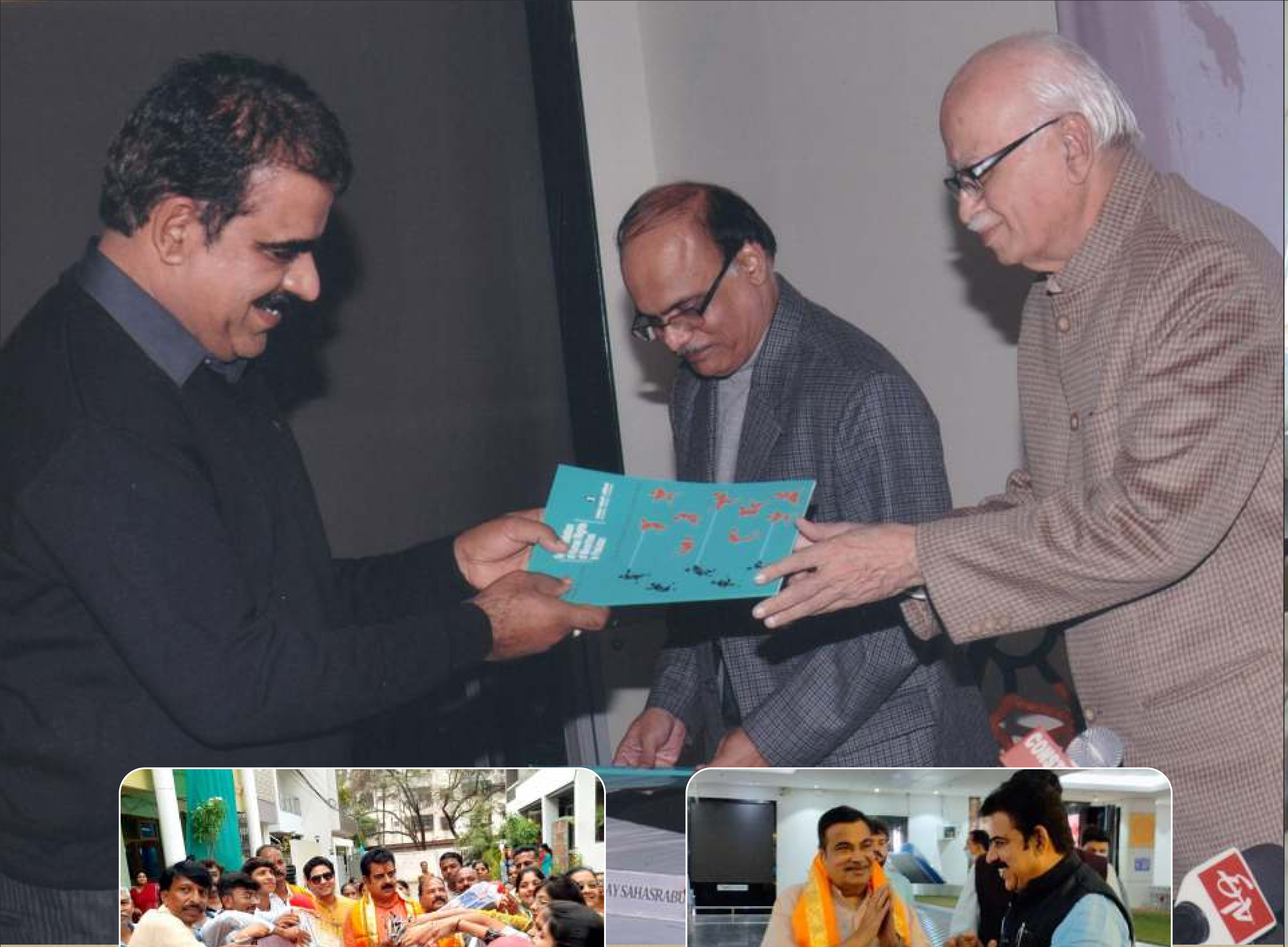

एडॉप्ट एन आंगनवाड़ी अभियान

2006

इंदौर विकास प्राधिकरण को दी नई दिशा

आईआईटी के समकक्ष माने जाने वाले वीजेटीआई से मेकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक करने वाले शंकर लालवानी ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में कार्य शुरू किया था। पार्टी ने उनके संगठन क्षमता को हमेशा से सराहा। उसके बाद वे इंदौर में नगर निगम के तीन बार पार्षद निर्वाचित किए। नगर निगम के सभापति और लोक निर्माण विभाग स्थायी समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने शहर के विकास के लिए हमेशा ही उल्लेखनीय कार्य किया।

नगरीय निकायों की वैश्विक स्तर पर विकास संबंधी गतिविधियों का अध्ययन करने के लिए उन्होंने ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, मलेशिया, चीन, थाईलैंड जैसे देशों का दौरा किया और वहां की नगरीय निकायों की गतिविधियों का अध्ययन और आंकलन किया। इंदौर को अगर वैश्विक स्तर पर कोई पहचान मिली है, तो उसके लिए शंकर लालवानी को ही श्रेय जाता है।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन के रूप में उन्होंने समयबद्ध कार्यक्रम चलाए और परियोजनाओं और उनके क्रियान्वयन को अमली जामा पहनाने में कभी कोई कसर नहीं छोड़ी। वे हमेशा स्पष्ट कार्य योजना के पक्षधर रहे और उसके क्रियान्वयन में हमेशा समयबद्धता की तरफ ध्यान दिया। इंदौर शहर के विकास के लिए उन्होंने 25 वर्ष की रूपरेखा तैयार की। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान इसी कारण इंदौर को अपने सपनों का शहर कहते हैं। शंकर लालवानी ने हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि विकास की गति को आगे बढ़ाने में कौन–कौन से रुकावटें सामने आ सकती है और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। पहली बात तो यह की कार्य योजना ऐसी हो कि रुकावटें आए ही नहीं, लेकिन अगर रुकावटें आए, तो उससे निपटने की तैयारी भी पहले से ही कर ली जाएं। शंकर लालवानी ने इंदौर विकास प्राधिकरण का अध्यक्ष रहते हुए शहर की 25 वर्षीय रूपरेखा बनाई और उस विजन डॉक्यूमेंट को सामने रखकर काम आगे बढ़ाया।

शंकर लालवानी ने जो विजन डॉक्यूमेंट बनाया था, उसके अनुसार विकास की गति को कोई शिथिल भी करना चाहे, तो नहीं कर सकता। हर वर्ग के समन्वित प्रयास से यह 25 वर्षीय प्लान बनाया गया। 25 वर्षों को भी 5–5 वर्ष में बांटकर विकास के ग्राफ का निर्माण किया गया था। नवीनतम परिकल्पनाओं को प्रस्तुत किया गया और उस पर अमल करने के लिए हर संभव प्रयास भी किया गया। इंदौर की स्मार्ट सिटी के नगर विन्यास निर्माण कला सुविधाओं को आदर्श स्थितियों तक पहुंचाने के लिए कार्य किया गया। सुपर कॉरिडोर और अटल बिहारी वाजपेई रिजनल पार्क पिपल्यापाला के विकास की योजनाएं बनाई गई। आज इंदौर में इन दोनों परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद शहर की छवि अलग रूप में ही सामने आ रही है।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन के रूप में शंकर लालवानी यह बात जानते थे कि शहर केवल उच्च वर्ग और मध्य वर्ग के लोगों का ही आवास नहीं है। बड़ी संख्या में यहां ऐसा वर्ग भी है, जो निम्न आय वर्ग का है। निम्न आय वर्ग के लोगों को झुग्गी झोपड़ियों में नहीं रहना पड़े, इसके लिए उन्होंने शुरू से ही योजनाएं बनाई। विभिन्न योजनाओं के तहत गरीबों के लिए बनाए गए मकान ऐसे थे कि बाहर से देखने में आकर्षक और भीतर से सुविधाजनक। झुग्गी झोपड़ियों में जिन लोगों को बरसात में गंदगी और कीचड़ का सामना करना पड़ता था, उनके लिए साफ–सुथरे मकान बनाने की योजनाएं लालवानी के समय में ही बनीं।

इंदौर विकास प्राधिकरण ने गरीबों के आवास के लिए बेहतर ढंग से कार्य किया। इसी के तहत वाल्मीकि अम्बेडकर आवास योजना के तहत 6 हजार से ज्यादा फैल्ट्स बनाकर गरीब परिवारों को दिए गए। स्कीम नं. 103 और स्कीम नं. 140 में भी 2200 आवास बनाकर निम्न आय वर्ग के लोगों को दिए गए। इसी तरह निरंजनपुर बस्ती और ईश्वर नगर में भी 800 से ज्यादा परिवारों को झोपड़पट्टियों से मुक्त कराकर साफ–सुथरे और सुविधाजनक आवास प्रदान किए गए।

बापू गांधी नगर और गुरुकृपा नगर में भी इंदौर विकास प्राधिकरण ने

इंदौर विकास प्राधिकरण को दी नई दिशा

432 परिवारों के लिए छत की व्यवस्था की। यह छत पक्की थी और सुविधाजनक भी। इसके अलावा करीब 6200 अतिरिक्त आवास विकसित किए गए। यह आवास जिन जगहों पर थे, वहां आने-जाने के साधन और बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। झोपड़पट्टियों में रहने वाले निम्न आय वर्ग के लोग अब सुविधाजनक फ्लैट में रहने लगे है। वहां उन्हें आने-जाने में कोई परेशानी नहीं होती है और न ही सुरक्षा की चिंता सताती हैं।

इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष रहते हुए शंकर लालवानी ने महसूस किया कि विकास और औद्योगिकीकरण के कारण इंदौर शहर में यातायात का दबाव बढ़ता जा रहा है। कम चौड़ी सड़कों और वाहनों की अधिकता के कारण कई इलाकों में जाम लग जाता है। यह ट्रैफिक जाम कई इलाकों में तो लंबे समय तक बना रहता है। उपलब्ध संसाधनों में ही इंदौर विकास प्राधिकरण ने यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए बस रेपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम (बीआरटीएस) की परिकल्पना की। इस योजना के तहत देवास नाका लसूड़िया से लेकर राजीव गांधी प्रतिमा स्थल तक करीब 11 किलोमीटर में बीआरटीएस का निर्माण किया गया। योजना यह थी कि इस मार्ग पर बसें निर्बाध होकर चलेंगी, जिससे सड़कों पर यातायात का दबाव कम होगा, जो लोग अपने वाहनों में यात्रा करते हैं, वे बीआरटीएस की वातानुकूलित बसों में सुविधाजनक ढंग से यात्रा करेंगे। विश्वविद्यालय जाने वाले हजारों विद्यार्थियों और शिक्षकों को भी अपने वाहनों से जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इंदौर विश्वविद्यालय के परिसर के समीप ही होल्कर साइंस कॉलेज और अटल बिहारी वाजपेई कॉलेज जैसे संस्थान के दरवाजे पर बीआरटीएस की बसें रुकने लगी हैं। इससे विद्यार्थियों पर आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ा और उन्हें अपना वाहन खरीदने की जरूरत भी नहीं रही।

बीआरटीएस की सड़क बनाना उतना आसान काम नहीं था, क्योंकि इसके लिए ज्यादा जगह की जरूरत थी। चौड़ी सड़क बनाने के लिए अनेक निर्माण कार्यों को हटाने की पहल की गई। अनेक संस्थानों में स्वेच्छा से अपनी जमीनें सड़क के विस्तार के लिए दी। इसके अलावा मुख्य चुनौती थी नर्मदा जल सप्लाय की पाइपलाइन और सीवर लाइन बिछाने की।

बीआरटीएस की पूरी सड़क ने यह व्यवस्था की गई कि टेलिफोन और बिजली के केबल सड़क के नीचे ही रहे। सड़क के बीचों-बीच सिटी बसों के संचालन के लिए दो लेन सुरक्षित रखी गई। इसी के मध्य सर्वसुविधाजनक बस स्टॉप भी बनाए गए। कुछ बस स्टॉप के पास एटीएम और अन्य जरूरी सुविधाएं भी मुहैया कराई गई। बस लेन की दोनों तरफ सामान्य वाहनों के लिए चौड़ी सड़क बनाई गई। साइकिल से चलने वालों के लिए और पद यात्रियों के लिए खास लेन बनाई गई। इसके साथ ही सर्विस रोड भी बनाई गई, ताकि बीआरटीएस से जुड़ी बस्तियों और कॉलोनियों में लोगों का आना-जाना आसानी से संभव हो।

वर्तमान में सांसद के रूप में शंकर लालवानी ने एलीवेटेड मार्ग के निर्माण का प्रस्ताव रखा है। उनका मानना है कि एलीवेटेड मार्ग धरती पर चलने वाली गाड़ियों की संख्या कम करने में कामयाब होंगे। विश्व के तमाम विकसित देशों में इस तरह के एलीवेटेड हाईवे बने हुए हैं, जो यातायात में सहायक होते हैं। शहरों की सड़कों पर वाहनों की लंबी कतारों को कम करने में इन एलीवेटेड सड़कों में अच्छा योगदान दिया है। इंदौर विकास प्राधिकरण के समय से ही शंकर लालवानी लसूड़िया से लेकर राऊ तक लंबे एलीवेटेड हाईवे के निर्माण के पक्ष में रहे। उनका मानना है कि अगर ऐसा एलीवेटेड हाईवे बनाया जाए, तो इस क्षेत्र विशेष की 50 वर्षों की यातायात की व्यवस्था को हल किया जा सकता है।

वर्तमान में टंट्या भील चौराहे (भंवरकुआं) से लेकर बायपास तक जो सड़क का विस्तार किया जा रहा है, वह भी सांसद शंकर लालवानी के प्रयासों से मूर्त रूप ले रहा है। इस मार्ग के बनने से यातायात की एक बड़ी समस्या दूर होगी। अपने तकनीकी कौशल का उपयोग करते हुए सांसद शंकर लालवानी ने व्यवस्था करवाई है कि इस मार्ग के बीच में 3.5 मीटर का एक ग्रीन बेल्ट छोड़ा जाए। इस ग्रीन बेल्ट का उपयोग भविष्य में कभी मेट्रो रेल परियोजना या एलीवेटेड मार्ग के लिए भी किया जा सकेगा। उज्जैन रोड, देपालपुर रोड, नेमावर रोड, धार और खंडवा रोड तथा रेल्वे स्टेशन क्षेत्र को अलग-अलग भुजाओं में बांटना शहर के हित में होगा। इसकी योजना

इंदौर विकास प्राधिकरण को दी नई दिशा

सांसद पहले ही प्रस्तुत कर चुके हैं। इंदौर शहर के भीतर कहीं भी टोल की व्यवस्था लागू नहीं हो सकती। इसलिए यातायात की गति बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होगी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सुपर कॉरिडोर की यात्रा करने के बाद इतने प्रभावित हुए थे कि एक बार अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी की यात्रा के दौरान वहां की सड़कों पर कमेंट करते हुए उन्होंने कहा था कि वाशिंगटन से अच्छी सड़कें तो हमारे इंदौर की है। सुपर कॉरिडोर का विकास इंदौर विकास प्राधिकरण में रहते हुए शंकर लालवानी की महत्वाकांक्षी योजना का प्रतिफल हैं। अब इस कॉरिडोर को आगे बढ़ाकर धार रोड से जोड़ दिया गया है और यह मार्ग फ्लैट कॉरिडोर का हिस्सा हो गया है। सुपर कॉरिडोर की योजना पर जो खर्च किया गया, उसकी पूर्ति बड़ी-बड़ी कंपनियों और संस्थानों को प्लॉट काटकर दी गई है। 75 मीटर चौड़ी यह सड़क सीमेंट कांक्रिट की बनी हैं। यहां रेल्वे लाइन के ऊपर जो ओवर ब्रिज बना हैं। वह 8 लेन का है और आगामी 50 वर्षों तक उसके विस्तार की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस सड़क के बनने के बाद इंदौर के अहिल्या बाई होल्कर विमान स्थल से लेकर बायपास तक ऐसी सड़क बन चुकी है, जिस पर यातायात निर्बाध रूप से चलता है।

एमआर-10 और उज्जैन रोड के संगम पर भी फ्लायओवर बनाया जाना प्रस्तावित है तथा रेडिसन चौराहे तथा विजय नगर चौराहे पर भी। इन फ्लायओवर के बनते ही इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन के रूप में शंकर लालवानी की परिकल्पना साकार हो उठेगी। एमआर-10 के कारण इंदौर शहर में आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए उज्जैन, खंडवा, खरगोन या मुंबई की तरफ आवाजाही आसान हो गई है। एक दौर था जब इंदौर विमान स्थल पर आने या जाने वाले लोगों को कई बार जाम की स्थिति का सामना करना पड़ता है। इससे मानवीय समय की बर्बादी होती थी और लोगों को परेशानी भी होती थी, लेकिन अब यह सब अतीत की बातें बन गई है।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन के रूप में शंकर लालवानी का ध्यान हमेशा इस तरफ रहा कि इंदौर की आधारभूत संरचना ऐसी हो, जो भविष्य में कम से कम 50 साल की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। इंदौर शहर की योजनाओं के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया कि कहां खेल गतिविधियां संचालित होगी, कहां अस्पताल बनेंगे और कहां शिक्षा के केन्द्र होंगे। इसके अलावा कॉर्पोरेट ऑफिसेस, आईटी पार्क, फाइव स्टार होटल, थीम पार्क, शॉपिंग माल, मल्टी प्लेक्स, कन्वेंशन सेंटर, ट्रेड सेंटर, स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स और संस्थाओं के भवन कहां होंगे, यह सब केन्द्र इस तरह स्थापित किए जाएं, जिससे शहर का समन्वित विकास नजर आए। किसी भी एक क्षेत्र पर बहुत ज्यादा वजन न पड़े और न ही दूरस्थ इलाकों में रहने वालों को कोई परेशानी का सामना करना पड़े।

इंदौर को मेडिकल हब बनाने में भी सांसद शंकर लालवानी का अहम योगदान रहा है। आज इंदौर में विश्व की नवीनतम चिकित्सा प्रणालियां उपलब्ध है। उचित मूल्य पर वैश्विक चिकित्सा के लिए इंदौर अपना नाम बना चुका है। इसके साथ ही चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में भी इंदौर ने बहुत नाम कमाया है। इंदौर का महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज और एमवाय अस्पताल दशकों से स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करा रहा है, लेकिन इंदौर में मल्टी स्पेशिलिटी हॉसिप्टल, जनरल हॉसिप्टल, कार्डियेक हासिप्टल, न्यूरोलॉजी, पीडियाट्रिक्स, यूरोलॉजी, नेफ्रोलॉजी हॉसिप्टल के साथ ही डेंटल कॉलेज, फॉर्मेसी कॉलेज, पैरामेडिकल कॉलेज, यूनानी और आयुर्वेदिक कॉलेज, स्कूल ऑफ बॉयो टेक्नोलॉजी एंड बॉयो इन्फरमेटिक्स, वेलनेस सेंटर, रिहेबिलिएशन सेंटर, हर्बल पार्क, ब्लड बैंक, आयुष कॉलेज आदि के लिए भी इंदौर का अपना नाम है।

इंदौर विकास प्राधिकरण में चेयरमैन रहते हुए शंकर लालवानी ने इस तरह की सभी स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भूमि को चिन्हित और अधिग्रहित किया था। इंदौर विकास प्राधिकरण में पश्चिमी क्षेत्र में रिंग रोड क्रमांक 2 से लगकर टिगरिया बादशाह की भूमि पर विकास योजना बनाई थी। विकास प्राधिकरण के चेयरमैन रहते हुए चिकित्सा सेवाओं के लिए 157 हेक्टेयर से ज्यादा जमीन चिन्हित और अधिग्रहित की गई थी।

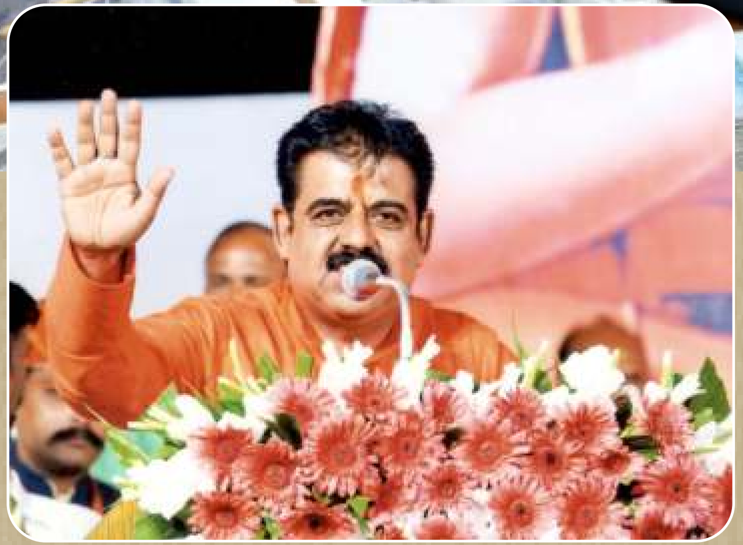

इंदौर विकास प्राधिकरण को दी नई दिशा

इंदौर मध्यभारत का एक प्रमुख व्यावसायिक शहर हैं। रेल सेवाओं के मामले में इंदौर अपेक्षित विकास नहीं कर पाया है, इसलिए सड़क मार्ग का उपयोग अधिकता से होता है। इसी को देखते हुए शंकर लालवानी के नेतृत्व में इंदौर विकास प्राधिकरण ने ट्रांसपोर्ट हब की कल्पना की थी। इंदौर में ट्रक टर्मिनल के रूप में लॉजिस्टिक हब की आवश्यकताओं को उन्होंने तभी चिन्हित कर लिया था। ऐसे ट्रांसपोर्ट हब में ट्रकों की आवाजाही सुगम हो और वहां माल का लगान और भंडारण सुविधाजनक तरीके से हो सकें।

बसों में आने वाले यात्रियों के लिए इंदौर के सरवटे बस स्टैंड को नया रूप दिया जा चुका है। एमआर–10 पर ओवरब्रिज के पास अंतरराज्यीय बस टर्मिनल का कार्य भी चल रहा है। इसके लिए इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष रहते हुए सांसद शंकर लालवानी ने अथक प्रयास किए थे। उनकी कोशिश रही कि एयरपोर्ट से करीब 6 किलोमीटर दूर कुमेड़ी में नया रेल्वे स्टेशन भी बनाया जाए। वर्तमान में इंदौर रेल्वे स्टेशन का विस्तार और आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इस कारण नए रेल्वे स्टेशन की आवश्यकता फिलहाल नहीं है।

इंदौर को रहने के लिए आदर्श माना जाता है, इसका कारण है यहां का मौसम और यहां की अद्भुत संरचना। शंकर लालवानी ने इंदौर विकास प्राधिकरण का चेयरमैन रहते हुए इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया था कि पूरे देश के लोग इंदौर में आकर बसना चाहते हैं, खासकर सरकारी नौकरियों में रहने वाले लोग तो रिटायर होने के बाद यहीं पर बसने का इरादा रखते हैं। इसी को देखते हुए इंदौर में अलग–अलग आवासीय कॉलोनियों को विकसित किया गया।

विकास प्राधिकरण केवल धनवान लोगों को ही इंदौर में बसाना नहीं चाहता था, बल्कि सभी आय वर्ग के लोगों को इंदौर में आवास उपलब्ध करवाने की आवश्यकता को समझता था। इसीलिए इंदौर में विकास प्राधिकरण ने अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग आवासीय योजनाएं बनाई। निरंजनपुर में 87 हेक्टेयर में बड़ी आवासीय योजना बनीं, जिसमें 4700 भूखण्ड विकसित किए गए। खजराना में एमआर–10 पर 55 हेक्टेयर भूमि का विकास किया गया और वहां 1500 भूखण्ड तैयार किए गए। एमवाय अस्पताल से 3 किलोमीटर दूर पिपल्याहाना में 2000 भूखण्ड विकसित किए गए। स्कीम 140 में ही आनंद–1 संकुल बनाया गया, जिसके 9 टॉवर्स में अलग–अलग श्रेणियों के करीब 550 फ्लैट्स और दुकानें बनाई गई।

इंदौर शहर का विकास केवल पूर्वी क्षेत्र में ही नहीं हुआ, पश्चिमी क्षेत्र में भी हो, इसलिए इंदौर विकास प्राधिकरण ने राऊ में भी 6000 भूखण्ड उपलब्ध कराने की योजना बनाई है। इंदौर विकास प्राधिकरण ने शंकर लालवानी के चेयरमैन रहते हुए 625 हेक्टेयर में 10 हजार से ज्यादा आवासीय भूखण्ड उपलब्ध कराएं, यह भूखण्ड बिचौली हप्सी, कनाड़िया, टिगरिया गांव और निपानिया में है। इंदौर विकास प्राधिकरण ने जो भी आवासीय बस्तियां विकसित की, उनमें चौड़ी सड़कें, पार्क, स्कूल, अस्पताल, बाजार और जरूरत की सभी वस्तुओं के लिए व्यवस्था की गई। लगभग सभी आवासीय बस्तियों में अपने–अपने मार्केट है, जहां से लोग अपनी जरूरत की चीजें खरीद सकते हैं। शंकर लालवानी के इस विजन के कारण ही दूर–दूर की कॉलोनी में रहने वाले लोग हर जरूरत के लिए राजवाड़ा क्षेत्र नहीं आते। इससे शहर में यातायात का अनावश्यक विस्तार और दबाव नहीं हुआ।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन रहते इस बात का ध्यान रखा कि इंदौर में मनोरंजन की भरपूर सुविधाएं हो। मेघदूत पार्क इलाके में ही अम्यूजमेंट पार्क बनाने की योजना उन्हीं की थी और पिपल्यापाला रिजनल पार्क को नया रूप भी उन्हीं ने दिया। पिपल्यापाला में इस बात का ध्यान रखा गया कि जो भी वृक्षारोपण हो वह पर्यावरण के लिए फायदेमंद हो। इसीलिए अटल बिहारी वाजपेई के नाम पर बने क्षेत्रिय पार्क पिपल्यापाला में गुलमोहर, कदम्ब, अमलतास जैसे वृक्षों की कतारें लगाई गई। पर्यावरण के लिए सभी वृक्ष बेहद उपयोगी माने जाते है। 60 एकड़ जमीन पर विकसित

इंदौर विकास प्राधिकरण को दी नई दिशा

मेघदूत उपवन को भी नए सिरे से विकसित किया गया। आज यह दोनों पार्क लाखों लोगों के लिए आमोद-प्रमोद के केन्द्र बने हुए है।

इंदौर विकास प्राधिकरण का गठन भले ही 1977 में किया गया हो, लेकिन इसकी अवधारणा पुरानी है। 1924 में जब इंदौर में होल्कर राज्य था, तब नगर सुधार न्यास नामक संस्था का गठन किया गया था। इंदौर में विकास को नई योजनाएं देने वाला नगर सुधार न्यास इंदौर विकास प्राधिकरण में समाहित कर लिया गया। उसके बाद इंदौर विकास प्राधिकरण का कार्य और बढ़ा। चेयरमैन रहते हुए शंकर लालवानी ने परिकल्पना की कि इंदौर में होने वाले निर्माण कार्यों को आधुनिकतम तकनीक से सुविधाजनक बनाया जाना चाहिए।

श्री शंकर लालवानी ने देखा कि इंदौर में कलेक्टर कार्यालय 1930 का बना हुआ है, उसके आसपास अलग-अलग विभागों की करीब 7 एकड़ जमीन भी हैं, जहां कृषि विभाग, पंजीयन कार्यालय, होम गार्ड आदि के कार्यालय संचालित होते हैं। इंदौर विकास प्राधिकरण ने योजना बनाई कि इंदौर शहर के कलेक्टर कार्यालय को आधुनिक रूप दिया जाएं और सभी कार्यालय एक ही छत के नीचे हो, जिससे अधिकारियों को काम में सामंनजस्य दिखाने में सुविधा हो और यहां आने वाले नागरिकों को भी भटकना न पड़ें। कलेक्टर कार्यालय में होने वाले विभिन्न आयोजनों के लिए और आधिकारिक कामकाज के लिए ऑडिटोरियम की जरूरत थी, उसे बनाने के लिए इंदौर विकास प्राधिकरण ने पहल की और इंदौर का कलेक्टर कार्यालय नए स्वरूप में सामने आया।

इंदौर की पहचान के रूप में महाराजा यशवंत राव अस्पताल और मेडिकल कॉलेज को जाना जाता है। बढ़ती आबादी के साथ मेडिकल कॉलेज और यशवंत राव अस्पताल में स्थान की कमी महसूस की जा रही थी। अलग-अलग जांचों के लिए भी कक्ष बनाने जरूरी थे। इंदौर विकास प्राधिकरण ने इसके लिए पहल की और एक सर्वसुविधायुक्त ओपीडी बनाकर इंदौर के एमवाय अस्पताल संकुल को सौंपा। इससे यहां आने वाले मरीजों की परेशानी कम हुई। इंदौर शहर के मध्य में होने के कारण हजारों की संख्या में मरीज इस अस्पताल में हर रोज आते है।

2019 का ऐतिहासिक चुनाव

2019 में हुए 17वीं लोकसभा के चुनाव में इंदौर से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी शंकर लालवानी ने ऐतिहासिक जीत हासिल की थी। भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे शंकर लालवानी को 10 लाख 66 हजार 824 वोट मिलें। इसके अलावा उन्हें 1745 पोस्टल बैलेट भी मिले। इस तरह उन्हें कुल 10 लाख 68 हजार 569 वोट प्राप्त हुए और वे ऐतिहासिक मतों से इंदौर लोकसभा चुनाव में विजयी हुए। खास बात यह थी कि उन्हें कुल मतदाताओं में से 65.59 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंदी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पंकज संघवी को केवल 31.97 प्रतिशत वोट ही मिले थे यानी कुल वोट 5 लाख 20 हजार 118 ही उन्हें मिल पाए। जीत का यह अंतर 5 लाख 47 हजार 754 का रहा।

इंदौर लोकसभा चुनाव से बहुजन समाज पार्टी, माइनोरिटी डेमोक्रेटिक पार्टी, हिन्दुस्तान निर्माण दल, सपाक्स पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी (इंडिया), जनता कांग्रेस और 12 अन्य निर्दलीय उम्मीदवार मैदान में थे। प्रमुख विपक्षी दल को छोड़कर सभी की जमानत जप्त हो गई, क्योंकि कोई भी अन्य प्रत्याशी आधा प्रतिशत वोट भी प्राप्त नहीं कर पाए। सिवाय बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी के, जिन्हें आधे प्रतिशत से थोड़े ही ज्यादा 0.53 प्रतिशत वोट मिले।

लोकसभा की इंदौर सीट का महत्व इसलिए भी बहुत ज्यादा है, क्योंकि यह मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा शहर है। इसके साथ ही इंदौर प्रदेश की आर्थिक और वाणिज्यिक राजधानी है। शिक्षा के क्षेत्र में इंदौर देश में जाना–पहचाना शहर है और देशभर के लाखों विद्यार्थी इंदौर आकर पढ़ाई करते हैं। इस लोकसभा क्षेत्र में इंदौर जिले का अधिकांश हिस्सा शामिल है। इंदौर संसदीय क्षेत्र में विधानसभा की 8 सीटें शामिल है, जिनमें से सांवेर विधानसभा सीट अजा सुरक्षित क्षेत्र है। इंदौर लोकसभा क्षेत्र में 2019 के चुनाव के समय 15 लाख 66 हजार 342 मतदाता थे, जो प्रदेश और देश की अर्थव्यवस्था में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

शंकर लालवानी के इंदौर संसदीय क्षेत्र के प्रतिनिधित्व करने के पहले श्रीमती सुमित्रा महाजन इंदौर लोकसभा क्षेत्र से 8 बार चुनाव में विजयी हुई थीं। यह चुनाव 1989, 1991, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009 और 2014 में हुए थे। श्रीमती सुमित्रा महाजन के पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और केन्द्रीय मंत्री तथा मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुकें प्रकाशचन्द सेठी 2 बार के चुनावों में 1980 और 1984 में यहां के सांसद थे। प्रकाशचन्द सेठी इसके पहले भी दो बार 1967 और 1971 में इंदौर के सांसद चुने गए थे।

1972 में हुए उपचुनाव में इंदौर से राम सिंह भाई वर्मा विजयी हुए थे। 1977 में आपातकाल के बाद हुए चुनाव में जनता पार्टी ने देशभर में अपने उम्मीदवार खड़े किए थे, जिसमें पूर्व समाजवादी कल्याण जैन को उम्मीदवार बनाया गया था। कल्याण जैन ने कांग्रेस के प्रत्याशी नंदकिशोर भट्ट को लगभग 36 हजार वोटों से हराया था। 1962 में इंदौर में श्रम संगठनों का बहुत जोर था। कम्युनिष्ट पार्टी के कॉमरेड होमी दाजी 1962 में इंदौर लोकसभा सीट से जीते थे। उसके पहले 1957 में कांग्रेस के ही कन्हैयालाल खादीवाला सांसद चुने गए थे। इस प्रकार देखें, तो इंदौर लोकसभा सीट पर 1989 में श्रीमती सुमित्रा महाजन के चुने जाने के पहले कांग्रेस, कम्युनिष्ट और समाजवादी पार्टी के नेता जीतते रहें। श्रीमती सुमित्रा महाजन के 8 बार और श्री शंकर लालवानी के गत चुनाव में रिकॉर्ड मतों से जीतने के बाद इंदौर को भारतीय जनता पार्टी का प्रमुख गढ़ माना जाने लगा।

2019 में लोकसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का टिकट दिए जाने के साथ ही श्री शंकर लालवानी के चुनाव जीतने की भविष्यवाणियां

2019 का ऐतिहासिक चुनाव

होने लगी। इतने विशाल बहुमत से शंकर लालवानी विजयी होंगे, इसमें कई लोगों को संदेह था, लेकिन जिस तरह शंकर लालवानी ने चुनाव लड़ा और अपनी सक्रियता बनाई रखी वह इंदौर की राजनीति में हमेशा याद की जाएगी। उनका मुकाबला कांग्रेस के पंकज संघवी से था, जिन्हें कई कारणों से मजबूत उम्मीदवार माना जा रहा था। जैसे–जैसे मतदान का समय नजदीक आता गया, वैसे–वैसे शंकर लालवानी का प्रभाव मतदाताओं में साफ देखा जाने लगा। इसका एक प्रमुख कारण शंकर लालवानी की लगातार सक्रियता, नगर निगम, इंदौर विकास प्राधिकरण और भारतीय जनता पार्टी में विभिन्न पदों पर रहते हुए उनकी सक्रियता रहा।

चुनाव के दौरान भी उन्होंने राजनेता की गरिमा और संस्कार का पालन किया। हमेशा से सधी हुई भाषा में मतदाताओं को संबोधित किया। किसी के प्रति भी छोटे शब्दों का इस्तेमाल करने से बचें और अपनी वाकपटुता और व्यावहारिकता से सभी का विश्वास जीता। इंदौर के राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में की गई सेवा का प्रतिसाद भी उन्हें मिला। मतदाताओं में चुनाव के पहले ही एक लहर सी चल गई थी कि शंकर लालवानी की जीत ऐतिहासिक होगी। यहां तक कि मुंबई में कॉलेज के दिनों में उनके सहपाठी रहे मित्रों को भी इस बात का भरोसा था कि इंदौर में शंकर लालवानी की जीत ऐतिहासिक होगी, क्योंकि शंकर लालवानी को मतदाताओं को जीतने का फन आता हैं। वे समझते है कि किसकी क्या जरूरत है और उसकी जरूरत की पूर्ति कैसे की जा सकती है। अगर सरकारी योजनाओं में कहीं कोई कमी है, तो वे उस कमीं को पूरा करके अपने मतदाताओं को सुविधा दिलवाने में पीछे नहीं रहते।

WE MODI

सांसद बनने के बाद भी इन्दौर के विकास के भागीरथ

इन्दौर के सांसद शंकर लालवानी के प्रयासों से इन्दौर में अनेक कार्यों का श्रीगणेश हो चुका हैं। अनेक कार्य संपन्न हो गए हैं और अनेक कार्यों की भूमिका तैयार हो चुकी है। इन्दौर के रेल्वे स्टेशन को भी एयरपोर्ट की तर्ज पर पीपीपी मॉडल के अनुसार डेवलप किया जा रहा है। इन्दौर रेल्वे स्टेशन का स्वरूप इन्दौर की पहचान कहे जाने वाले राजबाड़ा की तर्ज पर किया जाएगा। इसके साथ ही इन्दौर रेल्वे स्टेशन पर एयरपोर्ट की तरह तमाम सुविधाएं होंगी, वहां होटल और शॉपिंग मॉल भी होंगे। यह सबकुछ भोपाल के रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन की तर्ज पर करने की योजना है। इसके साथ ही इन्दौर रेल्वे स्टेशन को सार्वजनिक बस सेवा और मेट्रो से कनेक्ट करने की योजना भी है।

सरवटे बस स्टेशन से रेल्वे स्टेशन की एप्रोच और आने वाली मेट्रो से भी जोड़ने के लिए प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसके लिए सांसद शंकर लालवानी ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से कई बार मुलाकातें की है और सैद्धांतिक तौर पर इन्दौर रेल्वे स्टेशन के कायाकल्प के बारे में भी सहमति बन गई है।

इन्दौर रेल्वे स्टेशन के कायाकल्प के लिए आगामी 4 महीनों के भीतर टेंडर जारी करने की प्रक्रियाएं शुरू की जाएगी। इन्दौर रेल्वे स्टेशन ऐसा स्टेशन है, जहां से देश के सभी प्रमुख राज्यों की राजधानी के लिए रेलों का संचालन होता है। अनेक रेल गाड़ियां इन्दौर से शुरू होती है और अनेक इन्दौर पर आकर ही रूक जाती है। उज्जैन में श्री महाकालेश्वर मंदिर और ओंकारेश्वर–ममलेश्वर में ज्योतिर्लिंग होने के कारण धार्मिक पर्यटन के केन्द्र के रूप में भी इन्दौर की पहचान बन रही है। लगातार पांच बार देश का सबसे स्वच्छ होने का खिताब जीतने वाले इन्दौर के आसपास नए पर्यटन केन्द्र विकसित हो रहे है। हनुवंतिया में पर्यटन के एक नए केन्द्र की संभावनाएं निहित है और वहां आने वाले पर्यटक भी इन्दौर होकर ही जाना पसंद करेंगे। इसके अलावा महेश्वर, मंडलेश्वर, मांडू आदि भी पर्यटन के केन्द्र में है ही।

नए रेल्वे स्टेशन के निर्माण और विस्तार के लिए इन्दौर रेल्वे स्टेशन के पास में बनी सरदार पटेल प्रतिमा क्षेत्र, रेल्वे कॉलोनी, रिजर्वेशन सेन्टर और विश्वविद्यालय की सीमा तक स्टेशन का क्षेत्र बढ़ाने की समग्र योजना बनाने का लक्ष्य है। इस तरह की व्यवस्था भी की जाए कि इन्दौर स्टेशन पर आने वाले यात्रियों को अगर एयरपोर्ट पहुंचना हो, तो उनके लिए मेट्रो पकड़ना आसान हो और वे मेट्रो के माध्यम से आसानी से और कम समय में एयरपोर्ट पहुंच सकें। इससे यात्रियों का समय और धन दोनों की बचत होगी और साथ ही सड़कों पर यातायात का दबाव नहीं बढ़ेगा।

इन्दौर रेल्वे स्टेशन को आधुनिकतम बनाने के साथ ही इन्दौर–अकोला ब्रॉडगेज ट्रेक के कार्य में भी प्रगति जारी है। अगर इन्दौर–अकोला ब्रॉडगेज लाइन शुरू हो जाती है, तो इन्दौर से मुंबई की दूरी करीब 200 किलोमीटर कम हो जाएगी। ऐसे में मध्य भारत के एक प्रमुख केन्द्र के रूप में इन्दौर रेल्वे स्टेशन का महत्व बढ़ जाएगा। सांसद शंकर लालवानी ने रेल्वे के अधिकारियों और योजनाकारों से अपील की है कि वे आने वाले 50 साल की जरूरतों के हिसाब से योजनाएं बनाएं। इन्दौर रेल्वे स्टेशन का विकास भी आगामी 50 साल की जरुरतों को देखते हुए किया जाएं और नए बनने वाले ट्रेक पर भी स्टेशन इसी तरह से बनाए जाए कि अगर वहां यातायात का दबाव बढ़े, तब भी कामकाज प्रभावित न हो।

WIRC of ICSI
HDFC
NSDL
ASHISH GARG

इन्दौर का इंफ्रास्ट्रक्चर

सांसद शंकर लालवानी इन्दौर क्षेत्र के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के लगातार प्रयास कर रहे हैं। वे चाहते है कि इन्दौर के आसपास विभिन्न हाईवे, नए एयरपोर्ट और उन्नत किस्म की सड़कें हो। नए एयरपोर्ट और नए रेल्वे स्टेशन के साथ ही मेट्रो का विस्तार हो। टंट्या भील (भंवरकुआ चौराहा) से तेजाजी नगर तक सड़क हो और राजीव गांधी चौराहे से देवास नाका तक थ्री लेयर एलिवेटेट मेट्रो कॉरिडोर और अन्य फ्लायओवर हो, वे लगातार इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। इनमें से कुछ प्रोजेक्ट में मंजूरी भी मिल चुकी है और वे विभिन्न चरणों में है।

अगर सांसद शंकर लालवानी की योजना के अनुसार सारे कार्य समय पर होते है, तो इन्दौर आने वाले लाखों यात्रियों को सुविधा होगी। इसके साथ ही उज्जैन में हर 12 वर्ष में आयोजित होने वाले सिंहस्थ मेले में भी जो करोड़ों लोग आते है, उन्हें सुविधा होगी। इन्दौर शहर में कहीं भी आना–जाना आसान होगा। मेट्रो और एलिवेटेट कॉरिडोर के कारण सड़कों पर यातायात निर्बाध रूप से चल सकेगा। इसका असर इन्दौर की आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ेगा। अनेक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाली कंपनियां भारत में और खासकर इन्दौर में अपने केन्द्र स्थापित करना चाहेगी, जिससे बड़ी संख्या में रोजगार जनरेट होगा और आर्थिक गतिविधियां बढ़ने से सरकार के राजस्व में भी वृद्धि होगी।

सांसद
सेवा संकल्प

सेवा दिवस
acer
acer
acer
acer

वेस्ट टू वेल्थ का उदाहरण इन्दौर

लगातार पांच बार देश के सबसे स्वच्छ शहर का खिताब जीतने वाला इन्दौर वेस्ट से वेल्थ का अनूठा उदाहरण बनने के प्रयास में है। इन्दौर के पास देव गुराड़िया स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पर 550 मेट्रिक टन का बॉयो सीएनजी प्लांट लगाया जा रहा है। इस प्लांट का अधिकांश कार्य पूर्ण हो गया है। सांसद शंकर लालवानी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से अनुरोध किया है कि वे इन्दौर आएं और वेस्ट से वेल्थ के इस अनूठे प्रयास को आशीर्वाद के रूप में शुरुआत करें, क्योंकि इस प्लांट के शुरू होने के बाद पूरे देश में इस तरह के प्रयास शुरू होंगे, जिसका असर करोड़ों लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ेगा, क्योंकि उन्हें ज्यादा स्वच्छ वातावरण और अच्छी क्वालिटी की हवा में सांस लेने का अवसर मिलेगा।

इन्दौर में बन रहे बॉयो सीएनजी प्लांट की खूबी यह है कि यहां गीले कचरे को स्लेरी में बदलकर उससे सीएनजी गैस (कम्प्रेस्ड नेचरल गैस) बनाई जा सकेगी। इस सीएनजी का उपयोग इन्दौर की सिटी बस सेवा के संचालन में होगा। सीएनजी से चलने वाली बसें कम प्रदूषण फैलाएंगी। इसके साथ ही गीले कचरे के निपटान का कार्य भी होगा। योजना है कि इस गैस से 500 से ज्यादा बसों का संचालन किया जा सकेगा। इसका लाभ यह भी होगा कि बस संचालन करने वाली कंपनी को महंगा ईंधन नहीं खरीदना होगा और विदेशी मुद्रा की बचत भी होगी।

गीले कचरे से सीएनजी गैस बनाने के प्रोजेक्ट में हर दिन 18 हजार लीटर बॉयो सीएनजी का उत्पादन होगा। इस गैस का अन्य उपयोग भी संभव है। अनेक कारखानों में इस गैस का उपयोग करके मशीनों का संचालन किया जा सकेगा। इन्दौर में प्रतिदिन 610 मेट्रिक टन गीला कचरा निकलता है। इसमें से 550 मेट्रिक टन कचरे का उपयोग सीएनजी गैस बनाने में किया जाएगा। बचे हुए कचरे का भी उपयोग खाद बनाने में किया जाना है। दिल्ली की एनवायरमेंटल इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेस लिमिटेड द्वारा लगाए गए इस प्लांट से जितनी भी सीएनटी गैस निकलेगी, उसमें से 50 प्रतिशत सीएनजी इन्दौर नगर निगम को गैस की बाजार दर से 5 रुपए प्रति लीटर कम पर नगर निगम को देनी होगी। यानी नगर निगम की सिटी बसों के लिए बाजार भाव से कम पर सीएनजी उपलब्ध होगी, जिससे नगर निगम को आर्थिक लाभ होगा। इस प्लांट के संचालन के बाद इन्दौर नगर निगम को डेढ़ करोड़ रुपए प्रति वर्ष की आय अन्य तरीकों से भी होगी।

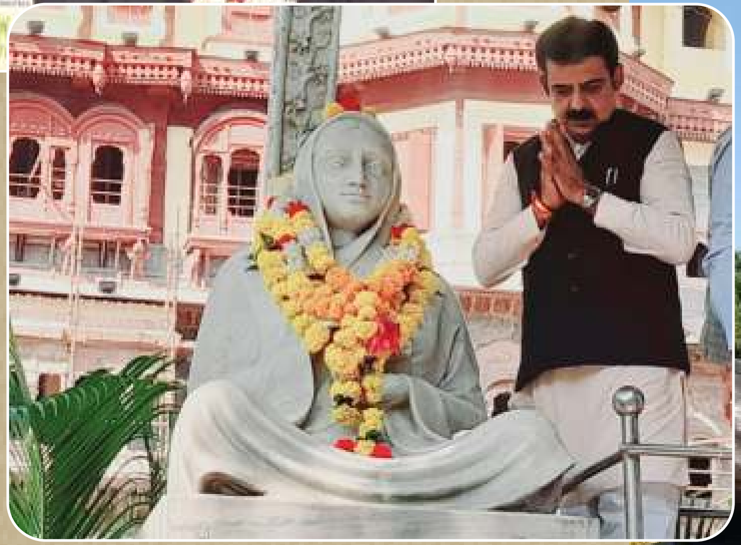

स्वच्छता पुरस्कार के लिए सांसद शंकर लालवानी को इसलिए बुलाया गया

इंदौर को सफाई में पांचवीं बार देश में प्रथम पुरस्कार मिला है। जब टीम इंदौर को विज्ञान भवन में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पुरस्कार दिया तो इसमें इंदौर के सांसद शंकर लालवानी भी शामिल थे। बहुत कम लोगों को यह जानकारी होगी कि इंदौर को पांचवीं बार स्वच्छता का पुरस्कार दिलाने में सांसद शंकर लालवानी की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। इंदौर में नगर निगम चुनाव पेंडिंग है और वर्तमान में महापौर के पद पर कोई नहीं है।

ऐसे में सांसद शंकर लालवानी लगातार सफाई के मोर्चे पर सक्रिय है। निगम अधिकारियों एवं प्रशासन को उन्होंने लगातार बेहतर काम काम करने के लिए प्रेरित किया और इंदौर को वाटर प्लस का तमगा दिलवाने में सांसद लालवानी ने बड़ी भूमिका निभाई।

कई लोगों को यह बात समझ में नहीं आई कि नगर निगम एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ इंदौर से सांसद लालवानी को पुरस्कार लेने के लिए क्यों बुलाया गया तो आइए आपको इसकी पूरी इनसाइड स्टोरी बताते हैं।

सांसद शंकर लालवानी संसद की अर्बन डेवलपमेंट कमेटी के भी सदस्य है और इस कमेटी में उनकी सक्रियता और सुझावों से केंद्रीय नगरीय विकास मंत्रालय के मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी बेहद खुश है। जिसके बाद सांसद को इंदौर के जनप्रतिनिधि होने के नाते कार्यक्रम का न्यौता दिया गया। साथ ही इसके लिए पार्टी एवं केंद्र सरकार के उच्चतम स्तर पर क्लीयरेंस भी लिया गया। इसके बाद करीब 3 दिन पहले सांसद शंकर लालवानी को दिल्ली आने के लिए कहा गया।

दरअसल, पिछले 2 सालों में केंद्रीय मंत्री सांसद शंकर लालवानी के द्वारा किए गए कामों से बेहद प्रभावित है और इंदौर से जुड़ी हर मीटिंग में सांसद लालवानी मौजूद रहते हैं।

पहली बार सांसद बने शंकर लालवानी आमतौर पर चुपचाप अपना काम करने में यकीन रखते हैं और पिछले ढाई सालों में उन्होंने शहरी विकास को लेकर अपनी समझ से देशभर में जगह बनाई है।

सांसद लालवानी को नवाचारों के लिए भी जाना जाता है, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान उन्हें फ्लाईओवरमैन का खिताब दे चुके हैं और कोरोना के दौरान वे देश के सबसे सक्रिय सांसद की उपलब्धि भी हासिल कर चुके हैं। सांसद लालवानी को पांचवीं बार मिल रहे स्वच्छ पुरस्कारों में शामिल होना इंदौर के लिए एक अच्छा संकेत है।

RESULTS AT A GLANCE
OVER ALL POSITIONS
RIFLE MATCH
LMG PAIR MATCH
CARBINE MACHINE
COMBAT MATCH
THREE POSITION RIFLE
CENTRE FIRE PISTOL
AIPDM PISTOL
AIPDM RIFLE
SNIPER RIFLE
GUJARAT 70 – 70 V
GUWAHATI 35 12 47 VII
JAMMU 101 10 111 II
KASHMIR 10 8 18 X

इंदौर में कारोबार को बढ़ावा

इंदौर वस्त्र और रेडिमेड ड्रेसेस का एक बड़ा केन्द्र है। यहां से पूरे देश में कपड़े और रेडिमेड वस्त्रों की आपूर्ति होती हैं। अनेक कारखाने इंदौर और आसपास के क्षेत्र में स्थापित हैं, जो रेडिमेड वस्त्रों की सप्लाय करते हैं। इनमें हजारों लोगों को रोजगार मिला हुआ है और बड़ी संख्या में व्यापारी भी इस कारोबार में जुटे हैं।

पिछले दिनों केन्द्र सरकार ने कपड़ा उद्योग पर जीएसटी की दर 5 से बढ़ाकर 12 प्रतिशत करने का निर्णय लिया था, जिससे इंदौर के कपड़ा व्यापारियों में रोष छा गया था, क्योंकि इससे न केवल उनका कारोबार प्रभावित हो रहा था, बल्कि कारोबार में भविष्य की संभावनाओं पर भी ताला लग गया था। अनेक कानूनी उलझनों में भी व्यापारी फंस जाते, इसलिए देशभर के कपड़ा व्यापारी इसका विरोध कर रहे थे। मध्यप्रदेश में कपड़ा व्यापारी संगठन ज्यादा मुखर हैं, इसलिए वे संगठित होकर केन्द्र सरकार के इस फैसले का विरोध कर रहे थे।

इंदौर रिटेल गारमेंट्स एसोसिएशन करीब डेढ़ महीने से इसके खिलाफ अनेक तरह की गतिविधियां कर रहा था। उन्होंने सांसद शंकर लालवानी को अपनी परेशानी से अवगत कराया और बताया कि इसका कारोबार पर कितना विपरित असर पड़ेगा। सांसद शंकर लालवानी व्यापारियों की समस्या समझीं और आश्वासन दिया कि वे इस मुद्दे को वित्त मंत्रालय और जीएसटी काउंसिल तक लेकर जाएंगे। संसद में भी शंकर लालवानी ही एकमात्र सांसद थे, जिन्होंने इस टैक्स वृद्धि का विरोध किया था।

सांसद शंकर लालवानी का कहना था कि कपड़ा और रेडिमेड वस्त्र आम इंसान की जरुरत होते है, उस पर टैक्स में वृद्धि करना आम मतदाताओं पर ज्यादा बोझ डालना हुआ। व्यापार पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा और दीर्घकालीन व्यावसायी टैक्स बचाने के लिए दूसरे तरीके अपनाने पर मजबूर होंगे। सांसद शंकर लालवानी ने जीएसटी काउंसिल के पदाधिकारियों से भी मुलाकात की और उन्हें इस मामले की गंभीरता समझाई। वित्त मंत्री ने आश्वासन दिया कि इस मामले पर गंभीरता से और सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाएगा।

आखिर सांसद शंकर लालवानी की मांग पर जीएसटी काउंसिल ने टैक्स की दरें 5 से 12 प्रतिशत बढ़ाने का विचार त्याग दिया और अपना फैसला वापस ले लिया। इससे कपड़ा व्यवसायियों और आम लोगों में राहत महसूस की गई।

इंदौर रिटेन गारमेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अक्षय जैन और सचिव महेश गौड़ ने ने इसके लिए सांसद शंकर लालवानी का आभार माना। व्यापारी संगठनों ने अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए सांसद शंकर लालवानी का स्वागत भी किया। एम.टी. क्लॉथ मार्केट, सीतला माता बाजार, आड़ा बाजार, राजबाड़ा आदि क्षेत्रों के कपड़ा व्यापारियों ने भी सांसद शंकर लालवानी का आभार माना। जीएसटी संघर्ष समिति के संयोजक और अन्य पदाधिकारियों ने सरकार के इस फैसले पर आभार व्यक्त किया और मिठाइयां बांटी।

सांसद शंकर लालवानी का कहना है कि मैंने केवल अपने क्षेत्र के व्यापारियों की समस्या माननीय वित्त मंत्री तक पहुंचाई थी और उन्हें मुद्दे की गंभीरता से अवगत कराया था। मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारम्‍ण का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुद्दे की गंभीरता को समझा।

भारतीय जनता पार्टी
इंदौर
भारतीय जनता

सेना

निवेश के क्षेत्र में कार्य

सांसद शंकर लालवानी ने मध्यप्रदेश और इंदौर में रोजगार तथा कारोबार को बढ़ाने के लिए कई देशों की यात्राएं की। उन यात्राओं के अच्छे नतीजे निकले। अपनी दुबई यात्रा के दौरान शंकर लालवानी ने वहां अनेक निवेशकों से बातचीत की और उन्हें भारत आकर इंदौर और मध्यप्रदेश में निवेश के लिए प्रेरित किया। दुबई में रहने वाले अनेक एनआरआई उद्योगपतियों से उन्होंने सीधे मुलाकात की और इंदौर की स्थिति से उन्हें अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इंदौर में निवेश करके एनआरआई किस तरह न केवल मुनाफा कमा सकते हैं, बल्कि अपने मूल देशवासियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में भी सहयोग कर सकते है। यह विन–विन सिचुएशन सभी के लिए फायदेमंद हो सकती है। उन्होंने एनआरआई समुदाय से कहा कि यह बहुत ही खुशी और गर्व की बात है कि आप दुनिया के दूसरे देशों में जाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं और निरंतर विकास के पथ पर बढ़ रहे है।

दुबई यात्रा के दौरान खलीज टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में शंकर लालवानी ने बताया कि भारत में और खासकर मध्यप्रदेश में इन्वेस्टमेंट करने वालों को अनेक सुअवसर प्राप्त हैं। शंकर लालवानी के साथ ही दुबई में रहने वाले उद्यमी और आईटीएल कॉस्मास ग्रुप के चेयरमैन राम बक्षाणी ने भी इंदौर में निवेश करने की संभावनाओं के बारे में एनआरआई समुदाय को बताया। उन्होंने अनेक निवेशकों से रूबरू मिलकर इंदौर की प्रगति से उन्हें अवगत कराया और बताया कि अब इंदौर विश्व के नक्शे पर तेजी से उभर रहा हैं।

शंकर लालवानी ने इंदौर विकास प्राधिकरण की भूमिका के बारे में भी बताया और कहा कि इंदौर के विकास में प्राधिकरण ने अपना महान योगदान दिया है, जिसके कारण निवेशकों का इंदौर आना लगातार जारी है। इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर निवेश किया जा रहा है और नए–नए उद्योग धंधे स्थापित किए जा रहे है। इंदौर और मध्यप्रदेश में इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में बहुत काम हो रहा है। अब यहां बिजली की कोई कमी नहीं है, न ही पानी की कोई किल्लत है। मध्यप्रदेश सरकार उद्योगों के लिए जमीन उपलब्ध कराने में कोई कसर नहीं छोड़ती। इलाके के सभी औद्योगिक क्षेत्र वायु, रेल, तथा सड़क मार्ग से जुड़े हैं। इस पूरे क्षेत्र में औद्योगिक शांति तो है ही, देश के बेहतरीन प्रतिभावानकर्मी भी यहां रहते हैं। सरकार की तरफ से भी नए निवेशकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है और उन्हें अनेक सुविधाएं दी जा रही है। ये सुविधाएं उद्योग के प्रारंभ होने के कुछ वर्षों तक निरंतर जारी रहती है। इंदौर में आईआईटी और आईआईएम जैसे उच्च स्तरीय शिक्षा संस्थान तो है ही निजी क्षेत्र में भी अनेक विश्वविद्यालय है। इस कारण वहां विशेषज्ञ सेवाओं की भी कोई कमी नहीं है।

श्री शंकर लालवानी ने खलीज टाइम्स को यह भी बताया कि इंदौर शिक्षा का हब होने के साथ ही चिकित्सा का हब भी है। दुनियाभर के लोग इंदौर के अस्पतालों में आकर स्वास्थ्य सुविधाएं प्राप्त करने के इच्छुक रहते है, क्योंकि यहां कि स्वास्थ्य सुविधाएं विश्वसनीय और सस्ती हैं। सोया कंपनियों के अलावा इंदौर में निरंतर नए–नए उद्योग प्रारंभ हो रहे हैं। वायु मार्ग से इंदौर देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है और मध्यप्रदेश में होने के कारण यहां से कहीं भी जाना–आना आसान है। इंदौर शहर में मैन्यूफैक्चरिंग के अलावा ट्रेडिंग का कार्य भी लगातार बढ़ता जा रहा है। कई उद्योग धंधे ऐसे है, जिन्हें अपने उत्पादनों को बेचने के लिए किसी और शहर जाकर मार्केट खोजने की जरूरत नहीं है।

इंदौर में सार्वजनिक परिवहन की स्थिति भी बहुत अच्छी हैं। शहर में कहीं आना–जाना हो, तो सार्वजनिक बसें आसानी से उपलब्ध है। इंदौर में मेट्रो रेल परियोजना का पहला चरण बहुत ही तेज गति से चल रहा है। इस चरण में देवी अहिल्या बाई होल्कर विमान स्थल से लेकर राजवाड़ा क्षेत्र तक मेट्रो रेल लाइन बिछाने का कार्य चल रहा है। इस चरण के पूरा होने के बाद दूसर और तीसरे चरण में मेट्रो रेल को पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र और उज्जैन तक जोड़ने की योजना है। सन 2028 में उज्जैन में सिंहस्थ का आयोजन

निवेश के क्षेत्र में कार्य

होना है। लक्ष्य है कि सिंहस्थ के पहले मेट्रो रेल उज्जैन तक पहुंचा दी जाएं, जिससे सिंहस्थ में आने वाले करोड़ों लोगों को अपने वाहनों का उपयोग करने की जरूरत नहीं रहेगी। सिंहस्थ में पार्किंग और सड़कों पर भीड़भाड़ की समस्या से भी काफी हद तक निजात मिल जाएगी।

सांसद श्री शंकर लालवानी ने अपनी दुबई यात्रा में यूएई में रहने वाले सिंधी समाज के नेताओं से भी मुलाकात की। खलीज टाइम्स के अनुसार श्री शंकर लालवानी ने उनसे अपील की कि वे अपनी हजारों साल पुरानी संस्कृति और सभ्यता को संरक्षित करने के लिए लगातार प्रयास करें। 1947 के विभाजन के बाद सिंधी समुदाय के लोग पूरी दुनिया में अलग–अलग देशों में जाकर बस गए हैं और सफलतापूर्वक कारोबार कर रहे हैं। सिंधी समाज के नेताओं को चाहिए कि वे समुदाय को एक सूत्र में बांधे रखें और उनके हितों के लिए कार्य करें। यह सिंधी समाज के लोगों की विशिष्टता है कि वे आज दुबई में रहकर अरबी भाषा, फ्रांस में रहकर फ्रैंच और ब्रिटेन तथा अमेरिका जैसे देशों में रहकर शानदार अंग्रेजी में बातचीत करना सीख गए है, लेकिन गर्व की बात यह है कि वे अभी भी अपनी भाषा सिंधी को नहीं भुले और न ही सिंधी सभ्यता और परंपराओं को भुले है। यह विश्व को सिंधी समाज की एक बड़ी धरोहर है।

ON-06-08-2020
S.T.C. BSF

इंदौर-दाहोद रेल लाइन

मध्यप्रदेश का सबसे बड़े और व्यावसायिक शहर इंदौर रेल्वे के मामले में उतना उन्नत नहीं है, जितने इंदौर के बराबर के देश के कुछ दूसरे शहर। इस तरफ सांसद शंकर लालवानी लगातार केन्द्र सरकार का ध्यान अपनी तरफ खींचते चले आ रहे हैं। उन्होंने न केवल इंदौर–अकोला रेल लाइन के जल्द निर्माण के लिए प्रयास किए, बल्कि इंदौर–दाहोद रेल्वे लाइन के रुके हुए काम को वापस शुरू करने के लिए रेल्वे मंत्रालय से संपर्क किया। उन्हीं के प्रयासों से अब रेल्वे ने केन्द्र सरकार से स्वीकृति प्राप्त कर ली हैं। इस रुके हुए कार्य को दोबारा जल्दी ही शुरू किया जाएगा। इससे रेल यात्रियों की सुविधा में वृद्धि होगी और इंदौर तथा गुजरात के बीच बेहतर कनेक्टिविटी भी मिलेगी। इसका असर इंदौर की व्यापारिक गतिविधियों पर भी सकारात्मक रूप से पड़ेगा।

इंदौर–दाहोद रेल लाइन को लेकर सांसद शंकर लालवानी कई बार रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर चुके हैं। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सांसद को सूचित किया कि इस बारे में रेल्वे बोर्ड की तरफ से स्वीकृति मिल गई हैं। कुछ मामूली कागजी खानापूर्ति के बाद रुका हुआ काम शुरू हो जाएगा।

इंदौर–दाहोद रेल्वे लाइन प्रोजेक्ट लगभग 200 किलोमीटर का है। मौजूदा बजट में इसके लिए 175 करोड़ रुपए का प्रावधान है। सांसद शंकर लालवानी का कहना है कि 200 किलोमीटर के रेल मार्ग के लिए यह बजट बहुत ही कम है। अगर यह रेल प्रोजेक्ट जल्दी पूरा होता है, तो रास्ते में आने वाले अनेक स्टेशनों की कनेक्टिविटी सुधरेगी और मध्यप्रदेश में कारोबार और रोजगार के ज्यादा बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे। यह रेल लाइन इंदौर से राऊ होते हुए पीथमपुर, धार, सरदारपुर और झाबुआ होते हुए दाहोद के लिए प्रस्तावित है। इस पर थोड़ा बहुत काम हुआ भी है, लेकिन अलग–अलग कारणों से यह कार्य बहुत ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाया।

इंदौर–दाहोद रेल परियोजना की शुरुआत सन 2000 में हुई थी, तब करीब 200 किलोमीटर लंबी रेल लाइन बिछाने के लिए 2000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया था। इसके लिए इंदौर से राऊ होकर टीही तक रेल लाइन बिछाने का काम पूरा किया गया। इंदौर से टीही तक कंटेनर ट्रेन भी चलाई जा रही है, लेकिन इस पूरे निर्माण कार्य को पूरा करने में भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। रेल्वे विभाग के अनुसार इस प्रोजेक्ट में 41 बड़े और 290 छोटे रेल्वे पुलों का निर्माण भी करना है और 32 रेल्वे स्टेशन बनाए जाने है। 5 किलोमीटर लंबी टनल भी बनाई जानी है, जो पहाड़ों को काटकर रेल लाइन के लिए राह बनाएगी।

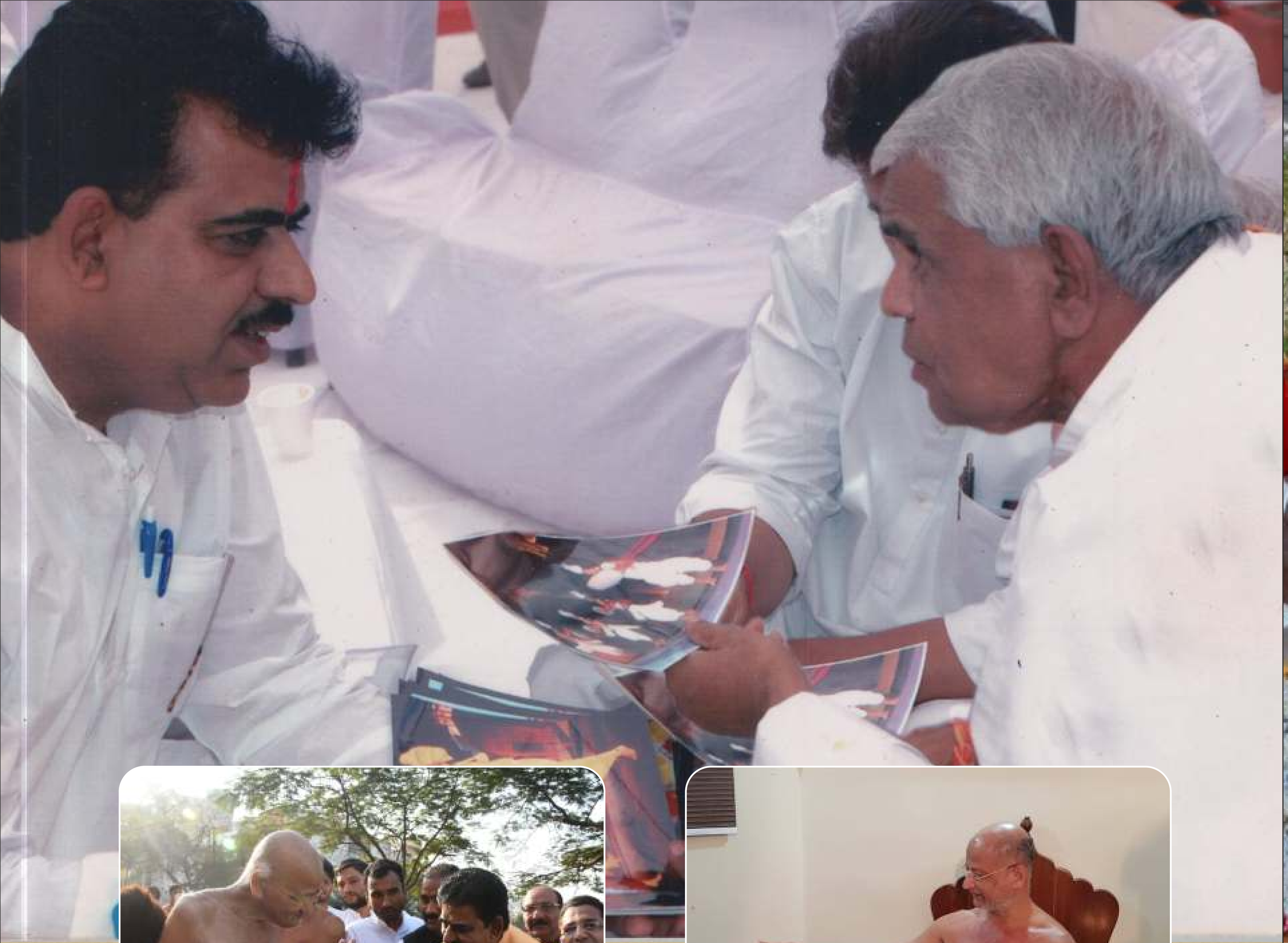

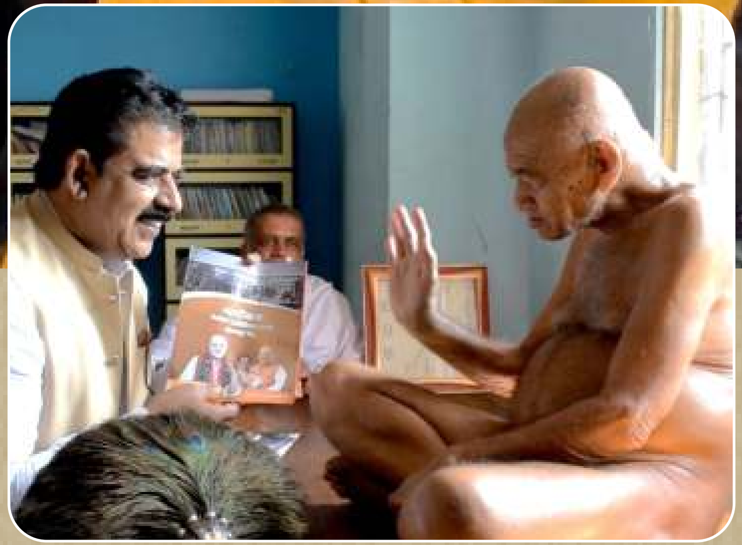

इंदौर की आबो हवा सुधारने की पहल

सांसद शंकर लालवानी इंदौर को न केवल विकसित शहर बनाना चाहते हैं, बल्कि इंदौर की आबो हवा सुधारने के लिए भी प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने एयर क्वालिटी इंडेक्स सुधारने के लिए पहल की है और अधिकारियों को बताया है कि स्वच्छता सर्वेक्षण में एयर क्वालिटी भी महत्वपूर्ण योगदान रखती हैं। आगे से होने वाले स्वच्छता सर्वे में एयर क्वालिटी पर भी पूरा ध्यान दिया जाना है।

सांसद शंकर लालवानी ने जिला प्रशासन के अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों, एनजीओ, सामाजिक संस्थाओं, मीडिया और सोशल मीडिया के इन्फ्लूएंसर्स से बात करके इंदौर में प्रदूषण दूर करने के लिए पहल करने का कहा है। उन्होंने कहा कि इंदौर में जमीन और पानी का प्रदूषण तो कम हो गया, लेकिन अभी एयर क्वालिटी सुधारने के लिए काम करने की बहुत जरूरत है।

सांसद शंकर लालवानी का कहना है कि इंदौर के लोग इसमें बहुत मदद कर सकते हैं। अभी हाल यह है कि इंदौर के 1 लाख वाहन औसतन पांच मिनिट तक चौराहों पर रेड सिग्नल के ग्रीन होने का इंतजार करते हैं। अगर इन चौराहों पर लोग अपने वाहन बंद कर दें, तो पांच लाख मिनिट का ईंधन बचेगा और प्रदूषण भी कम होगा। इंदौर के 19 प्रमुख चौराहे हैं, जहां वाहन रेड सिग्नल पर खड़े होते है और अधिकांश वाहन चालक इंजन बंद नहीं करते।

जिन चौराहों पर वाहन खड़े होकर धुआं उगलते रहते हैं, उनमें विजय नगर चौराहा, सत्यसांई चौराहा, एलआईजी, पलासिया, गीता भवन, व्हॉइट चर्च चौराहा, इंद्रप्रस्थ चौराहा, हाईकोर्ट चौराहा, रीगल चौराहा, मरीमाता चौक, लेन्टर्न चौक, टॉवर चौराहा, रेडिसन चौराहा आदि प्रमुख हैं। कई चौराहों पर तो बड़े वाहन भी आते–जाते हैं और वे भी ईंजन बंद नहीं करते। इसके लिए माइक्रो प्लानिंग करने की जरूरत है। ताकि एयर क्वालिटी कंट्रोल में रहेगी।

वायु प्रदूषण के साथ ही ध्वनि प्रदूषण पर भी नियंत्रण करना इंदौर की प्राथमिकता है। इंदौर की यातायात पुलिस इस काम में मदद करेगी और एनसीसी, एनएसएस, नगर सुरक्षा समिति आदि से भी सहयोग के लिए कहा गया है। इंदौर में एयर क्वालिटी इंडेक्स 100 से 125 के आसपास रहता आया है, जबकि महानगरों में यह 400 से 500 तक पहुंच चुका हैं। इसका अर्थ यह है कि इंदौर में वायु प्रदूषण दूसरे महानगरों की तुलना में तो कम है, लेकिन अभी उसे और सुधारने की आवश्यकता है। अगले स्वच्छता सर्वे में एयर क्वालिटी इंडेक्स की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी, इसलिए इस दिशा में कार्य करना बहुत जरूरी हो गया है।

एयर क्वालिटी सुधारने के लिए नगर निगम ने एक अभियान चलाया है, इसके तहत छोटे दुकानदारों से कहा गया है कि वे डिस्पोजेबल का उपयोग न करें। 56 दुकान के साथ ही मेघदूत चौपाटी पर भी कोयला और लकड़ी के उपयोग से भट्टी चलाने का कार्य बंद कर लिया गया है। सभी व्यापारियों से कहा गया है कि वे कोयले या लकड़ी की जगह गैस का उपयोग करें। इसके साथ ही प्लास्टिक की थैलियों पर रोक लगाने के लिए मैं हूं झोलाधारी इंदौरी अभियान चलाया गया है। लोगों से अनुरोध है कि वे शॉपिंग के लिए जाएं, तो पहले अपने साथ एक झोला रख लें, जिसमें की खरीददारी का सामान लाया जा सकें।

शंकर लालवानी न केवल इंदौर के पर्यावरण को सुधारने के लिए बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं को भी बचाए रखने के लिए लगातार काम करते रहे हैं। विश्व पर्यावरण दिवस हो या और कोई भी अवसर वे कभी भी ऐसे अवसरों पर शांतचीत होकर नहीं रहते। उन्होंने सभी दिवसों और उत्सवों का उपयोग पर्यावरण और भारतीय परंपराओं को बचाने के लिए किया। लोक संस्कृति मंच ने इंदौर में लोक कलाओं को लेकर इतना वृहद कार्य किया है कि आज 10 विश्व रिकॉर्ड लोक संस्कृति मंच के नाम पर दर्ज है। इनमें विश्व की सबसे बड़ी संजा बनाने से लेकर लोक कलाकारों के एक

इंदौर की आबो हवा सुधारने की पहल

मंच पर इकट्ठा होने तक की बातें शामिल है। मालवा उत्सव का जो मंच बनाया जाता है, वह भी दुनिया का सबसे बड़ा मंच माना गया है और विश्व रिकॉर्ड में शामिल है।

शंकर लालवानी के मुंह से कभी यह नहीं निकला कि अभी मैं व्यस्त हूं या यह मेरा काम नहीं है। चाहे वह पार्षद रहे हो या नगर निगम के सभापति, आईडीए के चेयरमैन रहे हो या सांसद। एक जिम्मेदार नागरिक का कर्त्तव्य वे हमेशा निभाते रहे हैं। उन्होंने लोक संस्कृतिक मंच नामक एक एनजजीओ का गठन किया, जिसका काम आदिवासी संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करना था। मध्यप्रदेश एक आदिवासी प्रमुख क्षेत्र है। उन्हें हमेशा यह बात महसूस हुई कि भारत की सभ्यता में आदिवासियों का योगदान अतुलनीय है, इसलिए उनके सभी त्यौहारों, परंपराओं और लोक कलाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। लोक संस्कृति मंच ने इस क्षेत्र में काफी कार्य किया है।

इंदौर में रहने वाले लोग जानते हैं कि कई ऐसे परंपराएं उन्होंने शुरू की है कि अगर वे नहीं होती, तो इंदौर इतना खुशनूमा और पर्यावरण की रक्षा करने वाला शहर नहीं होता। आज इंदौर के विभिन्न क्षेत्रों में दीवारों पर आप लुभावने मांडने देख सकते है। इसकी शुरुआत शंकर लालवानी ने ही की थी। इससे कलाकारों को असीमित केनवास मिला और वे अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन कर पाए। आप किसी भी चौराहे पर इन पारंपरिक चित्रों की छवि देख सकते हैं। अनेक सार्वजनिक दीवारें अटल बस सर्विस के बस स्टॉप, रोटरियां, मकानों और कॉलोनियों की दीवारों आदि पर आप ये सुंदर चित्र देख सकते हैं।

सन 2009 में शंकर लालवानी की प्रेरणा और सहयोग से यह कार्य शुरु हुआ। सबसे पहले नेहरू पार्क और रीगल चौराहे की दीवारें मांडने से सजाई गई। फिर बाल विनय मंदिर, विवेकानंद स्कूल, डीआईजी बंगला आदि क्षेत्र को इसी तरह के लोक चित्रों से सजाया गया। इस सबका खर्च लोक संस्कृति मंच ने अपनी ओर से उठाया।

कलाकारों को यह छूट दी गई कि वे अपनी मनपसंद की कृतियां निर्मित करें। इस तरह 25 से 30 कलाकारों ने इंदौर में लगभग डेढ़ हजार मांडने बना दिए। ये सभी मांडने सुंदर चित्रकारी के साथ ही संदेश भी देते थे। ये संदेश पर्यावरण को बचाने, सभ्यता की रक्षा करने, परस्पर सहयोग करने आदि की भावना का प्रचार थे। अगर ये मांडने नहीं बनाए जाते, तो ये दीवारें या तो सुनी रहती या उन पर पान की पीक पड़ी रहती। विज्ञापनी पोस्टर भी यहां चिपके होते। शंकर लालवानी ने इस मनोविज्ञान को समझा कि इंदौर के लोग किसी भी साफ-सुथरी जगह को बदरंग होते हुए नहीं देख सकते। लोगों ने इन मांडनों को संरक्षित किया और कलाकारों को भी प्रोत्साहित किया।

कला प्रेमी शंकर लालवानी ने इंदौर के आर्किटेक्चर को समझा और लोगों को बताया कि यहां कि कुछ इमारतें बहुत ज्यादा आर्कियालॉजिकल महत्व रखती है। ऐसे इमारतें इंदौर की शान है और उन पर हर इंदौरी को गर्व होना चाहिए। इस तरह की इमारतों के संरक्षण के साथ ही उन्हें कोई न कोई कलर थीम देने की योजना भी बनी। उन्होंने इंदौर में उन इमारतों के रखरखाव पर विशेष ध्यान देने की बात कही, जो 100 साल या उससे अधिक पुरानी हो चुकी हैं। उनका मानना है कि इस तरह की इमारतें हमारी सभ्यता और संस्कृति का हिस्सा हैं और आने वाले पीढ़ियों को ऐसी इमारतों से परिचित कराया जाना चाहिए।

शंकर लालवानी मानते है कि भारत में लोक कला का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। सैकड़ों तरह की लोक कलाएं भारत में उपस्थित है। ये कलाएं क्षेत्र के हिसाब से अपनी खास शैली रखती है। इन सभी को एक सूत्र में पिरोया जाना जरूरी है। इसके लिए लोक संस्कृति मंच ने लगातार कई प्रयास किए। मालवा में संझा का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं तरह-तरह के लोक गीत गाती है और गोबर, चावल, गेरू और अन्य सामान से दीवारों पर संजा माता की सुंदर-सुंदर प्रतियां बनाती है। इन संजा कृतियों में किशोरियों और युवतियों के सपनों को देखा और समझा जा सकता है। अधिक से अधिक प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके दीवारों को सजाना एक ऐसा कार्य है, जो बहुत ही विलक्षण कहा जा

इंदौर की आबो हवा सुधारने की पहल

सकता है। इस कार्य में जनभागीदारी अधिक से अधिक हो, इसके लिए शंकर लालवानी ने लगातार प्रयास किए हैं। ये सिर्फ कलाकृतियां ही नहीं, इनसे हमारी भावनाएं और संस्कृति जुड़ी हुई है। इसके बिना हम अपनी पहचान स्थापित नहीं रख सकते।

लोक कलाओं को संरक्षित करने के साथ ही शंकर लालवानी ने लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक उत्सव आदि के भी संरक्षण के लिए प्रयास शुरू किए। होली के अवसर पर प्रगतिशील तरीके से फागोत्सव मनाना भी उसी में से एक हैं। फागोत्सव में फूलों की पंखुड़ियां और पत्तियों का उपयोग किया जाता है। संगीत और भजन की मनोहारी ध्वनियां गूंजनी लगती हैं। राजवाड़ा के गणेश हॉल में होने वाले इस अनोखे कार्यक्रम में कलाकार होल्कर शैली में ही सजावट करते है। लोक संस्कृति मंच ने इसके अलावा उस्ताद अमीर खां समारोह, राष्ट्रीय नृत्य प्रतिभा समारोह, संगीत संगम जैसे आयोजन भी शुरु किए। इनके अलावा राज मल्हार उत्सव, नृत्य रंग, फागुन और आरंभ जैसे समारोहों की श्रृंखला शुरू की गई।

मालवा उत्सव लोक संस्कृति मंच के माध्यम से आयोजित किया जाने वाला एक ऐसा राष्ट्रीय उत्सव बन गया है, जिसमें सैकड़ों कलाकार सहभागिता निभाते हैं। दर्शकों की लाखों की संख्या को देखते हुए इसे देश का सबसे बड़ा लोक महोत्सव कहा जा सकता है। इसमें न केवल कलाकार अपनी सहभागिता करते हैं, बल्कि वे अन्य कलाओं को सीखने के लिए भी प्रयास करते हैं। इससे संस्कृति का आदान–प्रदान आसान हुआ है। मालवा उत्सव में देखा जा सकता है कि एक क्षेत्र के कलाकार अपनी कला के प्रदर्शन के साथ ही दूसरे क्षेत्रों से आए कलाकारों को अपनी कला का प्रशिक्षण भी देते हैं। इस तरह यह कलाकारों के ज्ञान और अनुभव का विस्तार भी है।

हड़तालिका तीज और गुड़ी पड़वा जैसे उत्सवों को लाखों लोगों से जोड़ने का काम भी लोक संस्कृति मंच ने किया। ये सभी लोक कलाएं हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और हमारी पहचान को जीवित रखती है। शंकर लालवानी मानते है कि पश्चिमीकरण के मामले में भाषण देना बहुत आसान है, लेकिन उससे बचाने के लिए भारतीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करना ज्यादा जरूरी है। इसके लिए कोई भी प्लेटफॉर्म खाली नहीं छोड़ना चाहिए और न ही यह सोचना चाहिए कि यह कार्य तो हमारा है ही नहीं। हम किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो, हमारा रोजगार कुछ भी हो, हम भारतीय है और हमें अपनी पहचान हमारे इन सांस्कृतिक सरोकारों से ही मिलेगी। इसके लिए कभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि मैं अभी बहुत व्यस्त हूं या यह काम तो मेरा नहीं सरकार का है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

थ्री लेयर ब्रिज का प्रयास

इंदौर के विकास के लिए शंकर लालवानी ने मेट्रो रेल कार्पोरेशन के वरिष्ठ अधिकारियों से कई बार बैठक की हैं। श्री लालवानी का प्रयास है कि महू से देवास नाके तक थ्री लेयर ब्रिज बनाया जाएं, जिसमें सबसे नीचे सामान्य ट्रैफिक होगा, उसके ऊपर एलिवेटेड ब्रिज होगा और सबसे ऊपर मेट्रो चलेगी। लालवानी ने इसकी डीपीआर जल्द से जल्द बनाने की बात कही है। पहले फेज में राजीव गांधी चौराहे से विजय नगर तक थ्री लेयर एलिवेटेड मेट्रो ब्रिज की डीपीआर बनाने के लिए कहा है। इसके दूसरे फेस में राजीव गांधी चौराहे से महू तक और विजय नगर तक देवास नाके तक कि डीपीआर बनाने के निर्देश दिए है। उन्होंने मेट्रो रेल के अधिकारियों से कहा है कि टंट्या भील चौराहे से तेजाजी नगर और शहर के अन्य हिस्सों में भी संभावनाएं तलाशे। उन्होंने मेट्रो रेल्वे के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नागपुर, दिल्ली, आगरा और जयपुर मेट्रो दौरे के अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया कि कोई भी प्रोजेक्ट को अंतिम रूप दिए जाने के पहले शहर के जनप्रतिनिधियों और प्रबुद्धजनों के साथ बैठक करके सभी जानकारियां साझा करें, ताकि सुझावों पर भी ध्यान दिया जा सकें।

एयरपोर्ट पर प्रस्तावित मेट्रो स्टेशन एयरपोर्ट के करीब बनाना जरूरी है। राजवाड़ा के पास अंडरग्राउंड मेट्रो रूट की जानकारी भी शेयर की जाएं और अंडरग्राउंड रूट ऐसा बनाया जाए कि यात्रियों को असुविधा न हो। मेट्रो को यातायात के दूसरे सभी साधनों से कनेक्टिविटी दी जानी जरूरी है। रेल, बस, प्रस्तावित केबल कार और ये सब साधन इस तरह समन्वित रूप से हो कि यात्री को कहीं भी असुविधा का सामना नहीं करना पड़े। इंदौर में जनसंख्या के मान से कारों की संख्या बहुत ज्यादा है। अगर मेट्रो का सफल संचालन हुआ, तो लोग अपनी कारों के बजाय मेट्रो में यात्रा करना पसंद करेंगे। इससे सड़कों पर यातायात का दबाव कम हो जाएगा। सांसद शंकर लालवानी ने यह भी सलाह दी कि इंदौर में बीआरटीएस कॉरिडोर की आवश्यकता नहीं रहेगी, अगर थ्री लेयर ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था कर दी जाएं।

अमृत सरोवर योजना अन्तर्गत तालाब
का निर्माण कार्य का भूमि पूजन कार्यक्रम

इन्दौर में सांस्कृतिक जनआंदोलन - मालवा उत्सव

राजनीति में आने के साथ ही शंकर लालवानी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा से प्रभावित होकर सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय होने का फैसला लिया। उन्हें लगा कि भारतीय लोगों में विदेशी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। ऐसे में भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। खासकर के लोग कला के क्षेत्र में यह कार्य होना चाहिए। इसी अवधारणा को लेकर लोक संस्कृति मंच का गठन हुआ। शुरूआत बहुत छोटे स्तर पर हुई थी। संझा प्रतियोगिता के रूप में यह मंच तैयार किया गया था। सन 2000 में यह संस्था गठित की गई थी। पहले हम पोल्दार प्लाजा में लोक संस्कृति मंच के उत्सव आयोजित करते थे, लेकिन अब हमें लाल बाग परिसर भी छोटा पड़ता है।

इस समारोह में शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में एनआरआई भी आते है। अनेक एनआरआई भारत आने का कार्यक्रम इसी तरह बनाते है कि वे मालवा उत्सव के दौरान ही इंदौर आए। वे लोग लगभग पूरे आयोजन के दौरान प्रतिदिन आयोजन में आते है। मालवा उत्सव में प्रतिदिन करीब एक लाख लोग शामिल होते है। एक सप्ताह के आयोजन में लगभग 7 लाख लोग इस आयोजन में शामिल होते है।

कई लोग शिकायत करते है कि इस आयोजन के दौरान लालबाग इलाके में अव्यवस्था होती है। हमें उनकी सुविधा का पूरा ध्यान है, इसीलिए हमारे कार्यकर्ता मदद के लिए तैयार रहते है। शनिवार रविवार को जरूर कुछ ज्यादा भीड़ हो जाती है, लेकिन हम ऐसे आयोजन को जिसमें लाखों लोग आते हो, शहर के बाहर नहीं कर सकते। क्योंकि हम शहर के बाहर ऐसा आयोजन करेंगे, तब लाखों लोगों को आने–जाने में परेशानी होगी।

लोक संस्कृति मंच के इस आयोजन में भारत के सभी राज्यों के प्रतिनिधि होते हैं। यहां तक कि कुछ बाहरी देशों के लोक कलाकार भी इसमें आने लगे है। करीब दो दर्जन राज्यों के लोक कलाकार इसमें शामिल होते हैं। कश्मीर, हिमाचल, केरल, नागालैंड, कच्छ कोई भी छोटा या बड़ा राज्य ऐसा नहीं, जहां के प्रतिनिधि इस आयोजन में नहीं आते।

लोक कलाकार के साथ ही लोक शिल्प कला का प्रदर्शन भी यहां किया जाता है। कलाकृतियों की बिक्री भी मेले में की जाती है। इसके साथ ही लोक शिल्पकार यहां प्रशिक्षण शिविर भी लगाते है और दूसरे लोगों को इन लोक कलाओं को और लोक शिल्प की कला को आगे बढ़ाने का काम करते है।

लोक संस्कृति मंच के मालवा उत्सव में अब खान पान की संस्कृति को भी शामिल किया गया है। देशभर की खान पान की शैलियों में बना खाना यहां उपलब्ध रहता है। अब तो हमने वहां जैन फूड भी उपलब्ध कराया है। मालवा उत्सव का फूड झोन बहुत लोकप्रिय है, क्योंकि यहां मराठी व्यंजनों के अलावा राजस्थानी, कश्मीरी, दक्षिणी भारतीय, गुजराती, बंगाली, पंजाबी, पूर्वोत्तर के व्यंजन भी खा सकते हैं। ऐसा विलक्षण फूड मेला कहीं और नहीं होता है।

मेले में आने वाले शिल्पकार हाथों से जो कलाकृतियां बनाते हैं, उसमें उनकी कला और संस्कृति प्रदर्शित होती है। उन कलाकृतियों का कोई मोल नहीं है। ऐसी वस्तुएं मामूली दामों पर मेले में उपलब्ध हो जाती है। मशीनों से बनी हुई ऐसी चीजें सस्ते में उपलब्ध हो सकती है, लेकिन लोक कलाओं के लिए समर्पित मेला उन कलाकारों के लिए संजीवनी बन जाता है। यहां आने वाले कई कलाकार पूर्वोत्तर राज्यों के ग्रामीण इलाकों से आते है। वहां से इंदौर तक आने में उन्हें 5 दिन का समय लगता है, क्योंकि गांव से शहर तक आना होता है और वहां से कनेक्टिंग ट्रेन से इंदौर यात्रा करनी पड़ती है। यहां

इन्दौर में सांस्कृतिक जनआंदोलन - मालवा उत्सव

आकर वे न केवल अपनी राज्य की लोक कला का प्रदर्शन करते है, बल्कि दूसरे राज्यों की लोक कलाओं का भी जायजा लेते है और उन्हें सीखने का प्रयास करते है।

इसी मेले में हम भारत की विभिन्न तरह की परंपराओं को प्रदर्शित करते है। एक वर्ष मालवा उत्सव में पूरे देश में पहनी जाने वाली तरह–तरह की पगड़ियों की प्रदर्शनी की गई। अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग किस्म की पगड़ियां पहनने का रिवाज है। पगड़ी पहनने का यह तरीका वहां की संस्कृति को प्रदर्शित करता है। एक वर्ष हमने इस विषय पर प्रदर्शनी आयोजित की कि अलग–अलग राज्यों में लोग किस तरह हवा करने के लिए हाथ का पंखा इस्तेमाल करते है। जब बिजली नहीं थी, तब हाथ के पंखों से हवा की जाती थी।

बेटी बचाओ आंदोलन को लोकप्रिय बनाने के लिए एक बार हमने अलग–अलग प्रदेशों की गुड़ियाओं की प्रदर्शनी की गई। भारत में अलग–अलग स्थानों पर मंदिरों की अलग–अलग संरचना है। दिलचस्प बात यह है कि उन मंदिरों में जो घंटियां बजाई जाती है, उन घंटियों का आकार–प्रकार और ध्वनियां भी अलग–अलग होती है। हमने देशभर के मंदिरों की ऐसी 100 से अधिक तरह की घंटियों की प्रदर्शनी लगाई। कई लोगों को इस बात की जानकारी नहीं है कि मंदिरों की घंटियों की ध्वनी का उसके आकार–प्रकार से गहरा नाता है। जिस तरह की घंटियां दक्षिण भारतीय मंदिरों में होती है, वैसी मध्यप्रदेश के मंदिरों में नहीं होती।

मालवा उत्सव के लिए सलाह देने का काम एक कमेटी करती है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के सलाहकार और कला मर्मज्ञ है। उत्सव के प्रबंधन के लिए अलग–अलग कमेटियां है। दीपक लोंगले, सतीश शर्मा, मुद्रा शास्त्री, पवन शर्मा आदि कई प्रमुख लोग हैं, जो इसमें सहयोग देते हैं। पूरे देश के करीब 1000 कलाकार और शिल्पी आते है, उनके निवास और भोजन की पूरी व्यवस्था मंच की तरफ से की जाती है। हमारी कोशिश रहती है कि उन लोगों की मेजबानी इस तरह से की जाए कि वे मालवा के व्यंजनों से भी वाकिफ हो।

मालवा उत्सव की खूबी यह है कि यह सभी के लिए खुला है और इसके लिए कोई टिकट नहीं। जब हमने यह आयोजन शुरु किया था, तब हमने इसकी कल्पना नहीं की थी। शंकर लालवानी का कहना है कि जब लोक कलाकार अपनी प्रस्तुती देते है, तो लोगों को लगता है कि यह तो हमारी ही संस्कृति का हिस्सा है। संस्कृति विभाग, इंदौर विकास प्राधिकरण, पर्यटन विभाग, इंदौर नगर निगम आदि का इसमें योगदान होता है। यह एक तरह से सामाजिक योगदान है, जिसमें हम राजनैतिक विचारधारा आड़े नहीं लाते।

इस आयोजन के लिए कभी भी किसी से चंदा नहीं लिया जाता। विभिन्न विभाग और प्रायोजकों की मदद से आयोजन का खर्च जुटाया जाता है। यह आयोजन सभी के लिए होता है और जाति, धर्म से ऊपर बढ़कर है।

कोरोना काल के बाद इंदौर में फिर 7 दिवसीय मालवा उत्सव की शुरुआत हुई। उत्सव की शुरुआत प्रदर्शनी से हुई और शाम को उद्घाटन हुआ, जिसमें डिंडोरी से आए धुलिया जनजाति के कलाकारों ने गुदुम बाजा नृत्य प्रस्तुत किया। इसके लिए मंच पर श्रीराम मंदिर की भव्य प्रतिकृति बनाई गई। कलाकारों ने पारंपरिक नृत्यों की प्रस्तुती प्रारंभ की। साजो की ताल से ताल मिलाते हुए नृतकों ने थिरकना शुरु किया। इसी के साथ मंच पर तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, केरल और महाराष्ट्र के कलाकारों ने भी प्रस्तुती देना शुरु किया।

दो दशकों से मालवा उत्सव लोक संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने का उद्देश्य लेकर इंदौर में ऐतिहासिक प्रस्तुतियां लोगों तक पहुंचा रहा है। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के तहत 2021 में देश के विभिन्न प्रांतों की

इन्दौर में सांस्कृतिक जनआंदोलन - मालवा उत्सव

जनजातियों की संस्कृति वहां के नृत्य संगीत और कलाकृतियों के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। इनमें देश के विभिन्न भागों के बुनकर, शिल्पकार और कलाकार अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाते हैं। यहां सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होती है, जिनमें जनजातीय नृत्यों को प्राथमिकता दी जाती है। कठपुतलियों की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है। इसके साथ ही शिल्प बाजार भी आयोजित किया जाता है, जिसमें देश के विभिन्न भागों से आने वाले शिल्पकार अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी व बिक्री करते है।

कोरोना काल के बाद हुए इस आयोजन में अयोध्या के श्रीराम मंदिर और वाराणसी के काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का भी कटआउट प्रस्तुत किया गया। कोरकु, गदली, तेरहताली, सिद्धी धमाल, गणगौर आदि नृत्यों की प्रस्तुतियां नियमित होती है। ओरछा के राम मंदिर की प्रतिकृति वाला मंच 45 फुट ऊंचा और 100 फीट चौड़ा है। कोरोना के कारण दो गज की दूरी और मास्क की अनिवार्यता भी रखी गई, लेकिन दर्शकों के उत्साह में कोई कमी देखने को नहीं आई।

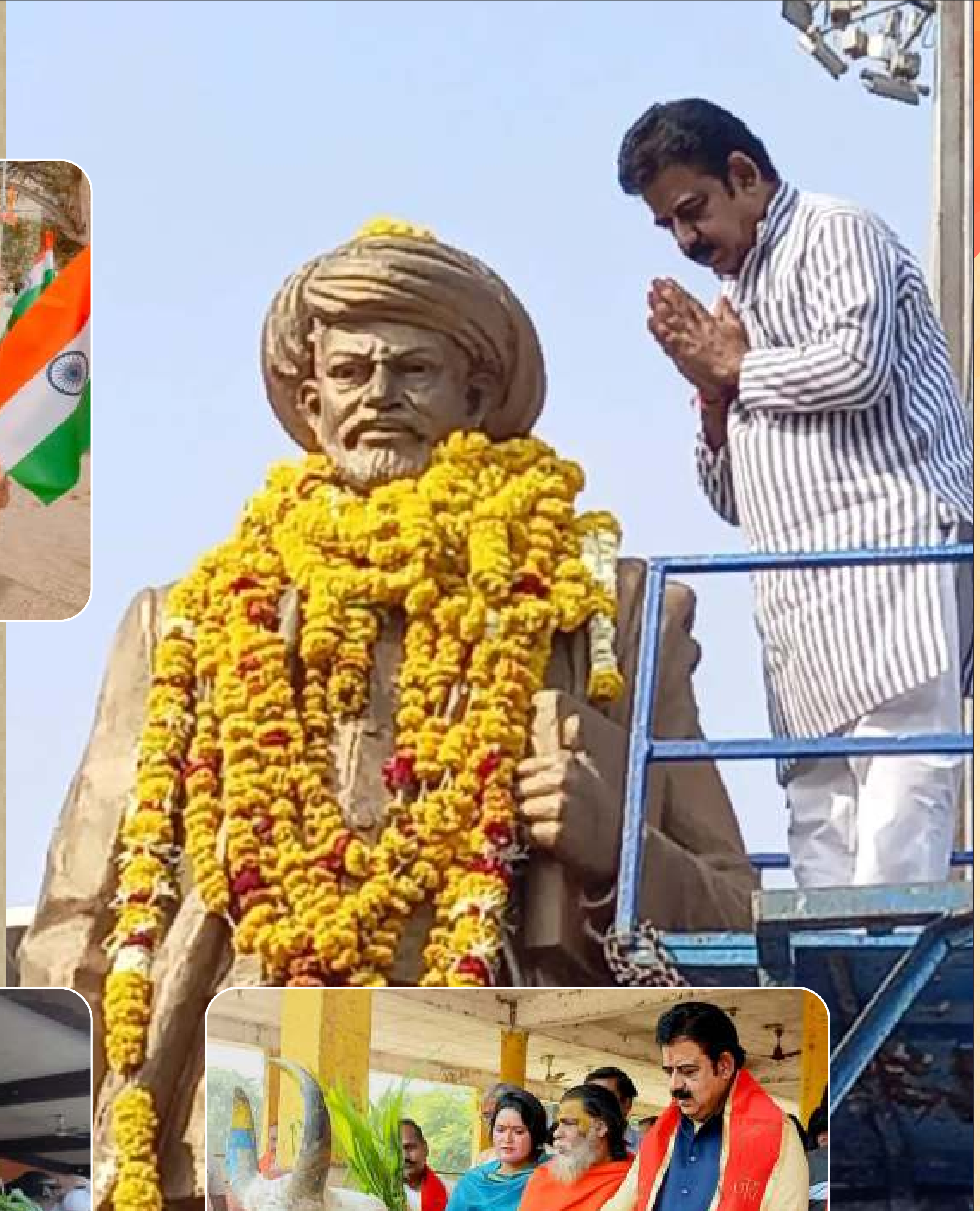

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सांप्रदायिक उन्माद के चलते हिन्दुओं पर घोर अत्याचार किए जाते रहे है। शंकर लालवानी का परिवार भी सिंध में इस तरह की प्रताड़ना झेल चुका है। उनके पिताजी स्व. जमनादास लालवानी सिंध में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यवाहक गुरु गोलवलकर सिंध में उनके परिवार से मिलने घर पर आ चुके थे। आरएसएस के संस्कार होने के कारण लालवानी परिवार में राष्ट्रवादी विचारधारा को महत्व दिया जाता था। भारत विभाजन की विभीषिका के दौरान जमनादास जी और उनका परिवार सिंध से पैदल चलता हुआ राजस्थान की सीमा से होकर इन्दौर पहुंचा था। इन्दौर आने के बाद जमुना दास जी का संपर्क आरएसएस के कार्यकर्ताओं से हमेशा रहा।

वे स्वयं भी संघ के स्वयंसेवक थे। जब भारतीय जनसंघ का गठन का हुआ, तब वे भारतीय जनसंघ से जुड़े और इन्दौर जनसंघ के अध्यक्ष भी बनें। जमनादास जी का कहना है था कि समाज से रिश्ता तोड़कर साधु बन जाना आसान है, लेकिन समाज में रहकर समाज को चैतन्य करना बहुत कठिन और जिम्मेदारी भरा। संघ प्रचारक का महत्व इसीलिए हैं कि वे समाज को चैतन्य करने के काम में लगे है।

जब इन्दौर में शंकर लालवानी का जन्म हुआ और उन्हें स्कूल भेजने का मौका आया, तब जमनादास जी ने शंकर को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भर्ती करने के बजाय सरस्वती शिशु मंदिर और वैष्णव विद्यालय में पढ़ाया। शंकर लालवानी को स्कूल में हमेशा अच्छे अंक आते थे, उन्होंने इंजीनियर बनने की इच्छा जाहिर की, तब पिता ने कहा कि मेहनत करो और अच्छे से अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन पाओ। बिना किसी कोचिंग सुविधा के शंकर लालवानी ने इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाया।

जमनादास जी का परिवार भले ही इंदौर आ गया हो, लेकिन सिंध में रहने वाले हिन्दू परिवारों के सामने समस्या कम होने का नाम नहीं ले रही थी। आतंकवादी गतिविधियां लगातार बढ़ती जा रही थी, जिसके कारण धर्मांतरण बड़े पैमाने पर होने लगा था, जो हिन्दू परिवार धर्मांतरण स्वीकार नहीं करते, उन्हें तरह-तरह की प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता था। 1947 में पाकिस्तान की स्थापना के समय जिस पाकिस्तान में करीब 20 प्रतिशत हिन्दू आबादी थी, वह आज घटते-घटते 2 प्रतिशत भी नहीं बची। मुंबई के रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी नामक संस्था ने इसके बारे में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है, जो सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स स्टडीस एंड अवेयरनेस के माध्यम से प्राप्त जानकारियों के आधार पर इस रिपोर्ट को पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर होने वाली हिंसा के बारे में जानकारियां दी गई है।

रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में हिन्दू महिलाओं के खिलाफ लगातार अपराध होते रहे हैं। अकेले सिंध प्रांत में ही प्रति माह 25 से 30 युवतियों का अपहरण कर उनके साथ जबरदस्ती विवाह करना और उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य करना एक आम बात हो गई थी। हिन्दू पुरुषों के साथ मारपीट और लूटपाट की घटनाएं भी आम थी।

पाकिस्तान का कानून भी पीड़ितों की मदद नहीं करता था और प्रशासन तथा पुलिस के लोग एक तरफा कार्यवाही करते हुए हिंसा फैलाने वालों की ही मदद करते नजर आते। आतंक के डर से अनेक परिवारों ने धर्मांतरण को अपना लिया और कई अपने मूल स्थानों से पलायन को मजबूर हुए। पाकिस्तान की शिक्षा व्यवस्था भी कुछ ऐसी है, जो हिन्दूओं के खिलाफ हिंसा करने के लिए प्रेरित करती है और भारत के खिलाफ झूठी भावनाएं भड़काती है। आतंकियों और अपराधियों को वहां खुली शरण मिलती है और उनके खिलाफ कोई कुछ नहीं कहता।

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में इस बात का अध्ययन किया गया कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की स्थिति क्या है।

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

इसके लिए एक टीम बनाई गई जिसमें लेखक पत्रकार संगीत वर्मा, दिनेश थीते, नेहा तिवारी, राजीव पांडे, टेकचंद सोनावने, रवि गुप्ताआदि शोधकर्ता, पत्रकार, वकील आदि शामिल थे। इन लोगों ने पाकिस्तान से आकर भारत के जोधपुर और इन्दौर में रहने वाले सिंधी समाज के लोगों से बातचीत की और जाना कि पाकिस्तान में इनका सामाजिक स्तर क्या था और वे वहां से विस्थापित होकर भारत क्यों आए?

पाकिस्तान में उनकी आय कितनी थी और वे भारत में किन स्थितियों का सामना कर रहे है। शोधकर्ताओं ने पाकिस्तान के हिन्दू विस्थापितों, सामाजिक संस्थाओं के पदाधाकारियों और अन्य लोगों से बातचीत की, जिसमें कई दुखद और चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आए। बातचीत में अलग–अलग लोगों ने जिस तरह की समस्याएं बताई, उन समस्याओं का समाधान होने के बाद ही वे लोग पाकिस्तान जाने को तैयार थे।

इंदौर में फंसे पाकिस्तान के विस्थापित हिन्दुओं ने बताया कि यहां उनके पास रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं है और न ही जीवन यापन के लिए कोई काम धंधा। वे इंदौर में स्थानीय सिंधी समुदाय की मदद के सहारे किसी तरह जीवन बिता रहे है। पाकिस्तान में उनकी जिंदगी को खतरा होने के कारण वे भारत आए, क्योंकि वहां उनके रोजगार की कोई सुरक्षा नहीं थी और न ही उनके परिवार की महिलाओं और बच्चों के जीवन की रक्षा की जा रही थी।

इंदौर में स्थानीय सिंधी समाज के सहयोग और मध्यप्रदेश सरकार के सकारात्मक कदमों से ये लोग इंदौर को सुरक्षित स्थान मानते हैं और इसी तरह यहां रहकर अपना जीवन यापन करना चाहते है। भारत की नागरिकता को लेकर वे असमंजस में है, क्योंकि नागरिकता देने के मामले में उनका प्रस्ताव सरकारी फाइलों में दर्ज है और विचाराधीन हैं।

पाकिस्तान से बड़ी संख्या में हिन्दू भारत में धार्मिक यात्रा करने के लिए धार्मिक वीजा लेकर आते है और उनमें से बड़ी संख्या में लोग भारत में बसने की इच्छा रखते है। कई लोग वापस पाकिस्तान भी नहीं लौटते। 1965 में भारत सरकार ने ऐसे 8 हजार लोगों में से अधिकांश को नागरिकता प्रदान कर दी थी।

1971 में ऐसे विस्थापितों की संख्या 90 हजार हो गई थी। उनमें से भी अधिकांश को नागरिकता प्रदान कर दी गई, लेकिन 1992 के बाद हजारों पाकिस्तानी नागरिकों को भारत आना जारी रहा। ये लोग वापस पाकिस्तान जाना नहीं चाहते थे, क्योंकि हिन्दू होने के कारण इन्हें तरह–तरह की प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था, जो इन्हें नागवार गुजरता था। अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के कारण उन्हें भारत में बसने में बहुत सारी परेशानियां थी। इन हिन्दू विस्थापितों के सामने परेशानियां ही परेशानियां थी और उसका कोई हल उनके पास नहीं था।

इंदौर में आने वाले इन पाकिस्तानी हिन्दुओं के हितों के लिए इंदौर के स्थानीय सिंधी समाज के नेताओं ने लगातार प्रयास किए। शंकर लालवानी भी इस समस्या को लेकर लगातार केन्द्र सरकार और विदेश मंत्रालय में संपर्क में रहे। उन्होंने पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं की मदद करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी और लगातार इन लोगों को भारत की नागरिकता दिलाने के लिए प्रयास करते रहे।

मामला उतना साधारण नहीं था, जितना नजर आता था। इसमें बहुत सारे कानूनी पेंच थे और राजनैतिक दबाव भी। एक बड़ा वर्ग ऐसा भी था, जो पाकिस्तान से आए इन पीड़ित विस्थापितों को राजनैतिक चश्मे से देखता था। उस वर्ग को लगता था कि अगर इन लोगों को नागरिकता दे दी गई, तो इनके मताधिकार का उपयोग किस तरह किसी दल विशेष या एक पार्टी के पक्ष में हो सकता है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव तो आजादी के बाद से ही रहा है। 1980 के दौर में जब इस्लामी चरमपंथ अपने आतंकी दौर में आया, तो पाकिस्तान के हिन्दू और ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगे। 1992 के बाद पाकिस्तान में हिन्दू पूजा स्थलों को तोड़ने और वहां आग लगाने जैसे कृत्य बहुत सामान्य हो गए। हिन्दू लड़कियों का अपहरण

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

और उनके परिवार के साथ मारपीट आम हो गई। अनेक हिन्दू लड़कियों का अपहरण किया गया और जबरदस्ती उनका निकाह कर दिया गया। जब हिन्दू परिवारों ने कोर्ट में शरण ली, तब न्यायालय भी उनका कुछ नहीं कर पाया। सैकड़ों हिन्दू लड़कियों का अपहरण किया गया और उनका धर्म परिवर्तन किया गया। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में रहने वाले हिन्दू अधिकतर व्यापारी वर्ग के है। सबसे ज्यादा अपराध और अपहरण की वारदातें उन्हीं के साथ हुई है।

पाकिस्तान में हिन्दू मंदिरों पर हमला करना और वहां देवी–देवताओं की मूर्तियों को नष्ट करना आम होता गया। कई ऐतिहासिक मंदिरों को भी नष्ट कर दिया गया। मूर्तियां तोड़ दी गई और पूजा स्थल की पवित्रता को समाप्त करने की कोशिश की गई। हिन्दू प्रतिकों को गंदगी वाले स्थानों पर पटक दिया गया। पाकिस्तान के ईशनिंदा कानून की आड़ में मजहबी भावनाएं भड़काई जाने लगी। पैगम्बर हजरत मोहम्मद की आलोचना और कुरान शरीफ को नुकसान पहुंचाने जैसे अपराधों के लिए पाकिस्तान में कड़ी सजा का प्रावधान है। कुरान को क्षति पहुंचाने के लिए उम्र कैद और पैगम्बर की निंदा करने वाले के लिए मौत की सजा का प्रावधान है। ईशनिंदा कानून का पहला प्रावधान पाकिस्तान की इबादतगाहों से जुड़ा है। अनेक झूठे मामलों में हिन्दुओं को फंसाया गया और उन्हें गिरफ्तार किया गया। ईशनिंदा कानून 1980 में पाकिस्तान के फौजी हुक्मरान जियाउलहक ने लागू किया था, क्योंकि वे किसी भी तरह अपनी तानाशाही पाकिस्तान पर लागू रखना चाहते थे।

कानूनविदों का कहना है कि इस कानून का ईशनिंदा से लेना–देना कम है, जबकि निजी झगड़े निपटाने के लिए इस कानून का उपयोग आम बात है। एक प्रकरण ऐसा भी सामने आया, जब मौलवी ने कुरान के पन्ने जला दिया और एक हिन्दू परिवार पर आरोप लगाकर परिवार को जेल भिजवा दिया। पाकिस्तान अपने आप को इस्लामिक देश घोषित कर चुका है और वहां मानवअधिकारों के नाम पर केवल औपचारिकता ही बाकी बची है। पाकिस्तान में रहने वाले अनेक ईसाई परिवारों ने बच्चों के नाम मुस्लिम की तरह रखना शुरू कर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में जितने भी हिन्दू रह रहे है, उनमें से 94 प्रतिशत केवल सिंध प्रांत में है। पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत भी हिन्दुओं के प्रति सकारात्मक रूख नहीं अपनाती।

पाकिस्तान के जिन्ना इंस्टीट्यूट ने पिछले वर्ष पाकिस्तान के धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार की थी। इस रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान में गैरमुस्लिमों को वहां की राष्ट्रीय मुख्यधारा से बाहर कर रखा है। इस्लामिक कट्टरवादियों ने हिन्दुओं को निशाना बना रखा है और उनके साथ सामाजिक तथा आर्थिक भेदभाव किए जा रहे है। धर्म के आधार पर भेदभाव और हिंसा वहां आम है। जबरन धर्म परिवर्तन करवाना और पूजा स्थलों पर हमले आम बात है। जब ये मामले न्यायालयों में जाते है, तब न्यायालय भी इस बारे में कुछ करने में अपनी मजबूरी व्यक्त करते है।

संयुक्त राष्ट्र के दबाव के कारण पाकिस्तान में अल्पसंख्यक आयोग जैसी संस्थाओं का गठन किया गया, लेकिन ये आयोग भी केवल नाम मात्र के होते है। इनका उद्देश्य पाकिस्तान की छवि को किसी तरह विश्व मंच पर बचाकर रखना होता है। पाकिस्तान की सरकार वहां के अल्पसंख्यक आयोग का नाम बदलकर गैरमुस्लिम पाकिस्तानियों के अधिकारों के लिए राष्ट्रीय आयोग नाम रखना चाहती थी, लेकिन उसे अभी इसमें कामयाबी नहीं मिली। पाकिस्तान में भी मानव अधिकार आयोग बनाया गया है, लेकिन वह भी कागजी शेर ही है।

पाकिस्तान में अभी भी अल्पसंख्यकों पर इस तरह के अत्याचार जारी है। इस्लामिक कट्टरपंथियों की ज्यादती के कारण सिंध में एक साथ 3700 हिन्दुओं का धर्मांतरण करा लिया गया। जेकबाबाद जिले के समर गांव में 5700 हिन्दुओं को एक साथ इस्लाम में प्रवेश करा दिया गया। पाकिस्तान का कानून 18 वर्ष के कम के बच्चों को धर्म परिवर्तन विरोधी कानून के तहत संरक्षण देता रहा है, लेकिन अब वह कानून भी कोई मायने नहीं रखता। पाकिस्तान के कई मंत्री यह मानते हैं कि इस तरह के कानून इस्लाम विरोधी है, क्योंकि इस्लाम में धर्म परिवर्तन कराना गुनाह नहीं, बल्कि सवाब यानी

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

पुण्य का काम है। पाकिस्तान में धर्म परिवर्तन मौलवियों के लिए कमाई का जरिया, पुलिस अधिकारियों के लिए रिश्वत का जरिया और नेताओं के लिए वोट कबाड़ने का माध्यम बन चुका है। हिन्दुओं के अलावा सिखों के साथ भी ऐसी घटनाएं बहुत आम है। जिन लड़कियों का अपहरण करके मुसिल्म युवकों से निकाह कराया जाता है, उनमें से अधिकांश की शिकायत है कि उन्हें नियमित रूप से मारा–पीटा जाता है और यहां तक कि सामूहिक बलात्कार का भी शिकार बनाया जाता है। जुर्म की शिकार होने वाली ये लड़कियां 12 साल तक की छोटी उम्र की भी है।

जेकबाबाद से भारत में आकर रह रहे एक शरणार्थी सरदार लालसिंह ने एक इंटरव्यू में कहा कि वहां इस्लामिक कट्टरता का शिकार होने वालों में सिख भी बहुतायत में है, इसलिए हम भारत आकर बसना चाहते है। हम अपनी लड़कियों को स्कूल नहीं भेज सकते। अपना कारोबार नहीं कर सकते और अगर हम अपनी संपत्ती बेचना चाहे, तो उसे खरीदने वाला कोई नहीं होता और जो खरीददार बनकर आते है, वे कौड़ियों के दाम पर हमारी संपत्ती खरीदना चाहते है।

अमेरिका के लॉस एंजेस टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान का दुश्मन नंबर 1 भारत है। ऐसे में पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दू भी पाकिस्तान के लोगों के लिए दुश्मन नंबर 1 है। पलायन और धर्म परिवर्तन के कारण पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं की संख्या लगातार कम हो रही है। पाकिस्तान छोड़कर आए अधिकांश विस्थापित वहां नहीं जाना चाहते, जब उनके सामने पाकिस्तान भेजे जाने की बात उठती है, तब वे कहते है कि भले ही हमे यहां जेलों में बंद कर दो या फांसी पर लटका दो, हम वापस पाकिस्तान जाना नहीं चाहते।

पाकिस्तान में रहने वाले संपन्न हिन्दुओं की संख्या गिनी–चुनी ही है, लेकिन उन्हें भी तरह–तरह के अपमान का सामना हर रोज करना पड़ता है। बात चाहे कारोबार की हो, चाहे सरकारी दफ्तरों में जाने की। हिन्दुओं को वहां हमेशा दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। पाकिस्तान के ब्यूटी पार्लर में हिन्दू लड़कियों या महिलाओं के जाने पर उनकी बेइज्जती होती है। हिन्दू महिलाएं वहां कोई रोजगार नहीं पा सकती। हिन्दू महिलाओं द्वारा अपना कारोबार करने की बात तो सोची ही नहीं जा सकती।

पाकिस्तान में दिवंगत होने वाले अनेक हिन्दुओं को अंतिम संस्कार से वंचित रखा जाता है और दफनाने के लिए मजबूर किया जाता है। दाह संस्कार करना सामान्य बात नहीं बची, उसके लिए तरह–तरह की प्रताड़नाओं के शिकार होना पड़ता है। जिन हिन्दुओं को दफनाया जाता है, उन्हें भी अलग कब्रिस्तान में जगह दी जाती है। हिन्दू लोग वहां अपने परंपरागत त्यौहार नहीं मना सकते। होली और दिवाली जैसे महत्वपूर्ण त्यौहारों पर भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। होली के त्यौहार का होलिका दहन आसान नहीं और रंगों में खेलना मुश्किलों से भरा होता है। यदि किसी मुस्लिम के कपड़ों पर थोड़ा भी रंग लग गया, तो वे उस रंग को शैतान का खून कहकर हंगामा मचा देते है।

इस्लामिक देश होने के नाते पाकिस्तान में हिन्दुओं के धार्मिक आयोजन नहीं हो सकते। वहां राम लीला या रावण दहन जैसी गतिविधि संभव नहीं। हाल के वर्षों में पाकिस्तान में एक नई सामाजिक बीमारी ने जन्म लिया है और वह बीमारी यह है कि पाकिस्तानी हिन्दुओं को मुसलमानों ने अछूत मान लिया है। हिन्दुओं की इस संस्कार और परंपराओं को पूरी तरह से नजरअंदाज किया जाता है। भारतीय शास्त्री गायन और शास्त्री नृत्यों पर एक तरह से प्रतिबंध लगा है। वहां भरत नाट्यम, मणिपुरी या कुचीपुणी जैसे नृत्य कार्यक्रमों के आयोजन नहीं हो सकते। यह सब तब हो रहा है, जबकि पाकिस्तान की सरकार यह कहती है कि हमने अल्पसंख्यकों की परंपराओं, कला और संस्कृति के विकास के लिए अलग से आर्थिक प्रावधान कर रखे है।

पाकिस्तान में रहकर छोटे–मोटे कारोबार करने वाले लोगों को भी अलग तरह की परेशानियां सामने आती है। अध्ययन के दौरान यह बात सामने आई कि जेटबाबाद में किराने की दुकान चलाने वाले मनोज कुमार

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

वाधवानी को मजबूरी में अपनी दुकान बंद करनी पड़ी, क्योंकि इलाके के मुस्लिम परिवार दुकान पर आकर सामान जबरदस्ती उधार ले जाते थे। जब भी उधारी चुकाने की बात होती, तो वे लोग मारपीट पर उतारू हो जाते। एक बार जब उसने पैसों का तकादा किया और उधारी चुकाने की बात की, तो उसके 14 साल के बच्चे का अपहरण कर लिया गया। मजबूर होकर उसने दुकान ही बंद कर दी। दुकान और मकान बेचने की नौबत आई, तो कोई खरीदार नहीं मिला।

पाकिस्तान से ही आए, सरदार लालसिंह का कहना था कि जेकबाबाद के राघमन स्ट्रीट और कायदे आजम रोड पर उसके बंगले कम से कम 10 करोड़ रुपए की कीमत के है। जब उन्होंने ये संपत्ति बेचने का फैसला किया, तब कोई भी उस प्रापर्टी को खरीदने के लिए नहीं आया। बाद में उनके एक परिचित मुस्लिम ने बताया कि स्थानीय मस्जिद में मौलवी ने उसके खिलाफ फतवा जारी कर दिया है कि कोई भी व्यक्ति उस प्रापर्टी को नहीं खरीदे। इरादा यह है कि बिना बेचे ही वे अपनी प्रापर्टी छोड़कर कहीं और चले जाए।

पाकिस्तान के स्कूलों में हिन्दु बच्चों के साथ भारी भेदभाव होता है। यह भेदभाव ग्रामीण इलाकों में बहुत ही ज्यादा होता है। प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले एक बच्चे को शिक्षक ने इस कारण पीटा कि उसका सरनेम गांधी था। लड़कियों को तो आमतौर पर स्कूल भेजा ही नहीं जाता। पाकिस्तानी मुसलमानों की यह धारणा है कि वहां रहने वाले हिन्दुओं को पढ़ाई और कारोबार से दूर रहना चाहिए। उनके लिए अगर कोई काम है, तो वह खेतों में मजदूरी करने का। इसके अलावा वे किसी और कार्य के नहीं है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं को नौकरियां नहीं मिलती। सरकारी नौकरी तो बिल्कुल भी नहीं। वहां सेना और पुलिस में भी हिन्दुओं को भर्ती नहीं किया जाता। एक हिन्दु शिक्षिका की इसलिए पिटाई की गई कि वह मुस्लिम लड़कियों को ट्यूशन पढ़ाती थी। छात्र संघ के चुनाव में भी हिन्दू विद्यार्थी भाग नहीं ले सकते। पाकिस्तान के विश्वविद्यालयों में हिन्दू छात्रों को गोली मारने के कई प्रकरण सामने आए है।

हिन्दुओं पर अत्याचार के मामले हर सप्ताह पाकिस्तान में उजागर होते रहते है। ये सभी मामले मानवीयता की गरीमा खत्म करने वाले और घृणित रूप से उकसाने वाले होते है। भारतीय दूतावास जिन हिन्दुओं को भारत आने के लिए वीजा प्रदान करता है, उस पर भी कई बार पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियां सवाल करती है। पाकिस्तानी एजेंसियों की हिमाकत यहां तक बढ़ गई है कि वे भारतीय दूतावास पहुंचकर वीजा पाने वालों के बारे में पूछताछ करने से भी बाज नहीं आते। पाकिस्तानी पुलिस किसी भी अपराधी को पकड़ती है, तब उसके सामने उन आरोपियों को सबसे पहले सामने किया जाता है, जो हिन्दू होते है। पाकिस्तानी पुलिस का थर्ड डिग्री टार्चर सबसे पहले उन्हीं के साथ सामने आता है।

पाकिस्तान से आए अनेक शरणार्थियों का कहना है कि उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा सपना भारत में आकर खुली हवा में सांस लेना और भारत में बसना है। यहां तक कि हमारे सामने रोजगार की समस्या हो और रहने के लिए ठिकाना नहीं हो, तब भी खुली हवा में सांस लेना ही हमारा सपना होता है। पाकिस्तान की राजनीति और वहां के नेताओं के बारे में अधिकांश विस्थापितों की राय यही रही है कि वहां राजनीति में गुंडागर्दी का बोलबाला है और बगैर गुंडागर्दी किए कोई भी नेता नहीं बन सकता। पाकिस्तान के बड़े किसान और व्यापारी नहीं चाहते कि वहां के हिन्दु भारत में आकर विस्थापित हो, क्योंकि उन्हें लगता है कि जब तक पाकिस्तान में हिन्दु अल्पसंख्यक है, तब तक उन्हें सस्ते मजदूर आसानी से मिलते रहेंगे।

इंदौर, जोधपुर, अजमेर आदि शहरों में पाकिस्तान से आकर रहने वाले हिन्दुओं के सामने मुख्य चुनौती नागरिकता, रोजगार और घर की रही है। शंकर लालवानी और सिंधी समाज के अन्य नेता इन लोगों की समस्याओं को हल करने के लिए अपने-अपने स्तर पर कार्य करते रहे हैं। देश के अनेक शहरों में इन शरणार्थियों के सहयोग के लिए संगठन बने है। इन संगठनों के प्रयास से राजस्थान में जनवरी और फरवरी 2005 के महीनों में ही 11 हजार 327 हिन्दुओं को भारत की नागरिकता प्रदान की गई थी। यह संख्या इतना छोटी है, जिसे ऊंट के मुंह में जीरा ही कहा जा

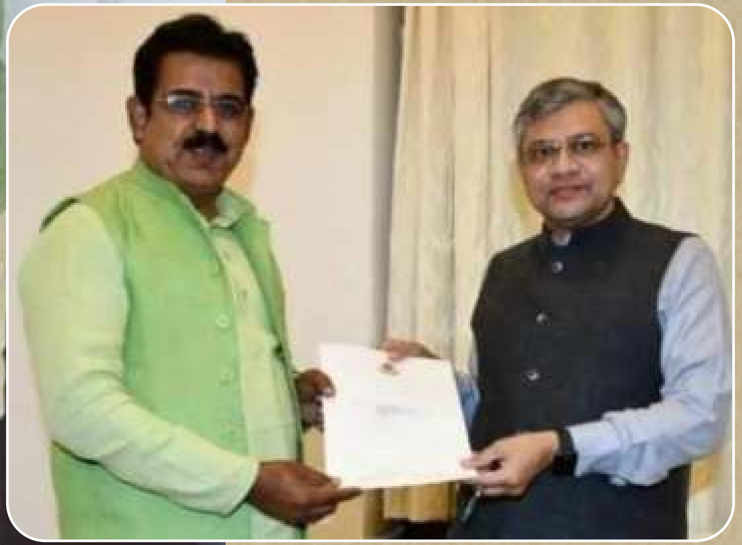

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

सकता है, क्योंकि 1965 तक पाकिस्तान से 1 लाख 11 हजार से अधिक शरणार्थी आ चुके थे और वे भारत की नागरिकता के लिए आवेदन कर चुके थे। पाकिस्तान से आए हिन्दुओं की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उनमें से अधिकांश तो नागरिकता के लिए आवेदन पत्र के साथ जमा की जाने वाली फीस भी भरने के लायक नहीं है। सीमांत लोक संगठन नामक संस्था ने नागरिकता के आवेदन पत्र के साथ जमा की जाने वाली फीस इकट्ठा करने का बीड़ा उठाया।

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार भारतीय जनता पार्टी के नेता शंकर लालवानी ने इन विस्थापितों के लिए लगातार प्रयास किए हैं। इन विस्थापितों में से अधिकांश पाकिस्तान के सिंध प्रांत के जेकबाबाद के ही है। जहां से शंकर लालवानी के पिता भारत आए थे। श्री शंकर लालवानी ने केन्द्र सरकार से लगातार वार्ताएं की और यह व्यवस्था की कि विस्थापितों के बच्चों को स्कूलों में एडमिशन मिलें और उन्हें भारत में रोजगार प्रदान किया जा सकें।

पाकिस्तान से आए हिन्दू शरणार्थियों के बारे में संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भी लगातार अनदेखी की है। पाकिस्तान भी सार्क संगठन का हिस्सा रहा है। दक्षिण एशियाई देशों के इस संगठन में भी पाकिस्तान में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों के मामले में कभी खुलकर बात नहीं की। इस मामले में सार्क के सभी देशों को जानकारी है, लेकिन फिर भी न भारत सरकार ने कभी पहल की और न ही किसी और संगठन या देश ने। इस पूरे संकट में भारत एक प्रमुख देश रहा है, क्योंकि विस्थापितों ने बड़ी संख्या में भारत में ही ठिकाना बना लिया है। भारत पाकिस्तान के बीच होने वाली कूटनीतिक चर्चाओं में भी इस मुद्दे पर चर्चा नहीं की गई। यह भी आश्चर्य का विषय है कि संयुक्त राष्ट्र में भी भारत ने कभी इस मुद्दे को नहीं उठाया।

पाकिस्तान में हिन्दुओं के प्रति होने वाले अत्याचारों की कहानियां रौंगटे खड़े कर देने वाली है। संगहार जिले के टंडू आदम कस्बे में रहने वाला एक परिवार भारत आकर जोधपुर के विस्थापन शिविर में रह रहा है। उस परिवार की 8 साल की लड़की का अपराध यह था कि वह अपने कानों में सोने की बालियां पहने हुए थी। विधर्मी गुंडे उस बालिका का अपहरण करके जंगल ले गए और सोने की बाली के लालच में बालिका के दोनों कान काट लिए। इसके बाद उन्होंने बालिका की हत्या कर दी। बालिका का शव मिलने के बाद भी पुलिस ने कोई कड़ी कार्रवाई नहीं की। ऐसी ही घटना 15 साल की लड़की गुलाबो के साथ हुई, जिसे अपहर्ताओं ने जंगह में ले जाकर लूटा, बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी। पाकिस्तान में मीडिया में भी इस तरह की घटनाओं को नजरअंदाज किया जाता है।

पाकिस्तान में अतिवादी उन हिन्दू बच्चों पर भी निगाह रखते है, जो प्रतिभाशाली होते है। इंदौर में विस्थापित के रूप में रह रहे मनोज कुमार ने बताया कि उनके 14 वर्षीय बच्चे को स्कूल का प्रिंसिपल बहुत पसंद करता था। एक दिन प्रिंसिपल ने उन्हें बुलाया और कहा कि वे एक विलक्षण कार्य के लिए उस 14 वर्षीय बच्चे को अपनाना चाहते है। जब मनोज कुमार ने पूछा कि वह क्या कार्य है, तब बताया गया कि उसे पीओके में एक विशेष ट्रेनिंग के लिए भेजना चाहते है। प्रिंसिपल की इच्छा जानते ही मनोज कुमार और उनकी पत्नी की रूह कांप उठी। उन्होंने बच्चे को तत्काल किसी तरह भारत भेजने में कामयाबी पाई और बाद में खुद भी भारत आ गए। स्कूल का प्रिंसिपल उस हिन्दू बच्चे को आतंकवादियों के साथ भेजना चाहता था, ताकि उसका ब्रेन वॉश किया जा सकें और उसे आतंकवादी ग्रुप में शामिल किया जा सकें।

एक–दो नहीं बल्कि अनेक कहानियां है, जो रूप को कंपा देती है। हमारे पड़ोस में पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ कितनी अमानवीय हरकतें हो रही है और दुनियाभर के मानव अधिकार संगठन इस बारे में कुछ भी करने में नाकाम रहे है। भारत में श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद इस दिशा में संवेदनशीलता से कार्य किया गया। श्री शंकर लालवानी के लोकसभा में जाने के बाद इन विस्थापितों का स्वर मुखर हुआ है और भारत सरकार का नजरिया भी इन विस्थापितों के प्रति मानवीय हुआ है।

मानव अधिकारों के लिए संघर्ष

दैनिक भास्कर की एक्सक्लूजिव खबर के अनुसार नागरिकता संशोधन बिल आने के बाद के दो साल के भीतर इंदौर में 1530 सिंधी नागरिकों को नागरिकता प्रदान की गई। ये सभी पाकिस्तान से आए है। पिछले पांच सालों में कुल 4177 सिंधी जो पाकिस्तान मूल के है, भारत की नागरिकता ले चुके हैं। यानी जितने लोगों ने भारत की नागरिकता ली, उनमें से एक तिहाई से भी ज्यादा यानी 36.63 प्रतिशत तो दो साल के भीतर ही इंदौर में बस गए और यहां सम्मानजनक जीवन जी रहे है।

पिछले दो साल में इंदौर में नागरिकता के लिए 2055 आवेदन आए थे, इनमें से 3 को नामंजूर कर दिया गया। 527 आवेदनों पर अभी विचार चल रहा है। कानूनी औपचारिकताओं के बाद इन लोगों को नागरिकता की मंजूरी मिलने की संभावना है। इस तरह जितने भी लोग सिंध पाकिस्तान से भारत आए और नागरिकता के लिए आवेदन किया, उनमें से लगभग 50 प्रतिशत इंदौर में बस चुके होंगे।

सिंध पाकिस्तान से आए ये लोग शार्ट टर्म विजा लेकर आते है और फिर लांग टर्म विजा के लिए आवेदन करते है। इनका रिकॉर्ड अगर अच्छा हो तो इनके नागरिकता संबंधी आवेदन पर विचार किया जाता है। इन्हें नागरिकता देने के पहले ग्यारंटर को भी खोजा जाता है। कई विभागों से एनओसी लेनी पड़ती है और इन्हें शपथ भी लेनी होती है कि ये भारत के संविधान के प्रति पूरी निष्ठा रखेंगे। भारत के सभी कानूनों को पूरी तरह से मानेंगे और भारत के राष्ट्र गान को याद रखेंगे तथा उसका सम्मान करेंगे।

पहले सिंध से आए इन लोगों को नागरिकता देने का फैसला दिल्ली में गृहमंत्रालय द्वारा किया जाता था, लेकिन अब इस प्रक्रिया को आसान बना दिया गया है। जिला स्तर पर कलेक्टर इस तरह के मामलों में जांच कर सकते हैं और फैसला ले सकते हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ पाकिस्तान से ही लोग भारत आकर नागरिकता चाहते हैं। दुनिया के अन्य देशों से भी लोग भारत में नागरिकता के लिए आवेदन करते हैं, लेकिन उन आवेदकों में 70 प्रतिशत पाकिस्तान के ही होते हैं।

EO Indore
BACK
-52.36
PLAN THE BUDGET
with
Anurag Thakur
Minister of State for Finance & Corporate Affairs
Government of India
Special Guest :
Shri Shankar Lalwani, Member of

पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं की मदद

पाकिस्तान से शार्ट टर्म विजा लेकर आने वाले हिन्दुओं के लिए शंकर लालवानी एक दशक से अधिक समय से अभियान चला रहे है। उनका प्रयास रहा कि पाकिस्तान से जो हिन्दू कानूनी रूप से भारत आए और यहां 7 साल से अधिक समय से रह रहे हैं, उन्हें भारत की नागरिकता प्रदान कर दी जाएं। शंकर लालवानी का दावा रहा कि पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं में वे लोग थे, जो यहां के कानूनों का पालन करते हुए निवास कर रहे है। 7 साल तक यहां रहने वाले ऐसे लोगों ने नागरिकता के लिए आवेदन किया। इनके बच्चे अलग–अलग शिक्षा संस्थानों में पढ़ाई करते रहे, कई तो डॉक्टर भी बने और समाज की सेवा करते है। पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं में से अधिकांश लोग राजस्थान और मध्यप्रदेश में आए।

मध्यप्रदेश में आने वाले विस्थापित लोगों में मूलत: कारोबारी लोग है, जबकि राजस्थान में रहने वाले लोग श्रमिक वर्ग के थे। पाकिस्तान में हिन्दुओं की प्रताड़ना के कारण परेशान होकर लोग भारत आते रहे। हमने कई बार भारत सरकार से मांग की कि इस विषय को गंभीरता से लिया जाए। इस मामले में गंभीरता से फैसला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने ही लिया। इसके पहले हमारी सरकार पाकिस्तान से द्विपक्षीय वार्ता करती थी, लेकिन फिर भी पाकिस्तान के विस्थापित हिन्दुओं के बारे में कोई निर्णय नहीं हो पाया। एनडीए की सरकार बनने पर गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस मुद्दे को कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाया।

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर निरंतर अत्याचार होते रहे। पाकिस्तान के ही डान अखबार ने लिखा था कि सिंध प्रांत में हर महीने 25 से 30 बलात्कार के मामले हिन्दू महिलाओं व युवतियों के साथ होता है। पाकिस्तान की सरकार वहां के जिहादी लोगों को रोकने में सक्षम नहीं थी या रोकना नहीं चाहती थी। विभाजन के वक्त पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी 20 प्रतिशत से अधिक थी, जो अब घटकर 2 प्रतिशत भी नहीं बची। अल्पसंख्यकों की मुद्दे पर भारत और पाकिस्तान के बीच कई बार चर्चाएं हुई। भारतीय जनता पार्टी ने इस बारे में एक कमेटी बनाई थी। इस कमेटी ने मानव अधिकार हनन के मामलों को लेकर एक रिपोर्ट बनाई थी। यह रिपोर्ट श्री लालकृष्ण आडवाणी को प्रस्तुत की गई थी। रिपोर्ट में इस बात पर ध्यान दिलाया गया कि पाकिस्तान से जो लोग भारत आना चाहते है, उन्हें भारत में नहीं आने दिया जाता। हमने मानव अधिकार संगठनों से अपील की कि वे इस बारे में पहल करें। क्या कारण है कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर इतने अत्याचार होने के बाद भी यह मानव अधिकार संगठन कोई पहल नहीं करते।

श्री शंकर लालवानी के नेतृत्व में मानव अधिकार आयोग का ध्यान बार–बार दिलाया गया। पाकिस्तान में अल्पसंख्यक तो क्या बहुसंख्यक समाज की लड़कियों की भी पढ़ाई नहीं हो। पाकिस्तान के जेहादी लोग चाहते है कि हिन्दू लोग वहां से जगह खाली करके चले जाए। वहां हिन्दू मंदिर में घंटे नहीं बजा सकते। महिलाएं मंगलसूत्र नहीं पहन सकती। महिलाएं मेहन्दी नहीं लगा सकती। ऐसे में भारत को हिन्दू लोगों की मदद करनी चाहिए। सांसद शंकर लालवानी बार–बार इस तरफ ध्यान दिलाते रहे कि बांग्लादेश से आने वाले अल्पसंख्यकों में से अनेक अल्पसंख्यक ऐसे है, जो इंदौर में अवैध रूप से रह रहे है। इनके बारे में कोई दस्तावेजी व्यवस्था मौजूद नहीं थी, लेकिन पाकिस्तान से आने वाले हिन्दू नागरिकों को पुलिस को यह जानकारी देनी होती थी कि वे कहा रुके हुए है और कहा–कहा सफर कर रहे हैं। पाकिस्तान में जैसे–जैसे हिन्दुओं पर अत्याचार बढ़ें, वैसे ही पाकिस्तान से आने वालों की संख्या में वृद्धि होने लगी। पाकिस्तानी सरकार भारत आने वालों को आसानी से वीजा नहीं देती। वीजा की फीस भी बढ़ाकर 10–10 गुना कर दी गई थी। ऐसे सभी पीड़ितों के लिए शंकर लालवानी ने प्रयास किया और समाजसेवा के रूप में इसे लक्ष्य बना लिया। वे लोग मतदाता नहीं थे, लेकिन फिर भी उनके हितों को ध्यान में रखकर अभियान चलाए। इसके पीछे शुद्ध रूप से इंसानियत का दृष्टिकोण ही था। शंकर लालवानी को इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर बार–बार उठाया। उनका कहना था कि पाकिस्तान से आए ये हिन्दू मुख्यमंत्री से मिलने पर यही कहते रहे कि हमें पाकिस्तान जाने की बजाय यहां रहकर मरना मंजूर है। ऐसी द्रवित कर देने वाली घटनाओं से प्रभावित होकर शंकर लालवानी ने ऐसे नागरिकों के हित में आवाज उठाई, जिसका नतीजा यह हुआ कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने इस बारे में उदारतापूर्वक विचार किया।

ताई
महानगर विकास परिषद
पूर्व लोकसभा
पद्मभूषण श्रीमती
स्पीकर

अतिथि

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

सन् 2020 में पूरी दुनिया एक नई चुनौती का सामना कर रही थीं। सामान्य आंखों से नजर नहीं आने वाले कोविड–19 नाम के वायरस ने पूरी दुनिया में तबाही मचा रखी थीं। पूरी मानवीय सभ्यता इस संघर्ष से जूझ रही थीं। ऐसे में शंकर लालवानी ने इन्दौर के लोगों के लिए विशेष व्यवस्थाएं कीं। वे न केवल खुद सेवा कार्य में जुटे, बल्कि अपनी टीम के सभी सदस्यों को भी सेवा कार्य में लगा दिया।

पूरी दुनिया को यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि आखिर कोरोना का वायरस फैल कहां से रहा है। न यह बात पता थी कि आखिर कोरोना से निपटा कैसे जाए। इन्दौर वैसे भी उत्सवप्रिय शहर है और यहां हर त्यौहार बढ़–चढ़कर मनाया जाता है। मार्च 2020 में जब कोरोना की लहर जानलेवा साबित हो रही थी, तब इन्दौर में एक बड़ा वर्ग त्यौहार के रंग में डूबा था।

इन्दौर में होली और रंग पंचमी शानदार तरीके से मनाई जाती है। रंग पंचमी पर निकलने वाली गैर में लाखों लोग शामिल होते हैं। शंकर लालवानी ने इस बात की पहल की कि इन्दौर में रंग पंचमी पर पारंपरिक गैर नहीं निकले। शायद उन्होंने कोरोना के भीषण खतरे को भांप लिया था।

शंकर लालवानी ने तत्कालीन कलेक्टर को स्पष्ट कहा कि यह मामला बहुत गंभीर है और फिर लोगों की जिंदगी का सवाल है। ऐसे में गैर निकालने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। मार्च 2020 के मध्य में जब मध्यप्रदेश में राज्य सरकार को बचाने और गिराने की कवायदें चल रही थी, तब शंकर लालवानी ने अधिकारियों की बैठक बुलाई और सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों को खतरे से आगाह किया।

कोरोना के खतरे के दौरान ही मध्यप्रदेश में सरकार में परिवर्तन हुआ। शिवराज सिंह चौहान फिर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बनें और उन्होंने सांसद शंकर लालवानी को कोरोना की लड़ाई के खिलाफ इन्दौर का समन्वयक नियुक्त किया। इस दौरान शंकर लालवानी ने केन्द्र सरकार, मध्यप्रदेश शासन, जिला प्रशासन और जनता के बीच समन्वय का कार्य किया।

सांसद शंकर लालवानी के सामने उस दौर में एक और चुनौती थी और वह चुनौती यह थी, उनकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। ऐसे में शंकर लालवानी ने अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के लिए तो समय निकाला ही। इन्दौर के लोगों को कोरोना से बचाने के लिए कदम उठाना शुरू किए। उन्होंने अपना निजी टेलीफोन कोरोना हेल्पलाइन के रूप में शुरू कर दिया। पूरा शहर उनके 20 साल पुराने इस टेलीफोन नंबर से वाकिफ था। प्रतिदिन हजारों फोन उनकी हेल्पलाइन पर आना शुरू हुए। वे सैकड़ों फोन खुद अटेंड करते और लोगों को मदद करने के लिए आवश्यक कदम उठाते। लोगों के स्वास्थ्य को देखते हुए उन्होंने कोरोना काल में कठोर फैसले लिए और प्रशासन को उस पर अमल करने के लिए प्रेरित किया। एक वर्ग के लोगों ने उनकी इस सक्रियता का विरोध भी किया, लेकिन जनहित में उन्होंने इस पर ध्यान देना उचित नहीं समझा। यह भी आरोप लगे कि सांसद अपनी गरिमा के विरुद्ध जाकर कार्य कर रहे हैं, लेकिन वह विचलित नहीं हुए। उनके प्रयासों से ही कोरोना संकट के दौरान हजारों लोगों को भोजन खिलाने की व्यवस्था की जाने लगी। उन दिनों इस बात का किसी को एहसास नहीं था कि कोरोना कितना भीषण रूप ले रहा है।

शंकर लालवानी के प्रयासों की सभी जगह भूरी–भूरी प्रशंसा की गई। कोरोना का खतरा कम होने के बाद लोगों को इस बात का एहसास हुआ कि शंकर लालवानी ने अपनी दूरदर्शिता से हजारों लोगों की जिंदगियां बचाई और हजारों लोगों को इलाज उपलब्ध करवाकर मानवीयता का फर्ज निभाया।

कोरोना से निपटने के लिए शंकर लालवानी के प्रयास संसद से लेकर इन्दौर के अस्पतालों तक साफ नजर आए। संसद में उन्होंने सवाल पूछा कि कोरोना जैसी महामारी से निपटने के लिए सरकार योग, आयुर्वेद,

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

नेचरोपैथी और इलाज की अन्य पद्धतियों से जुड़े लोगों से किस तरह सहयोग ले रही हैं। केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्रीपद नाइक ने इसका जवाब दिया और बताया कि सरकार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों और जिला अस्पतालों में आयुष संबंधी सुविधाओं का विस्तार किया है।

प्रदेश के आयुष अस्पतालों और डिस्पेंसरियों में अपग्रेडेशन किया गया है। आयुष अस्पतालों को जरूरी दवाइयों की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है और आयुष अस्पताल में 50 बिस्तरों की इंटीग्रेटेड व्यवस्था भी की गई है। कोरोना से निपटने के लिए अवेयरनेस बढ़ाने के लिए भी कार्य किए गए है। अगर सरकार ने कोरोना से जूझने के लिए इस तरह के इंटीग्रेटेड सेवाओं पर ध्यान दिया, तो निश्चित ही इसका श्रेय हमारे सांसद शंकर लालवानी को जाता है।

सांसद शंकर लालवानी कि चिंता सिर्फ इन्दौर को लेकर नहीं थी, बल्कि कोरोना काल में पूरे देश में आए तरह–तरह के संकटों को लेकर भी थी। लोकसभा में उन्होंने वित्त मंत्री से पूछा की कोरोना काल में चीन से आ रहे कच्चे माल पर रोक लगाने संबंधी सरकारी फैसलों का अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा। सरकार उन कदमों से किस तरह कोरोना का बचाव कर रही है।

शंकर लालवानी के सवाल के जवाब में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री ने सांसद को लिखित जवाब में उन सब व्यवस्थाओं की जानकारी दी कि सरकार चीन से आ रहे कच्चे माल को प्रतिबंधित करने के जो भी कदम उठा रही हैं, उससे अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में भी गंभीर है। सरकार के लिए अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण मुद्दा है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा है, लोगों का स्वास्थ्य। वित्त राज्य मंत्री ने संसद में दिए गए लिखित बयान में कहा कि सरकार ने कच्चे माल की आपूर्ति पर प्रतिबंध इसलिए लगाया है, क्योंकि पहले चीन में और फिर उसके बाद 100 से अधिक देशों में कोरोना वायरस कोविड–19 के प्रकोप की जानकारी असंख्य चैनलों के माध्यम से सरकार को मिल रही है।

व्यापार उत्पादन और सप्लाय चैन में रुकावट, मांग में गिरावट, पर्यटन और कारोबार संबंधी यात्राओं में कमी, निवेशकों के विश्वास में कमी और कार्यबल की बीमारी और मृत्यु के कारण स्वास्थ्य के प्रभाव को हुई उत्पादकता संबंधी हानि के माध्यम से मानव स्वास्थ्य तथा वैश्विक वृद्धि संभावना के प्रति एक बहुत बड़ा जोखिम है। केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों की मदद से प्रयत्न कर रही है कि वायरस के प्रकोप को कम किया जाए।

वित्त मंत्री ने दावा किया कि उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों और घरेलू उत्पादन के संकेतक बताते है कि अर्थव्यवस्था पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा है। कोविड–19 के प्रकोप के कारण वैश्विक रूप से तेल की कीमतों में गिरावट आने के कारण भारत की अर्थव्यवस्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री ने अपने जवाब में कहा कि कोरोना के नकारात्मक प्रभाव की संभावना खत्म करने के लिए सरकार निर्यात संवर्धन परिषदों और व्यापार निकाय में विशेषकर इलेक्ट्रानिकी और ऑटो मोबाइल क्षेत्रों के पास उपलब्ध माल की सुरक्षा और परिवहन के लिए इन एजेंसियों को विदेश में भारतीय मिशनों के संपर्क में रखा गया है। विदेश में जितने भी भारतीय मिशन है, उनको भी भारत के घरेलू उत्पादन की सहायता के लिए अपने–अपने देशों में उपलब्ध कच्चे माल की आपूर्ति के वैकल्पिक स्त्रोतों को तलाशने के लिए कहा गया है।

कोरोना के बारे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्र के नाम संबोधित करने के एक सप्ताह पहले ही शंकर लालवानी ने 15 फरवरी को जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, नगर निगम, रेल्वे, एयरपोर्ट सहित अन्य विभागों की महत्वपूर्ण बैठक ली थी और कहा था कि सभी अधिकारी कोरोना के खतरे से निपटने के लिए सावधान रहें, ताकि कोई बड़ी घटना न हो पाए।

अधिकारियों की बैठक के बाद सांसद को यह बात महत्वपूर्ण लगी कि कोरोना के खतरे से निपटने के लिए जन जागरूकता बहुत ही जरूरी है।

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

इसके लिए उन्होंने सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स से मिलकर जागरूकता अभियान शुरू किया और इस बात का महत्व बताया कि बगैर जनसहयोग के कोरोना की जंग जीतना आसान नहीं था।

कोरोना महामारी के फैलने के पहले से ही सांसद शंकर लालवानी ने 17 फरवरी 2020 को सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरूकता के साथ चुनौती से निपटने के लिए प्रेरित करना शुरू किया था। सोशल मीडिया के माध्यम से वे लोगों से अपील करते रहे कि मास्क का उपयोग जरूर करें। हाथ मिलाने के बजाय नमस्ते को प्राथमिकता दें। अपनी रोग–प्रतिरोधक क्षमता बनाये रखने की कोशिश करें। भीड़–भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें और बहुत जरूरी हो, तभी घर से बाहर निकलें।

18 मार्च 2020 को दिल्ली में शहरी विकास मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय एक संयुक्त बैठक में इन्दौर के सांसद शंकर लालवानी ने हिस्सा लिया। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे सावधानी बरतें। सोशल मीडिया पर वे लगातार सक्रिय बने रहें।

19 मार्च 2020 को शंकर लालवानी विदेश मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री और नागरिक उड्डयन मंत्री से दिल्ली में मिलें। उन्होंने मंत्रियों से अपील की कि जो भारतीय विदेश में फंसे हुए है, उन्हें वापस लाने की व्यवस्था की जाएं। उन्होंने रोम में फंसे भारतीय नागरिकों के हवाले से बताया कि इन यात्रियों में ज्यादातर विद्यार्थी है। इन सभी का चिकित्सा परीक्षण हो चुका है और ये सभी कोरोना नेगेटिव हैं। ऐसे में उन लोगों को भारत लाने की कोशिश होनी चाहिए। इसी के साथ स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन से मुलाकात के दौरान सांसद शंकर लालवानी ने इन्दौर में टेस्टिंग किट, मशीनों और स्वास्थ्य संबंधी अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की मांग की।

19 मार्च को इन्दौर में कोरोना के इलाज के लिए पुख्ता इंतजामों की पहल की। टीबी सेंटर को अपग्रेड करके उसे कोरोना अस्पतालों में बदलने की व्यवस्था की। यह वह दौर था, जब अमेरिका, इटली और स्पेन में कोरोना महामारी भीषण रूप ले रही थी।

कोरोना के संकट से बचने के लिए लोगों की भीड़ नियंत्रण में रहे और आवाजाही कम हो, इसके लिए अनेक ट्रेन निरस्त की गई। रतलाम मंडल में भी 8 ट्रेनें को रद्द कर दिया था। इन्दौर से उदयपुर, खजुराहो, वाराणसी तथा उज्जैन से वाराणसी जाने और आने वाली 8 ट्रेनें रद्द कर दी गई। प्रधानमंत्री द्वा रा जनता कर्फ्यू की अपील के पहले ही सांसद शंकर लालवानी ने नागरिकों से अपील की थी कि वे सावधान रहें और अनावश्यक यात्राओं से बचें। प्रधानमंत्री के आव्हान पर 22 मार्च को सांसद शंकर लालवानी ने कोरोना वारियर्स का उत्साहवर्धन किया।

प्रधानमंत्री की अपील पर उन्होंने सार्वजनिक रूप से ताली–थाली बजाकर कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे चिकित्सकों, चिकित्साकर्मियों, प्रशासनिक अधिकारियों और मीडियाकर्मियों के लिए सार्वजनिक रूप से सराहनीय की और यह बात भी कही कि ये लोग महामारी और जनता के बीच दीवार बनकर सामने आए। इन्दौर के लोगों की उत्सवप्रियता से शंकर लालवानी अच्छी तरह परिचित हैं। वे जानते थें कि इन्दौर के लोग जनता कर्फ्यू की कामयाबी का भी जश्न मनाने के लिए सड़कों पर आ सकते हैं। उन्होंने प्रशासन से अपील की कि सख्त से सख्त लॉकडाउन अपनाया जाए।

कोरोना काल में शंकर लालवानी का ध्यान केवल शहरों क्षेत्रों पर ही नहीं था, ग्रामीण क्षेत्र भी उनकी निगाह में थे। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि देपालपुर, राऊ, सांवेर क्षेत्र के लोगों और ग्रामीण इलाके में भी लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए। यह व्यवस्था रहे कि अति आवश्यक होने पर ही लोग अपने घरों से निकलें।

केन्द्र सरकार द्वारा कोरोना काल में लोगों को जो राहत प्रदान की गई थी, उसके प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शंकर लालवानी ने सोशल मीडिया के माध्यम से लगातार जानकारी दी। उन्होंने बताया कि टीडीएस में देरी से पेमेंट करने पर लगने वाले ब्याज को 12 प्रतिशत से घटाकर 9 प्रतिशत कर दिया गया है। इनकम टैक्स रिटर्न भरने की आखिरी तारीख भी

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

बढ़ाकर 30 जून कर दी गई है। विवाद होने की स्थिति में विश्वास स्कीम और आधार पैन लिंक की तारीख भी आगे बढ़ा दी गई तथा 5 करोड़ रुपये से कम टर्नओवर वाली कंपनियों को लेट जीएसटी फाइलिंग पर ब्याज, पैनल्टी और लेट फीस से मुक्त कर दिया गया है। सरकार ने आयातकों और निर्यातकों को भी कई राहत दी है। यह भी सरकार ने तय किया है कि 1 करोड़ से कम के कारोबार वाली कंपनियों के खिलाफ दिवालिया प्रक्रिया शुरू नहीं की जाएगी।

कोरोना काल में लॉकडाउन लगने के बाद सांसद शंकर लालवानी का संकल्प था कि लॉकडाउन में कोई भी व्यक्ति भूखे पेट नहीं सोएगा। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि अगर कोई व्यक्ति भोजन के लिए फोन करेगा, तो भोजन उसके घर पहुंचाया जाएगा। इसके लिए 2 टेलीफोन नंबर प्रचारित किए गए। 25 मार्च को इन्दौर में कोरोना के कारण मृत्यु की पहली खबर आई। सांसद ने लोगों से कहा कि ये इस लम्बी लड़ाई को लड़ने के लिए सावधान रहें।

सावधानी ही बचाव कर सकती है। 25 मार्च को ही सांसद शंकर लालवानी ने विभिन्न क्षेत्र के मजदूरों और जरूरतमंदों को भोजन पैकेट बांटने की सेवा शुरू की। ऐसे अनेक मौके आए, जब इन्दौर के लोगों ने कर्फ्यू के दौरान भीड़ लगाई और सांसद शंकर लालवानी के गुस्से का पात्र होना पड़ा। शंकर लालवानी ने उन लोगों के प्रति नाराजगी तो दिखाई, जो कोविड नियमों का पालन नहीं कर रहे थे, लेकिन उन लोगों के प्रति आभार भी माना, जो इस महामारी के दौरान सहयोग के रूख अपनाए हुए थे। सांसद की पहल के कारण ही शहर में कोरोना के प्रति जागरूकता का विस्तार हुआ और लोगों ने दो गज की दूरी तथा मास्क है जरूरी के नियमों का पालन किया।

26 मार्च को सांसद शंकर लालवानी ने पीपीई किट खरीदने के लिए जिला प्रशासन को सांसद निधि से 10 लाख रुपये दिए और अपील की कि संसाधन जुटाने के लिए और लोग भी सामने आए। 27 मार्च 2020 को जिला प्रशासन ने कोरोना से निपटने के लिए गोकुलदास और विशेष जुपिटर अस्पताल का अधिग्रहण कर लिया। ये अस्पताल सिर्फ कोरोना मरीजों के लिए ही थे। इसलिए यहां कोरोना के मरीजों को असुविधा का सामना कम करना पड़ा।

इन्दौर की हालत सुधारने के लिए सांसद शंकर लालवानी लगातार सक्रिय बने रहे। वे जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की बैठक लगातार लेते रहे। 28 मार्च की बैठक में भी उन्होंने कोरोना के खतरे के बारे में आगाह किया और इन्दौर में कड़े कदम उठाने की वकालत की। विभिन्न क्षेत्रों के मजदूरों और जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की तरफ भी उनका पूरा ध्यान था। इसीलिए अलग–अलग क्षेत्रों में भोजन पैकेट बांटने की व्यवस्था की गई। उन्होंने कोरोना से निपटने के लिए चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टॉफ के कार्यों की सराहनाह की और यह कहा कि ये लोग संकट की घड़ी में भी लोगों की मदद के लिए आगे आए, जो एक स्तुत्य कार्य है।

शंकर लालवानी की अपील पर इन्दौर के कई कारोबारियों ने अपने अस्पताल, मैरिज गार्डन, होटल और बिल्डिंग प्रशासन को सौंप दी, ताकि कोरोना से निपटने के लिए लोगों का इलाज हो सकें या लोगों को क्वारेंटाइन रखा जा सकें। टीसीएल, प्रेसीडेंट पार्क, किंग्स पार्क गार्डन, मथुरा महल गार्डन, गोकुल गार्डन, दस्तूर गार्डन, अक्षत गार्डन, तारा कुंज, मृदंग गार्डन, उत्सव रिसोर्ट, स्वास्तिक रिसोर्ट, ला ओमेनी होटल, इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ राऊ, बख्तावर राम नगर छात्रावास और श्रीफाल धनगर धर्मशाला आदि प्रशासन को सौंप दिए गए। सांसद न केवल इन्दौर में कोरोना से निपटने के लिए मुख्य समन्वयक की भूमिका निभा रहे थे, बल्कि केन्द्र सरकार की नीतियों और योजनाओं को जनता के बीच ले जा रहे थे।

1 अप्रैल 2020 को सांसद शंकर लालवानी ने इन्दौर में बड़े स्तर पर भोजन सेवा शुरू की। 20 से अधिक भोजन शालाएं शुरू की गई। 13 हजार फ्री पैकेट्स तैयार करके लोगों को नि:शुल्क उपलब्ध करवाए गए। उनका संकल्प था कि कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान कोई भी व्यक्ति भूखा

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

न सोए।

कोरोना की महामारी से जूझने के लिए और इलाज के लिए उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपनी ट्रेवल हिस्ट्री छुपाए नहीं। अगर लोगों ने अपनी ट्रेवल हिस्ट्री छुपाई और वे कोरोना पॉजिटिव पाए गए, तो इसका असर दूसरों की सेहत पर भी पड़ सकता है। उन्हीं की अपील पर प्रशासन ने कोरोना से लड़ाई लड़ने के लिए अस्पतालों को 3 कैटेगरी में बांट दिया गया। रेड, आंरेज और ग्रीन कैटेगरी में बांटे गए इन अस्पतालों में रेड झोन अस्पताल वे बनें, जहां कोरोना के पॉजिटिव मरीजों का इलाज किया गया। यह अस्पाताल थे – मनोरमा राजे टीबी अस्पताल, चेस्ट सेंटर एमवाय अस्पताल, एमटीएच अल्पताल और अरविन्दों इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस।

आंरेज झोन वाले अस्पताल वह थे, जहां कोरोना के लक्षण पाए जाने पर संभावित मरीजों को रखा गया था – ये थे प्रशांती अस्पताल महू, गोकुलदास अस्पताल, मयूर अस्पताल, सुयष अस्पताल, इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, अरिहंत अस्पताल, सिनर्जी और विशेष जुपिटर अस्पताल। इसके अलावा सबसे ज्यादा ग्रीन झोन में वे अस्पताल थे, जहां कोरोना के मरीजों का इलाज तो हो ही रहा था, अन्य मरीजों का भी इलाज चल रहा था। इनमें महू का मिलिट्री अस्पताल, एमवाय अस्पताल, सीएचएल, भंडारी अस्पताल, अपोलो अस्पताल, लाइफकेयर अस्पताल, ग्लोबल एसएनजी अस्पताल, चोइथराम अस्पताल, ग्रेटर अस्पताल, गुर्जर अस्पताल, बांबे हॉस्पिटल, ऐपल अस्पताल, क्योरवेल, सिटी नर्सिंग होम, यूनिक सुपर स्पेशिलिटी सेंटर, लाहोटी मेडिकेयर, गीता भवन अस्पताल, क्लॉथ मार्केट अस्पताल और ग्लोबल अस्पताल। कैटेगरी में बंटे होने के कारण शुरूआती तौर पर संक्रमण रोकने में मदद मिली।

कोरोना संकट की घड़ी में इन्दौर में सब कुछ सकारात्मक नहीं चल रहा था। शहर में कोरोना योद्धाओं पर हमले की वारदात भी हुई। इससे कोरोना योद्धाओं में गुस्सा फैल गया। सांसद शंकर लालवानी ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से बातचीत की और अनुरोध किया कि कोरोना योद्धाओं पर हमला करने वालों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करें। सांसद ने स्पष्ट किया कि डॉक्टरों, पुलिसकर्मियों, सफाई कर्मचारियों और अन्य सेवा कार्य में लगे लोगों पर हमले किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे। जनप्रतिनिधि के इस तरह के रवैये के बाद प्रशासन ने दोषियों के खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई की। पहली बार ऐसे 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

सांसद शंकर लालवानी को कोरोना काल में ग्रामीण क्षेत्रों की भी बहुत चिंता थी। इसके लिए उन्होंने केवल प्रशासन पर निर्भर रहना उचित नहीं समझा और भारतीय जनता पार्टी के ग्रामीण क्षेत्र के नेताओं से भी संपर्क किया और उनकी मुलाकातें प्रशासनिक अधिकारियों से की। अगर ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना का खतरा कम हुआ, तो इसका श्रेय भी सांसद शंकर लालवानी की पहल को दिया जा सकता है। जब भी वे प्रशासनिक अधिकारियों से कोई बैठक करते, तो उनकी सबसे बड़ी चिंता संक्रमण को रोकने और लोगों को भोजन की व्यवस्था करने पर रहती थीं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अपील पर उन्होंने 5 अप्रैल 2020 को दीपक जलाकर जनता की भागीदारी तय करने में मदद की। बार–बार इस बात को रेखांकित किया कि कोविड के अंधेरे के बीच लोगों का विश्वास ही उम्मीदों का दीपक है। इन्दौर में कुछ अस्पतालों में डॉक्टरों ने जब कोरोना के मरीजों को भर्ती करने से इनकार किया, तब उन्हें शंकर का रौद्र रूप भी देखने को मिला।

वे लगातार प्रशासनिक अधिकारियों, खासकर कलेक्टर के संपर्क में रहे। पूर्व सांसद और लोकसभा की अध्यक्ष रहीं सुमित्रा महाजन से भी उनकी लगातार चर्चाएं होती रहीं। प्राइवेट अस्पतालों में डॉक्टरों की अनुपस्थितियों पर भी उनका रूख स्पष्ट रहा और वे खुद इसकी पहल करने लगे। उन्होंने प्राइवेट अस्पतालों में भी डॉक्टरों को मास्क और पीपीई किट

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

उपलब्ध करवाने, ऑक्सीजन की व्यवस्था करने आदि की पहल की। मुख्यमंत्री से चर्चा कर सांसद शंकर लालवानी ने इन्दौर में अधिकारियों की कमी का हवाला दिया।

सांसद शंकर लालवानी की पहल पर मुख्यमंत्री ने इन्दौर में दो आईएएस सहित 13 अधिकारियों को इन्दौर में तत्काल प्रभाव से पदस्थ किया। प्रशासनिक हमले और चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों से संपर्क के साथ ही शंकर लालवानी लगातार लोगों को जागरूक करते रहे। उन्होंने घर में फेस मास्क बनाने की जानकारी देने वाली वेबसाइट को प्रचारित किया और उन लोगों को भी जागरूक करने की कोशिश की, जो फेस मास्क सही तरीके से नहीं लगाते।

सांसद शंकर लालवानी ने यह बात महसूस की कि गरीब वर्ग के लोगों को कोरोना काल में अस्पताल पहुंचने में असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने आम जनता से अपील की कि अगर आपके पास कोई ऐसी गाड़ी हो, जिसका उपयोग एंबुलेंस के रूप में किया जा सकता हो या कोई ऐसा वाहन हो, तो मुझसे तत्काल संपर्क करें। उन्होंने उन लोगों की भी सेवाएं प्राप्त की, जिन्हें गाड़ी चलाने का अनुभव होता है। सांसद की अपील पर कई लोगों ने अपनी निजी गाड़ियों को एंबुलेंस के रूप में उपयोग करने के लिए दी। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से भी वे लगातार संपर्क में रहें और उनसे मार्गदर्शन लेते रहें।

कोरोना काल में जितनी बड़ी चुनौती विदेश में फंसे भारतीयों को लाने की थी, उतनी ही बड़ी चुनौती भारत में फंसे विदेशियों को उनके घर पहुंचाने की भी थी। इन्दौर के पास योग आश्रम में कई विदेशी महिलाएं लॉकडाउन में फंस गई थीं। इन महिलाओं को उनके देश पहुंचाने के लिए सांसद ने मुख्यमंत्री कार्यालय और विदेश मंत्रालय से चर्चा की और उनके लिए आवश्यक पास जारी करवाए।

13 अप्रैल 2020 को इन्दौर में शंकर लालवानी के प्रयत्नों से अभिनव प्रयोग शुरु हुआ। किराना दुकानदारों ने ऑनलाइन ऑर्डर लेकर सामान घरों पर उपलब्ध कराने की पहल शुरु की। इससे लोगों को अपने घर से निकलने की जरूरत खत्म हो गई और वे घर बैठे किराना सामान मंगवाने में सफल हुए। इससे लोगों की जरूरतें पूरी हुई और किराना व्यापारियों का भी कामकाज चल निकला।

जब कोरोना अपने विकट रूप में था, तब कोविड–19 की जांच के लिए बड़ी संख्या में सैम्पल लिए जाने लगे। उन सभी सैम्पल की जांच की व्यवस्ता इन्दौर में उपलब्ध नहीं थी। ऐसे में सांसद ने क्षमता से अधिक लिए जाने वाले सैम्पल्स को विमान से दिल्ली भिजवाने की व्यवस्था शुरु की। इन्दौर में कोरोना के सैम्पल की जांच के लिए दो नई लेबोरेटरी भी खोली गई। इन सब कोशिशों में शहर में पीड़ितों के लिए मरहम का काम किया।

कोरोना से पीड़ित सभी मरीजों को न बचा पाने की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं भी हुई। हालांकि प्रशासन और चिकित्साकर्मी इसके लिए पूरी तरह जुटे रहें। एक ऐसा दौर भी आया, जब कोरोना से दिवंगत हुए लोगों के अंतिम संस्कार के लिए शव वाहन आसानी से उपलब्ध नहीं हुए। सांसद ने फिर अपील की और लोगों से कहा कि वह अपने निजी वाहन को शव वाहन के रूप में सेवा देने में मदद करें। अनेक लोग आगे आए और जनसेवा की अनूठी मिसाल लोगों ने पेश की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 14 अप्रैल 2020 को लॉकडाउन बढ़ा दिया। अब 3 मई तक लॉकडाउन की अपील की गई थी, जिसे सांसद ने सोशल मीडिया के माध्यम से बहुप्रचारित किया और लोगों से अपील की कि प्रधानमंत्री के अनुरोध पर अपने घर के बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखें। सोशल डिस्टेंसिंग की लक्षण रेखा का पालन करें। इम्युनिटी बढ़ाने की तरफ भी ध्यान दें और कोरोना संक्रमण को फैलाओ से रोकें। इसके साथ ही गरीब परिवारों की मदद करें। उनके लिए भोजन की व्यवस्था करें। अपने व्यवसाय और उद्योग में काम कर रहे लोगों का सहयोग करें और कोरोना योद्धाओं का हौसला बढ़ायें। प्रधानमंत्री द्वारा प्रोत्साहित आरोग्य सेतु ऐप की जानकारी भी घर–घर पहुंचाने में मदद की गई।

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

कोरोना काल में फेक न्यूज एक गंभीर समस्या के रूप में उभरी। ऐसी खबरें लगातार प्रचारित होती रही, जिनमें सचाई का पुट नहीं था। यह अफवाह थी कि कोविड–19 से बचाव के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है। यह भी अफवाह फैलाई गई कि पालतू जानवरों से कोरोना संक्रमण फैलता है। यह भी अफवाहें रही कि मांसाहारी भोजन और संक्रमित व्यक्ति का शव भी संक्रमण फैलाने में मददगार होता है। इस तरह की तमाम अफवाहों के खिलाफ शंकर लालवानी ने प्रचार अभियान चलाया और बताया कि कोरोना से बचाव का टीका उपलब्ध हो रहा है। पालतू जानवरों, मृत देह या पके हुए मांसाहारी भोजन से भी किसी तरह का संक्रमण नहीं फैलता।

सांसद शंकर लालवानी को इस बात का पूरा एहतराम रहा कि लॉकडाउन के दौरान उच्च आय वर्ग के लोगों से ज्यादा परेशानी मध्यम आय वर्ग के लोगों को हो रही है। निम्न आय वर्ग के लोग तो अपनी जरूरतें बताने में पीछे नहीं रहते, लेकिन मध्यम वर्गीय लोगों के सामने यह चुनौती लगातार रहती है कि वे संकोची स्वभाव के होते हैं और अपनी जरूरतों के बारे में खुलकर नहीं बताते। उन्होंने मध्यम वर्ग के लोगों से भी अपील की कि वह आगे आए और बेझिझक अपनी आवश्यकताएं लोगों को बताए।

17 अप्रैल 2020 को शंकर लालवानी ने अधिकारियों की एक विशेष बैठक की। उन्हें इस बात का बहुत अफसोस था कि अस्पतालों को लेकर शिकायतें लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने अस्पतालों के लिए कंट्रोल रूम बनवाने की बात कहीं। साथ ही वरिष्ठ अधिकारियों को इलाज संबंधी शिकायतों पर कार्रवाई करने के लिए तैनात करवाया। ओला टैक्सी का उपयोग एम्बुलेंस के रूप में करने की भी व्यवस्था की। 18 अप्रैल 2020 को उन्हें इस बात की सूचना मिली की किसी परिवार में नवजात शिशु का जन्म हुआ है और उस परिवार की माली हालात अच्छी नहीं है, इससे शंकर लालवानी द्रवित हुए और स्वयं राशन लेकर उस परिवार के पास पहुंचे।

सांसद शंकर लालवानी का स्पष्ट मानना रहा कि बड़ी समस्याओं को छोटे–मोटे प्रयासों से नहीं निपटाया जा सका। अगर समस्या बड़ी हो तो उससे निपटाने के प्रयास भी बड़े होने चाहिए। अगर कोरोना इतने व्यापक रूप में फैल रहा है, तो लोगों की कोरोना जांच की व्यवस्था भी बड़ी होनी चाहिए। उनकी पहल पर ही इन्दौर के 22 लाख लोगों की स्क्रीमिंग करने के लिए 1600 टीमों का गठन किया गया। इस सबके बाद भी उनके निजी प्रयास कभी कम नहीं हुए। 19 अप्रैल को खाना बांटने के दौरान उन्हें सड़क पर एक युवक घायल अवस्था में मिला, तो वे उसे अपनी गाड़ी में लेकर अस्पताल पहुंच गए, ताकि उसकी जान बचाई जा सकें। वह युवक हरसिद्धि मंदिर के पास रेलिंग से टकरा गया था।

इन्दौर के सांसद शंकर लालवानी ने कोटा के कोचिंग संस्थानों में फंसे इन्दौर के विद्यार्थियों को वापस लाने के लिए अभियान चलाया। उन्होंने इन्दौरवासियों से अपील की कि वे अपने उन बच्चों के नाम और संपर्क नंबर शेयर करें, जो कोटा में फंसे हुए हैं। उन्हीं के प्रयासों से कोटा में फंसे हजारों विद्यार्थियों को इन्दौर और आसपास के क्षेत्रों में वापस बुलाने की व्यवस्था की गई। सांसद शंकर लालवानी ने गर्मी के बढ़ते मौसम में लोगों की हर छोटी बड़ी सुविधा का ध्यान रखा। जरूरत पड़ने पर उन्होंने गर्मी में नागरिकों की सुविधा के लिए बड़ी संख्या में मटके भी बांटे। कोटा से विद्यार्थी लौटने लगे थे और उन्होंने सांसद के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उन्हें डर था कि अगर वे कोटा में ही रहे, तो घर से दूर होने के कारण उन्हें कोविड के प्रभाव से बचाना मुश्किल होगा। इन्दौर में कोरोना की टेस्टिंग क्षमता बढ़ाने के लिए प्राइवेट लेबोरेटरीज को इजाजत दिलवाई। इसके पहले कोविड की जांच के लिए सैम्पल अन्य शहरों में भेजे जाते थे, इससे कोविड का मुकाबला करने में सुविधा हुई।

कोरोना की जंग में जीतने वाले लोगों को अस्पताल से डिस्चार्ज करने का काम भी शुरू हुआ। 24 अप्रैल 2020 को इंडेक्स मेडिकल कॉलेज में कोरोना का इलाज करवाकर 26 लोग वापस अपने घर पहुंचे। सांसद ने अस्पताल पहुंचकर डॉक्टरों और चिकित्सा कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। सांसद शंकर लालवानी का प्रयास रहा कि जो लोग निम्न और मध्यम आय वर्ग के हैं, उन्हें कोरोना के इलाज की व्यवस्था मुफ्त में की जाए। इसके

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

लिए वे लगातार मुख्यमंत्री से संपर्क करके अपील कर रहे थे।

लॉकडाउन में फंसे लोग अपने घरों में बेजार हो रहे थे। ऐसी खबरें आने लगी थी कि इन्दौर के बॉम्बे बाजार क्षेत्र में लोग कोरोना के बावजूद अपने घरों से निकल रहे हैं। इसके पहले भी बॉम्बे बाजार इलाके से अप्रिय खबरें आई थी। सांसद खुद वहां पहुंचे और लोगों से अपील की कि वे लॉकडाउन के नियमों का पालन करें, क्योंकि लॉकडाउन खुलने की संभावना बन रही थी।

लॉकडाउन खत्म करने के बारे में समाज के अनेक वर्गों से तरह–तरह के आग्रह आ रहे थे। सांसद ने इन्दौर के सभी प्रमुख व्यापारी संगठनों से बातचीत की और उनके सुझाव मांगे कि लॉकडाउन खोलने पर क्या–क्या समस्या हो सकती है? उन्होंने वेबिनार के जरिये भी लोगों से संपर्क किया और लोगों को लगातार जागरूक करते रहे कि कोरोना से बचाव ही कोरोना का उपाय है। वे लगातार सेल्फी विथ मास्क अभियान भी चलाते रहे। समाज का कोई वर्ग ऐसा नहीं बचा था, जिससे सहयोग और मार्गदर्शन लेने में शंकर लालवानी को संकोच रहा हो। 28 अप्रैल को वे जैन मुनि आचार्य विद्यासागर जी के दर्शन करने गए और उनसे आशीर्वाद मांगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी वे लगातार दौरा करते रहे। कोरोना के खतरे से बचने के लिए उन्हें पीपीई किट पहनकर सम्पर्क करना पड़ा। समाज के सभी वर्गों ने सांसद शंकर लालवानी की सक्रियता की चर्चा की। जब भी कोई संकट में फंसता तो सांसद से अपील करता। 29 अप्रैल 2020 को इन्दौर सहित मध्यप्रदेश के 73 रिटायर्ड सैनिक बंगलुरू में फंस गए थे। सांसद शंकर लालवानी ने उन्हें अपने–अपने घरों में पहुंचाने की व्यवस्था की। इसके अगले दिन 30 अप्रैल को ही उन्होंने भोपाल से आए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से मिलकर कोरोना से लड़ाई की समीक्षा की और रणनीतिज्ञ मुद्दों पर फैसले लिए।

कोरोना काल के कारण बंद हुए उद्योगों को वापस प्रारंभ कराना आसान बात नहीं थी। कर्मचारी अपने–अपने गृह नगरों में चले गए थे। कच्चा माल सुलभ होना भी आसान नहीं था और न ही उत्पादित माल का वितरण और बिक्री बहुत आसान थी। सांसद शंकर लालवानी ने एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज के पदाधिकारियों से लंबी और महत्वपूर्ण चर्चाएं की, जिसका नतीजा यह निकला कि अप्रैल के अंत में 2000 से ज्यादा कारोबारियों को उद्योग शुरू की अनुमति मिल गई। इससे बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार वापस मिल गया।

सांसद शंकर लालवानी लगातार जनप्रतिनिधियों और प्रशासन के अधिकारियों से बातचीत करते रहे, उन्हें आगाह करते रहे कि कोरोना का खतरा टला नहीं है। अगर जरूरत पड़ी तो लॉकडाउन की अवधि बढ़ाई जा सकती है। लोगों ने उनकी बातों को अच्छा प्रतिसाद दिया।

कोरोना काल की संकट की घड़ी में शंकर लालवानी समाज के उपेक्षित समझे जाने वाले गांधी नगर के कुष्ट रोग आश्रम में भी गए। वहां उन्होंने कुष्ट रोगियों को अनाज और सेनेटाइजर बांटा। वे लोगों से लगातार अपील करते रहे कि जहां तक हो सकें गुनगुना पानी ही पीये। प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा योग और प्राणायाम करें। इसके साथ ही भोजन में हल्दी, जीरा और लहसून जैसे मसालों का उपयोग करें, जिनसे रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो।

गर्मी की आहट पाते ही इन्दौर में पीने के पानी की आपूर्ति प्रभावित होने लगी थी। कुछ इलाकों में पानी की कमी के कारण लोगों को सड़कों पर आने का खतरा था। सांसद ने निगम आयुक्त से भेंट कर इन्दौर में पानी की आपूर्ति निरंतर होती रहे, यह व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सा के प्रैक्टिशनर और दवा निर्माताओं से मुलाकात कर चर्चा की कि कोरोना से लड़ाई में आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। वे जिला प्रशासन के अधिकारियों से मिले और धीरे–धीरे इस सेक्टर को खोलने के लिए भी माहौल बनाया। उन्होंने कहा कि पूरी सावधानी के साथ कारोबार शुरू किया जाना चाहिए।

मई की शुरुआत आते–आते लग्न सरा का दौर आने लगा था। कई

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

शादियां बहुत पहले से ही तय हो चुकी थी, उस वक्त किसी को अंदाज नहीं था कि कोरोना जैसी महामाही भी आएगी और लॉकडाउन का सामना करना पड़ेगा। कोरोना से जूझते हुए जीवन को सामान्य गति से चलाने के प्रयास शुरू किए गए। सीमित संख्या में अतिथियों के साथ विवाह समारोह शुरू हुए, जिनमें कोरोना प्रोटोकॉल का पूरी तरह पालन किया गया। सांसद शंकर लालवानी खुद कुछ विवाह समारोहों में शामिल हुए और यह संदेश दिया कि महामारी के दौर में भी जीवन को सामान्य गति से चलाने के प्रयास जारी रहने चाहिए। वे समय–समय पर मुख्यमंत्री, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा से भी लगातार मिलते रहे और उन्हें हालात के बारे में जानकारी देने के साथ ही विमर्श करते रहे।

इन्दौर के कई लोग विदेश में अब भी फंसे हुए थे। जब सरकार ने वंदे मातरम मिशन शुरू किया, तब सांसद शंकर लालवानी ने विदेश में फंसे अपने क्षेत्र के लोगों से संपर्क करके कहा कि तुम्हें वंदे मातरम मिशन के तहत भारत लाया जाएगा, वे तुरंत अपने देश के दूतावास से संपर्क करें।

इन्दौर के सांसद शंकर लालवानी सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों के संगठन से भी जुड़े है। वे एमएसएमई नेशनल बोर्ड के सदस्य हैं। उन्होंने एमएसएमई संगठन के सदस्यों से बात की और इस क्षेत्र के उद्योगों को शुरू करने की पहल भी की। उद्योगों और शिक्षा संस्थानों की शुरूआत होने के कारण इन्दौर में रुके सैकड़ों छात्रों और मजदूरों को अपने काम पर लौटने की जरूरत थी। लॉकडाउन के कारण उनका वहां लौटने आसान नहीं था। सांसद ने प्रशासन के अधिकारियों से चर्चा की और उन्हें निर्देशित किया कि इन्दौर से जाने और आने के लिए ई–पास बनाने की व्यवस्था शुरू की जाए। इसके लिए इंटरनेट पर एक वेबसाइट का लिंक भी शेयर किया गया। ई–पास बनाने के लिए किसी को भी सरकारी कार्यालयों में चक्कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ी। इस अभूतपूर्व पहल के कारण हजारों लोगों को अपने काम पर लौटने में मदद मिली।

सांसद शंकर लालवानी सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों से लगातार जुड़े रहे। वे समाज के विभिन्न वर्गों में कार्य कर रहे संगठनों के पदाधिकारियों से भी मिलते रहे। कभी यह मुलाकात भौतिक रूप से होती थी, तो कभी ऑनलाइन। उनकी सक्रियता पूरी दिन बनी रहती थी। आधी–आधी रात तक वे लोगों की समस्याएं सुलझाने के काम में जुटे रहते थे। इन्दौर कारोबारियों का एक प्रमुख केन्द्र हैं। यहां लोहा, सीमेंट और स्टील का कारोबार प्रमुखता से होता है। लॉकडाउन के कारण उनका माल बड़ी संख्या में गोदामों में ही अटक गया था। इस कारण उन्हें भारी आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ रहा है।

सांसद ने अधिकारियों से चर्चा करके इसका समाधान निकालने के लिए कहा और लोहा, सीमेंट तथा स्टील के कारोबारियों को अपना सामान गोदामों से बाहर निकालकर ग्राहकों तक भिजवाना आसान हुआ। आईटी क्षेत्र की कई कंपनियां भी लॉकडाउन में बंद हो गई थी। अनेक कंपनियों के कर्मचारी वर्क फ्रॉम होम कर रहे थे, लेकिन इन कंपनियों के दफ्तर खुलवाने की पहल भी शुरू की गई।

कोरोना काल में सांसद शंकर लालवानी ने धर्म और जाति को देखें बिना समाज के हर वर्ग की मदद की। उन्होंने समाज के आखिरी व्यक्ति तक की सेवा का अपना वृत कोरोना काल में निभाया। वे धार्मिक केन्द्रों पर भी गए। 8 मई 2020 को वे गिरजा घर पहुंचे और वहां ईसाई मतावलम्बियों से चर्चा की। समाज का कोई भी हिस्सा उनकी सेवा से वंचित नहीं रहा। यहां तक कि गर्मी बढ़ने पर उन्होंने कूलर और एसी के मैकेनिक, प्लम्बर और इलेक्ट्रिशियन्स आदि से भी संपर्क किया। सांसद की पहल पर कूलर व ऐसी मैकेनिक तथा प्लम्बर्स के टेलीफोन नंबरों की सूची सार्वजनिक की गई। उनसे संपर्क करके लोग अपनी जरूरत की पूर्ति कर सकते थे, जो एसी और कूलर काम नहीं कर रहे थे, उन्हें सुधारा जाने लगा। इससे लोगों की सुविधाएं तो बढ़ीं, इस वर्ग के कर्मियों का रोजगार भी वापस शुरू हुआ।

कोरोना काल में शिक्षा संस्थाएं बंद रहीं। अनेक शिक्षा संस्थाओं ने ऑनलाइन पढ़ाई को चुना। जब शिक्षा संस्थाओं ने अभिभावकों से फीस का

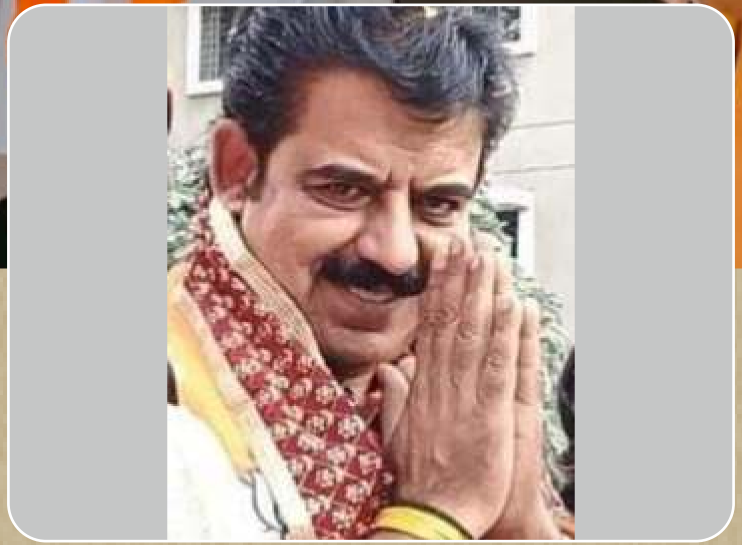

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

आग्रह किया, तब पेरेंट्स ने फीस देने में असहमति जताई। अनेक स्थानों पर विवाद की स्थिति पैदा हो गई। सांसद ने शिक्षा संस्थाओं और अभिभावकों के संगठनों से बात की और इसका समाधान निकालने की कोशिश की। छोटे और मंझोले उद्योगों को भी कोरोना काल में आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। सांसद की पहल पर ग्रीन झोन में सामान भेजने की अनुमति दी गई।

शहर के बाहर बड़े वाहनों के लिए वर्कशॉप के लिए भी अनुमति दी गई, ताकि बड़े वाहन जैसे एम्बुलेंस आदि और उद्योगों में काम आ रहे वाहनों को काम में लगाया जा सकें। अनेक कारोबार ऐसे थे, जिनमें लॉकडाउन के कारण बड़ी मात्रा में सामान बर्बाद होने का खतरा था। जैसे आइस्क्रीम के गोदामों में रखा माल। ऐसे कारोबारियों को नुकसान से बचाना एक प्रमुख जिम्मेदारी थी, जिसे सांसद ने निभाया और उनके माल को बर्बाद होने से रोका।

कोरोना काल में निजी अस्पतालों पर मनमानी के बहुत आरोप लगे। निर्धारित शुल्क से ज्यादा शुल्क लेने की बातें भी सामने आईं। सांसद की पहल पर यह व्यवस्था की गई कि कोई भी अस्पताल निर्धारित शुल्क से ज्यादा पैसे न ले पाएं। यह भी तय किया गया कि कोरोना के नेगेटिव और पॉजिटिव मरीजों की सूची जारी हो। जांच कराने वालों को मोबाइल पर ही यह सूचना दी जाने लगी कि जांच का रिजल्ट क्या है। 12 मई 2020 को अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर सांसद ने विभिन्न अस्पतालों में कार्य रही नर्सों का स्वागत किया, जिन्होंने विपरित स्थितियों में भी अपना दायित्व निभाया था और लोगों की मदद की थी। लॉकडाउन में फंसे लोगों को उनके घर पहुंचाने के लिए शंकर लालवानी ने रेल मंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखकर मांग की कि इन्दौर से हावड़ा और तिरुअनंतपुरम जाने वाली बंद गाड़ियों को तत्काल वापस शुरु किया जाए। ताकि इन्दौर में फंसे हजारों छात्र, मजदूर और अन्य पेशेवर कर्मचारी अपने–अपने घरों तक पहुंच सकें। सांसद की पहल रंग लाई और वे लोग अपने घरों तक पहुंच सकें।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कोरोना के लिए 20 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा कर चुके थे, जिसके लिए सांसद शंकर लालवानी ने उनका आभार माना। सांसद ने अपेक्षा व्यक्त की कि देश को जो संबल मिला है, उससे अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। प्रधानमंत्री ने वंदे भारत मिशन की घोषणा भी की थी, जिसके तहत कुवैत से यात्रियों का एक दल इन्दौर पहुंच चुका था। 13 मई को आई इस फ्लाइट में यात्रियों का स्वागत करने के लिए सांसद खुद एयरपोर्ट पहुंचे। इसी दिन उन्होंने रीवा और सतना के छात्रों, मजदूरों और आम यात्रियों के लिए विशेष ट्रेन को विदा किया। उन्हीं के प्रयासों से ये लोग अपने घर पहुंच पाए।

कोविड के चुनौतिपूर्ण दौर में उन्होंने दानदाताओं से अपील की कि वे एमजीएम अस्पताल की मदद करें। अनेक लोग मदद के लिए सामने आए और उन्होंने दवाइयों और उपकरणों से अस्पताल की मदद की। सांसद शंकर लालवानी ने 14 मई को एक विशेष बैठक आहूत की, जिसमें पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय और भाजपा के सभी प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित हुए। सांसद की अपील पर पूरी पार्टी कोरोना से जूझने के लिए एक साथ बैठ गई।

मई के दूसरे सप्ताह में श्रमिकों और कर्मचारियों का पलायन देशभर में जारी था। हजारों लोग अपने निजी संस्थानों से अपने–अपने घरों की ओर लौट रहे थे। कोई कार में, तो कोई रिक्शा में। किसी के पास साइकिल थी, तो ऐसे भी लोग थे, जो पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर दूर अपने घर की ओर जा रहे थे। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने उन लोगों की मदद की थी। ऐसे में सांसद शंकर लालवानी ने इन्दौर बायपास से गुजर रहे मजदूरों के लिए दवाइयों और भोजन की व्यवस्था की। कई मजदूर ऐसे थी, जो नंगे पैर ही अपने गांव जा रहे थे, उनके लिए जूते–चप्पलों की व्यवस्था भी की गई। अनेक मजदूरों को उन्होंने अपने हाथों से जूते–चप्पल पहनाए। प्रवासी मजदूरों की बच्चियों के साथ बैठकर बातचीत की और उन्हें भोजन करवाया।

मजदूरों को मास्क बांटे गए और बताया गया कि एक देश, एक राशन कार्ड और जन–धन खातों में पहुंचाई जा रही राशि का महत्व क्या है। इन्दौर

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

वैसे भी कभी सेवा में पीछे नहीं रहता। बायपास पर गुजर रहे यात्रियों की मदद भी भरपूर की गई। पेंशनरों को दी जाने वाली राशि वक्त पर मिल रही है या नहीं, इसके लिए उन्होंने स्टेट बैंक की शाखा में पहुंचकर औचक निरीक्षण किया और वहां की व्यवस्थाएं देखी। उन्होंने बैंकों को चरणबद्ध तरीके से खोलने के लिए जरूरी अध्ययन भी किए।

लॉकडाउन में जीवन बीमा निगम कार्यालय बंद होने से करीब 75 हजार ग्राहकों के 437 करोड़ रुपए के क्लैम अटक गए थे। सांसद ने एलआईसी के ऑफिस खुलवाए, ताकि लोगों को उनके क्लैम के पैसे मिल सकें।

कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई के बाद भी पेरेंट्स से पूरी फीस मांगे जाने पर विवाद चल रहा था। पेरेंट्स का कहना था कि जब स्कूल खुले ही नहीं, तब वे बस की फीस और लंच का शुल्क क्यों अदा करें? पेरेंट्स एसोसिएशन मांग कर रहा था कि कम से कम 3 महीने की फीस माफ हो। सांसद की पहल पर मुख्यमंत्री ने निजी स्कूल वालों को आदेश दिया कि वे केवल ट्यूशन फीस ही वसूल करें। स्कूलों के साथ ही डॉक्टरों के निजी क्लीनिक भी बंद का सामना कर रहे थे। सांसद की पहल पर जिला प्रशासन और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने कड़ी शर्तों के साथ निजी क्लीनिक खोलने की सहमति दी।

कोरोना काल में ग्रामीण इलाकों में खेतों खलहानों का काम जारी था। मई में गेहूं की नई फसल आ रही थी, लेकिन किसान उस फसल को बेच नहीं पा रहे थे। सांसद शंकर लालवानी ने 18 मई को जिले के अनेक गेहूं खरीदी केन्द्रों का दौरा किया। मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिखी और बताया कि किसानों की मांग क्या है। किसान चाहते थे कि गेहूं की खरीदी के लिए बारदान की व्यवस्था की जाए और खरीद की अवधि बढ़ाई जाए।

कोरोना के दौर में निर्माण गतिविधियां जारी थी। भवन निर्माण कार्य व्यापक तौर पर शुरू हो सकें, साथ ही मकानों की मरम्मत का कार्य भी प्रारंभ हो, जिससे दिहाड़ी मजदूरों को रोजगार उपलब्ध हो सके। इसी उद्देश्य से सांसद ने 19 मई को क्रेडाई के पदाधिकारियों के साथ मिलकर बैठक की और निर्माण तथा भवन मरम्मत कार्य वापस शुरू करने का आग्रह किया। सांसद शंकर लालवानी की अपील पर ही नागरिक उड्डयन मंत्री ने विमान सेवाएं शुरू करने पर विचार शुरू किया। आर्थिक गतिविधियों को व्यापक रूप से शुरू करने के लिए विमान सेवाएं बहुत जरूरी थी। सांसद की पहल का लाभ इन्दौर ही नहीं पूरे देश को हुआ।

डॉक्टरों द्वारा निजी क्लीनिक खोलने की पहल को आगे बढ़ाते हुए जिला प्रशासन ने 21 मई को इन्दौर के विशाल नेहरू स्टेडियम में 1000 से अधिक डॉक्टर्स को बुलवाया। उन्हें सुरक्षा संबंधी प्रक्रिया बताई गई और निजी क्लीनिक खोलने के लिए उत्साहित किया। इससे उन डॉक्टरों और नर्सों का तो काम प्रारंभ हुआ ही। लाखों लोगों को भी राहत महसूस हुई। सांसद ने हवाई सेवाएं शुरू करने के लिए जो पहल शुरू की थी, उसके बारे में नागरिक उड्डयन मंत्री ने फैसला लिया और 25 मई से हवाई सेवाएं फिर से शुरू करने की अनुमति दी। मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद, गोवा और बेंगलुरु रूट पर 22 मई से बुकिंग शुरू हुई और 25 मई से उड़ानें वापस शुरू हुई।

सांसद शंकर लालवानी इन्दौर में समाज के विभिन्न लोगों से मिलते रहे। उन्होंने पत्रकारों से भी लगातार बैठकें की और लॉकडाउन खत्म करने के बारे में इनकी सलाह मानी। इस फीडबैक को उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण बताया। जेल में बंद कैदियों और वहां के कर्मचारियों की तरफ भी सांसद का ध्यान गया और 27 मई को वे खुद जिला जेल गए, वहां की व्यवस्थाएं देखी और जेलकर्मियों को सेनेटाइजर, पीपीई किट और मास्क भेंट किए।

कोरोना काल में लॉकडाउन से जूझने की विभिन्न तैयारियां की ही जा रही थी। बीच-बीच में परेशानियां भी कम नहीं थी। 28 मई को किन्हीं कारणों वश केरल जाने वाली ट्रेन रद्द कर दी गई। इससे यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा और वे सांसद शंकर लालवानी से मदद की गुहार करने पहुंचे। सांसद ने उन लोगों की मदद की और जिन लोगों को जाने की बहुत ज्यादा जरूरत थी, उनके लिए बसों की व्यवस्था की गई,

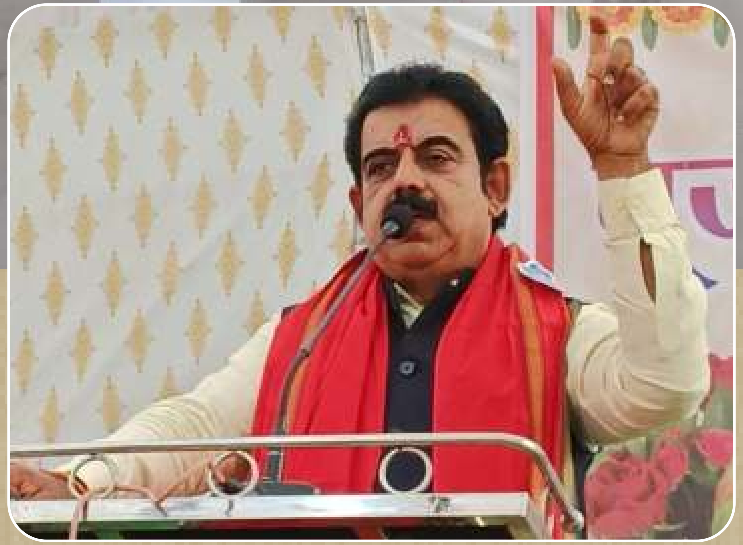

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

ताकि वे अपना काम कर सकें।

लॉकडाउन में कोल्ड स्टोरेज में रखे फलों के सड़ने की नौबत आ गई थी। एक तरफ तो कोल्ड स्टोरेज में बड़ी मात्रा में फल रखें थे और दूसरी तरफ लोगों को सीमित उपलब्धता के कारण महंगे फल खरीदना पड़ रहे थे। कोरोना काल में अधिकांश नागरिक पौष्टिक आहार और फल का सेवन करना चाहते थे। सांसद ने पहल की और कोल्ड स्टोरेज में रखे फलों को बाजार पहुंचाने की व्यवस्था की गई। कोल्ड स्टोरेज में ही रखे आलू और प्याज के स्टॉक को लोगों तक पहुंचाने के लिए आलू, प्याज की थोक मंडी को भी खुलवाया गया। न्यूज 18 चैनल द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में सांसद शंकर लालवानी ने कोरोना वारियर्स का सम्मान किया और उनकी हौसला अफजाई की। समय–समय पर वे नगर निगम के पदाधिकारियों के साथ बैठक करते रहे। वे निवर्तमान महापौर, सभापति और निवर्तमान पार्षदों से भी मिलते रहे।

कोरोना काल में लगे लॉकडाउन में छूट मिलने के बाद इन्दौर के जीएसआईटीएस कॉलेज में एक कंट्रोल रूम बनाया गया। इसका उद्देश्य यह था कि लॉकडाउन में छूट परिणाम कहीं महामारी फैलने में तो नहीं हो रहा। कोरोना पर नजर रखने के लिए बनाए गए इस कंट्रोल रूम में शंकर लालवानी पहुंचे और वहां की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। लॉकडाउन में छूट मिलने के बाद वे खुद शहर के दौरे पर निकले और जहां भी लोगों की भीड़ दिखाई दी वहां उनसे चर्चा करके लोगों को कोरोना प्रोटोकोल के बारे में समझाइश दी। जनता से सीधा संवाद करने का उनका तरीका लॉकडाउन के दौरान भी निरंतर जारी रहा।

इन्दौर में सुपर स्पेशीलिटी हॉस्पिटल निर्माण का कार्य जारी था। सांसद ने मुख्यमंत्री से चर्चा की और आग्रह किया कि इस महत्वपूर्ण अस्पताल का काम रिकार्ड समय में पूरा कराया जाए, ताकि नागरिकों को चिकित्सा की सुविधा बेहतर ढंग से मिल सकें। वे कोरोना योद्धाओं से और भारतीय जनता पार्टी से जुड़े युवाओं से लगातार संवाद करते रहे। यही उनकी खूबी रहीं। प्रधानमंत्री के आव्हान पर उन्होंने युवाओं के साथ मिलकर लोकल फॉर वोकल मंत्र को आगे बढ़ाने का काम किया और युवाओं के साथ शपथ ली कि वे स्थानीय उत्पादों का ही उपयोग करेंगे। कोरोना के दौर में ही प्रकृति ने विपदाएं भी भेजी। निसर्ग तूफान उसमें से एक था। सांसद ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपात बैठक बुलाई और सावधान रहने के लिए कहा। संयोग से निसर्ग तूफान से मध्यभारत क्षेत्र में बड़ी चुनौतियां सामने नहीं आई।

विश्व पर्यावरण दिवस पर सांसद बुजुर्गों के बीच पहुंचे और उन्हें तुलसी के पौधे तथा मास्क बांटे। उन्होंने सभी वृद्धाश्रम और अनाथालयों में फोन किए और उनकी जरूरतों की जानकारी ली। उन्होंने कोरोना से निपटने के लिए कर्म और प्रार्थना का मार्ग चुना। निजी क्षेत्र की दवा बनाने वाली कंपनी का दौरा करके उन्होंने दवा निर्माण के बारे में जानकारी ली और रक्त दान से कतरा रहे लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित किया। जो संस्थाएं और व्यक्ति रक्तदान के पवित्र कार्य में सहयोग कर रहे हैं, सांसद ने उनके बीच जाकर उनका हौसला बढ़ाया।

सांसद की पहल पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान इन्दौर आए और उन्होंने सांसद के साथ सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल का दौरा किया। मुख्यमंत्री ने उन्हें आश्वस्त किया कि इस नए अस्पताल का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा कर दिया जाएगा। कोरोना काल में समन्वयक की भूमिका निभाने वाले शंकर लालवानी मुख्यमंत्री से तो हालात पर चर्चा करते ही रहें, विभिन्न जनप्रतिनिधि भी लगातार उनके संपर्क में थे।

भारत में धर्म प्राण लोगों को सेनेटाइजेशन के लिए अल्कोहल युक्त सेनेटाइजर का उपयोग करने में आपत्ति थी, इसलिए सांसद ने अल्कोहल फ्री सेनेटाइजर की जरूरत बताई। उन्हीं की पहल पर राजवाड़ा क्षेत्र के महालक्ष्मी मंदिर और श्री बांके बिहारी मंदिर में अल्कोहल फ्री सेनेटाइजर का उपयोग किया जाने लगा। लॉकडाउन के बाद 12वीं की परीक्षा शुरू हुई, तो सांसद स्कूल पहुंचे और परीक्षा की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

उन्होंने बच्चों से बातचीत की और उनका हौसला बढ़ाया। वे बार–बार इन्दौर के लोगों को चेताते रहे कि लॉकडाउन हटा, तो लोगों को मास्क और सेनेटाइजर की जरूरत ज्यादा है।

लॉकडाउन खुलने का मतलब यह नहीं कि कोरोना का संकट पूरी तरह से खत्म हो गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्म निर्भर निधि योजना शुरू की। सांसद ने निगम आयुक्त के साथ ठेलों पर सामान बेचने वालों के लिए चलाई जा रही इस योजना के पंजीयन केन्द्र का निरीक्षण किया। वे स्ट्रीट वेंडर्स से मिले और उनकी समस्याओं को हल करने में मदद की। उनकी पहल पर इंदौर के सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल का काम तेजी से चल रहा था। वे लगातार वहां निरीक्षण करते रहे, जिस कारण इस अस्पताल का सम्पूर्ण कार्य जल्दी पूर्ण हो सका और मरीजों की सेवाओं में यह अस्पताल उपयोगी साबित हुआ।

सांसद श्वेताम्बर जैन समाज, नमो नमो शंकरा संस्था और अन्य कई संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा आयोजित समारोहों में गए और कोरोना योद्धाओं का सम्मान और उत्साहवर्धन किया। अनलॉक होने के बाद पैदा हुए हालात का जायजा लेने के लिए वे निरंतर कंट्रोल रूम भी गए। होम आइसोलेशन में रह रहे मरीजों से वे कंट्रोल रूम पहुंचकर बातें करते थे। उन्हीं की पहल पर फल मंडी शुरू हुई, क्योंकि इम्युनिटी के लिए फल बेहद जरूरी है। कोरोना के नियमों का पालन करते हुए व्यापारियों से अपील की गई कि वे थोक फल मंडी के संचालन में नियम कायदों से छेड़छाड़ कभी न करें।

लॉकडाउन में सभी जगह बंद की स्थिति ती। धर्मस्थलों को खोले जाने पर कोरोना फैलने का डर ज्यादा था, क्योंकि वहां बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होते है। यह आशंका थी कि धार्मिक स्थलों पर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई, तो कोरोना के फैलने की आशंका ज्यादा है। मंदिरों और अन्य पूजा स्थलों को खोलने में कोरोना का खतरा भांपते हुए ही धर्मस्थल खोलने पर विचार किया गया। लॉकडाउन में बंद सैलून और ब्यूटी पार्लर आदि खोलने के लिए भी अलग–अलग क्षेत्रों से मांग आ रही थी।

व्यापारिक संगठन भी ऐसी ही मांग कर रहे थे। ऐसे में सैलून और ब्यूटी पार्लर खोलने के लिए जिला प्रशासन ने एक कमेटी बनाई, उसके बाद फैसला किया गया कि सैलून और ब्यूटी पार्लर खोलने की प्रक्रिया क्या हो तथा सुरक्षा के क्या–क्या तरीके आजमाइए जाए। सांसद ट्रेंचिंग ग्राउंड में कचरा छांटने वाली महिलाओं के हालात से भी वाकिफ थे। वे खुद वहां जाकर उनसे मिले, उनके हाल जानें, उन्हें मास्क और सेनेटाइजर बांटे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर पूरी दुनिया में 20 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। कोरोना से जंग लड़ने में योग की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। इसलिए सांसद शंकर लालवानी ने स्वामी रामदेव से आग्रह कर इन्दौर में विशेष ऑनलाइन योग सत्र आयोजित करवाए। इसमें हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए।

24 जून को सांसद लालवानी ने इन्दौर एयरपोर्ट पर एक आधुनिक मशीन की व्यवस्था की, जो लोगों को शारीरिक दूरी नहीं रखने पर अलॉर्म बजाकर जागरूक करती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक पर बनी इस मशीन के उपयोग से एयरपोर्ट में आने वाले यात्रियों की सुरक्षा काफी तक तक सुनिश्चित हुई। वंदे भारत मिशन की उड़ानों से पूरी दुनिया में फंसे भारतीय लोगों को स्वदेश पहुंचाने की व्यवस्था की गई थी। इसी योजना के तहत दुबई और किर्गिस्तान से फंसे लोग जब इन्दौर पहुंचे, तब शंकर लालवानी उनकी अगवानी करने एयरपोर्ट पहुंचे।

इन्दौर के लोग न केवल खानपान के शौकीन हैं, बल्कि इन्दौर में व्यंजनों की देशभर में अलग ही पहचान है। इन्दौर में पोहे–जलेबी की तमाम दुकानें, चाय व नाश्ते की तमाम गुमटियों और छप्पन दुकान जैसे प्रतिष्ठित बाजार खोलने की मांग भी उठने लगी। सांसद शंकर लालवानी ने जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ ही इन दुकानदारों के संगठनों के प्रमुख को भी चर्चा के लिए बुलाया और प्रशासन को निर्देशित किया कि इन दुकानों को खोलने के लिए एसओपी तैयार की जाए। इसी प्रक्रिया के तहत ये दुकानें

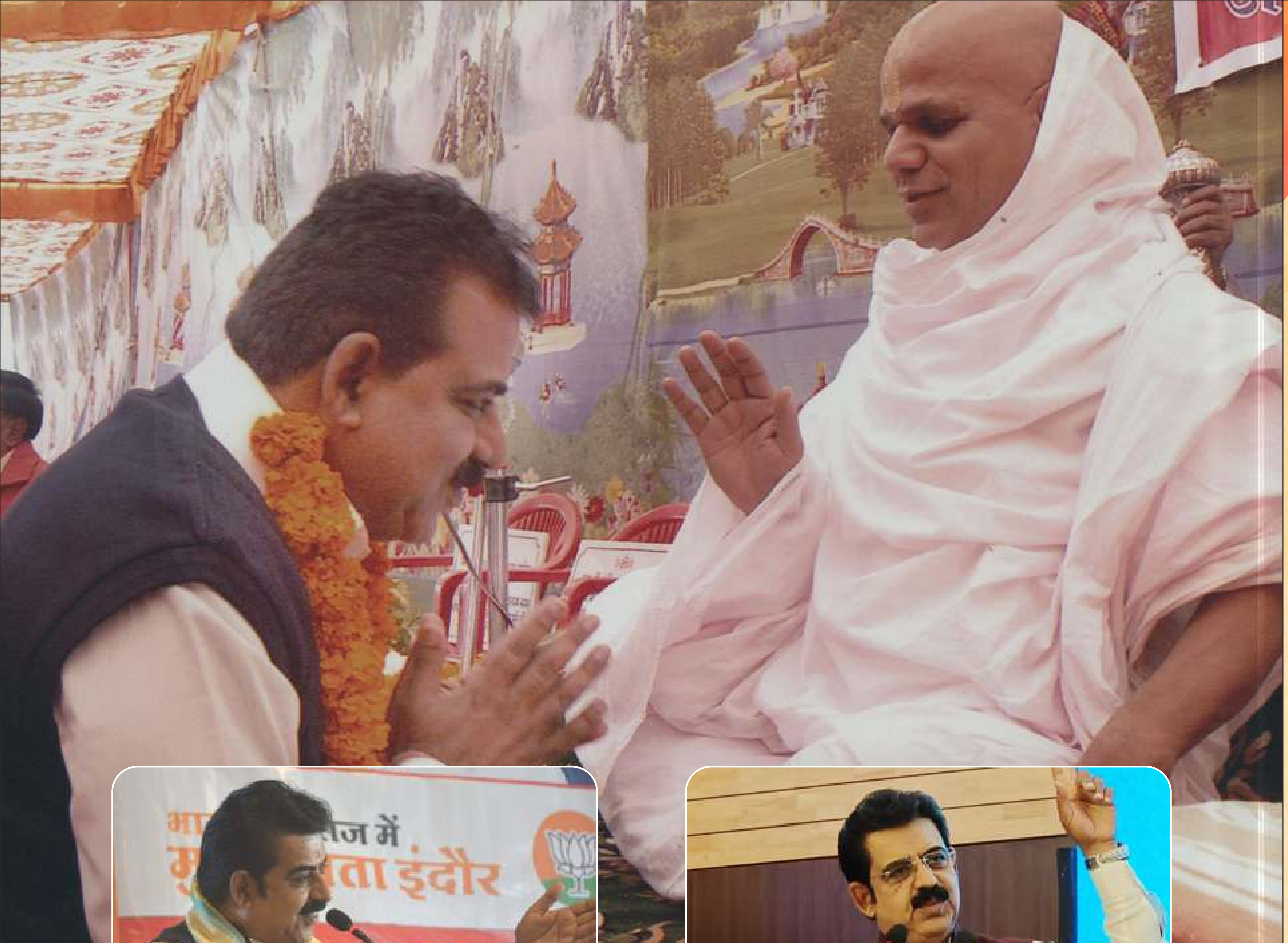

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

खोली जाए, ताकि लोगों की सुरक्षा के साथ कहीं भी कोई खिलवाड़ न हो।

खुले में फल और सब्जी बेचने वालों के लिए भी सांसद का ही संदेश था कि वे पूरी सावधानी और सुरक्षा के साथ ही अपना सामान बेचें। उन लोगों को वे निरंतर अपने पास से मास्क और सेनेटाइजर बांटते रहे हैं। उन्होंने इसकी महत्ता भी बताई कि जो लोग मास्क या सेनेटाइजर नहीं खरीद पा रहे है, उन्हें ये वस्तुएं नि:शुल्क उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

सांसद शंकर लालवानी ने कोरोना काल में समाज के हर वर्ग की चिंता की। किसानों की आय बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत आव्हान पर निर्यात प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। सांसद को पता चला कि पाकिस्तान में बसे सैकड़ों हिन्दू कोरोना में बुरी तरह फंस गए हैं और बाहर नहीं जा पा रहे हैं, तब सांसद शंकर लालवानी के प्रयासों से पाकिस्तान में बसे 450 हिन्दुओं को भारत वापस लाने का प्रयास सफल हुआ। कोरोना काल में शादी विवाह समारोह शुरू हुए, लेकिन सीमित अतिथियों के साथ। सांसद खुद अनेक समारोहों में शामिल हुए और कोरोना प्रोटोकोल का जायजा लिया।

इंदौर से मुंबई और दिल्ली रेल यातायात शुरू करने के लिए सांसद ने पहल की और और रेल मंत्री पीयूष गोयल से चर्चा की। उनके आग्रह को रेल मंत्री ने माना। इंदौर से मुंबई और दिल्ली की रेल सेवा शुरू होने की भूमिका बनीं। इंदौर के दूरस्थ इलाकों में फंसे आदिवासियों का हाल जानने के लिए सांसद ने उन गांव का दौरा भी किया। ये वे गांव थे, जहां सड़कें भी नहीं है। सांसद ने वहां दौरे के लिए मोटर साइकिलों का उपयोग किया।

सांसद शंकर लालवानी ने कोरोना काल में न केवल आम लोगों की मदद की, बल्कि पशुओं की भी चिंता की। उन्हें जब ये पता चला कि कोरोना के कारण गौशालाओं के संचालन में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, तो वे खुद गौशालाओं का दौरा करने गए। होम आइसोलेशन में रहने वाले लोगों का हालचाल जानने के लिए वे कोरोना कंट्रोल रूम में जाकर अधिकारियों और मरीजों से भी बातचीत करते रहे। 1 जुलाई को इंटरनेशनल डॉक्टर्स डे पर उन्होंने डॉक्टरों के सम्मान समारोह में शिरकत की और कहा कि डॉक्टर ही समाज के असली हीरो हैं।

वर्ल्ड सीए डे पर सांसद शंकर लालवानी ने चार्टर्ड अकाउंटेंट्स से मुलाकात की और उनसे मदद मांगी कि प्रधानमंत्री जी द्वारा 20 लाख करोड़ का जो पैकेज घोषित किया गया है, उसकी जानकारियां आम लोगों तक पहुंचाने में सहयोग करें। डॉक्टर्स और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के अलावा सांसद शंकर लालवानी सड़क पर कारोबार करने वाले छोटे दुकानदारों से भी मिले और उन्हें प्रधानमंत्री की योजनाओं की जानकारी दी।

कोरोना के कारण बेरोजगार हो चुकी कई महिलाओं ने मास्क बनाने का काम शुरू किया था। सांसद उन महिलाओं से मिले और उन्हें भरोसा दिलाया कि सरकार उनकी पूरी सहायता करेगी। उन्होंने एनजीओ के जरिये महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का आश्वासन भी दिया। वे निराश्रित महिलाओं के आश्रम भी पहुंचे और उनकी मदद का आश्वासन दिया।

सांसद शंकर लालवानी के प्रयासों से इंदौर के एमजीएम मेडिकल कॉलेज की मार्च में टेस्टिंग क्षमता 40 टेस्ट प्रतिदिन की थी, जिसे बढ़ाकर जुलाई में 2000 टेस्ट प्रतिदिन कर दिया गया। इसी बीच महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज की डीन ने सांसद से चिकित्सा में काम आने वाली एक मशीन की मांग की, तो सांसद ने किसी दानदाता की मदद से दो दिन में ही यह मशीन उपलब्ध करा दी।

कोरोना के संकट से निपटने के लिए एनजीओ ने बड़ी भूमिका निभाई। एनजीओ के कार्यकर्ताओं का सम्मान करने के लिए सांसद शंकर लालवानी 5 जुलाई 2020 को सक्षम संस्था के कार्यक्रम में पहुंचे और सामाजिक संगठनों की भूमिका पर चर्चा कर उनकी हौसला अफजाई की। सांसद ने इंदौर एयरपोर्ट का दौरा किया और इंटरनेशनल कार्गो सेवा शुरू करने के प्रयासों के बारे में बताया, ताकि किसानों की आय और कारोबार की संभावनाएं बढ़ें। इंटरनेशनल कार्गो सेवा शुरू करने के बारे में उनके निर्देशों के कारण काम में तेजी आई।

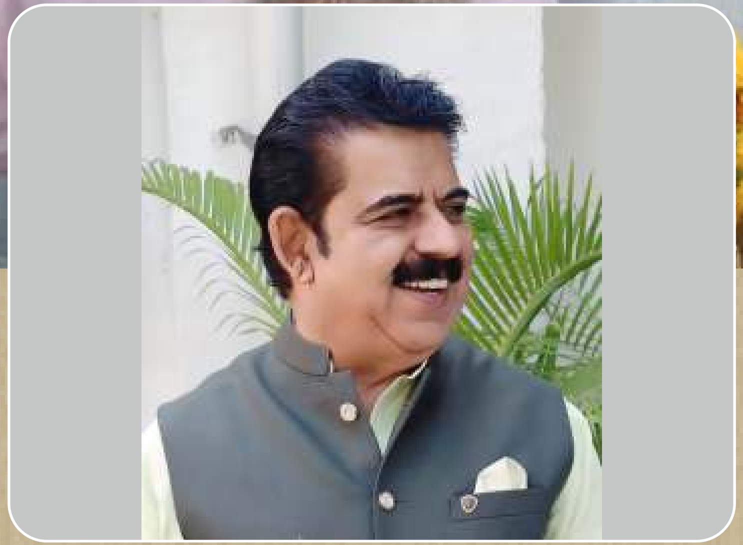

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

पर्यावरण की रक्षा के लिए भी लॉकडाउन समय में अनेक प्रयास किए गए। 5 जुलाई को सांसद शंकर लालवानी ट्रेंचिंग ग्राउंड स्थित कचरा निपटान केन्द्र पहुंचे और वहां धरती बचाने के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न किया। 6 जुलाई को जिला प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की बैठक में लॉकडाउन के दौरान बंद किए गए धार्मिक स्थान खोलने की सहमति बनीं। सांसद ने लोगों को याद दिलाया कि जनसहयोग के कारण ही लॉकडाउन सफल रहा है, लेकिन हमें आगे भी सावधानियां बरतनी है। मंदिर में जाकर उन्होंने लॉकडाउन के बाद की स्थिति का जायजा लिया।

कोरोना के बाद अनलॉक की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। अनलॉक के दौरान कोई गंभीर बात न हों और महामारी का प्रकोप कहीं बढ़ने न लग जाएं, इसके लिए सांसद शंकर लालवानी ने हालात पर निगाह रखने के लिए बार–बार समीक्षा बैठकें की। उन्होंने लोगों को चेताया कि शहर भले ही अनलॉक हुआ हो, लेकिन कोरोना का खतरा अभी खत्म नहीं हुआ है। अनलॉकिंग के दौरान आने वाली चुनौतियों के बारे में उन्होंने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और प्रतिष्ठित डॉक्टरों से मुलाकात की और आगे की रणनीति पर चर्चा की।

प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के अभियान को आगे बढ़ाते हुए सांसद शंकर लालवानी ने 10 जुलाई को स्वदेशी राखी की प्रशिक्षण शाला का शुभारंभ किया। सांसद ने अपनी ओर से अनेक महिलाओं को राखी बनाने के लिए सामान उपलब्ध कराया और कहा कि इन राखियों की बिक्री से जो भी आमदनी होगी, उसे महिलाएं स्वयं अपने पास ही रखें।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा के साथ उन्होंने संवाद में हिस्सा लिया और उन्हें जानकारी दी कि मध्यप्रदेश और इंदौर में कोरोना काल से निपटने के लिए किस तरह की रणनीति बनाई गई और उस पर अमल किया गया। स्वदेशी अभियान के तहत उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं, स्वदेशी जागरूक मंच और आरएसएस से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ सांसद राखी कार्यक्रम में हिस्सा लिया। वे नागरिकों को बार–बार चेतावनी देते रहे कि यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि दोबारा लॉकडाउन नहीं लगाना पड़े। लोगों की सुरक्षा के लिए उन्होंने अधिकारियों और डॉक्टरों के साथ आपात बैठक कीं और संदेश दिया कि शहर की बेहतरी के लिए अलोकप्रिय फैसले लेने से भी नहीं चूंके।

कोरोना वारियर्स का सम्मान करने के कार्यक्रम नियमित रूप से होते रहें, क्योंकि कोरोना की लड़ाई इन योद्धाओं के बिना संभव नहीं थी। इसके साथ ही आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत स्वदेशी सांसद राखी निर्माण की प्रशिक्षण शाला राऊ और अन्य ग्रामीण इलाकों में भी संपन्न कराई गई। दुकानदारों से वे अनुरोध करते रहे कि वे खुद मास्क पहनें। अपने स्टॉफ को भी मास्क पहनाएं और ग्राहकों से भी मास्क और शारीरिक दूरी का आग्रह करें। राऊ के बाद उन्होंने सांवेर में भी केन्द्र और राज्य सरकार की जानकारी ग्रामीण लोगों को दी। ग्रामीणों से वे सीधे–सीधे संपर्क में रहे।

इंटरनेशनल कार्गो सेवा फिर से शुरू करने की पहल वे कर चुके थे, लेकिन कार्गो सेवा शुरू नहीं हुई थी। 18 जुलाई को उन्होंने इंदौर एयरपोर्ट पर एयरपोर्ट और एयरलाइंस के अधिकारियों और व्यापारियों से बातचीत करके कार्गो सेवा के विस्तार पर बातचीत की। वे लगातार विभिन्न व्यापारिक संगठनों के साथ संपर्क में रहे। भौतिक रूप से संपर्क के अलावा ऑनलाइन संवाद भी होते रहे। लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष सुमित्रा महाजन के साथ उन्होंने भगवान शिव का अभिषेक किया और कर्म के साथ–साथ ईश्वर की कृपा पर भी भरोसा जताया।

23 जुलाई को दिल्ली में सांसद शंकर लालवानी केन्द्रीय रेल मंत्री से मिले और इंदौर को बेहतर रेल कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने के बारे में पहल की। इसके अगले ही दिन वे दिल्ली में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री से मिले और इंदौर में कोरोना टेस्ट क्षमता बढ़ाने तथा मशीनों और उपकरणों की मांग की, जिसे मंत्रीजी ने उचित बताया और इस दिशा में आदेश दिए। स्वास्थ्य मंत्री को होम आइसोलेशन और फीवर क्लीनिक के बारे में भी जानकारी दी।

24 जुलाई को इंदौर शहर में अनलॉक की प्रक्रिया तेज गति से शुरू

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

हुई। इंदौर के झोन-2 में सोमवार से शनिवार तक दुकानें खोलने पर सहमति बनीं। कोरोना से संबंधित सभी सावधानियों का पालन करते हुए कारोबार करने के अनुमति मिलने से लोगों ने राहत महसूस की।

'सांसद राखी' योजना के तहत महिलाओं द्वारा बनाई गई 21000 राखियां वीर सैनिकों की कलाई पर बांधने के लिए रवाना की गई। सांसद ने कहा कि देश के त्यौहारों को चीनी सामान से मुक्त कराना भी बहुत जरूरी है। चीन से बनी राखियां भाइयों की कलाई पर नहीं बांधनी चाहिए।

कोरोना काल में सांसद शंकर लालवानी समाज के सभी वर्गों से लगातार मिलते रहे। वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर सामाजिक संगठनों तक और एनजीओ से लेकर अनाथालय तक, जेल से लेकर कुष्ठ रोगियों के अस्पताल तक – कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा, जहां वे लोगों के संपर्क में नहीं आए हों। अभी तक वे खुद कोरोना से प्रभावित नहीं हुए थे, लेकिन 25 जुलाई को उन्हें पता चला कि उनके भाई और भाभी कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं, तो उन्होंने खुद को क्वारंटाइन कर दिया।

सोशल मीडिया पर दिए संदेश में उन्होंने कहा कि सभी परिवारजनों का रूटिन टेस्ट कराने पर मेरे परिवार के सदस्य कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं, इसलिए मैं खुद को क्वारंटाइन कर रहा हूं। जब तक मेरे कोरोना टेस्ट की रिपोर्ट नेगेटिव नहीं आ जाती, तब तक के लिए सभी सार्वजनिक कार्यक्रम कर रहा हूं। आपसे अनुरोध है कि आप भी पूरी सावधानी रखें। त्यौहारों के अवसर पर जब शहर में लॉकडाउन खोल दिया गया, तब सांसद ने लोगों से कहा कि अब हमें ज्यादा सावधान रहने की जरूरत हैं। महिलाओं द्वारा बनाई गई स्वदेशी राखियों को उन्होंने प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षा मंत्री और अन्य सांसदों को भी भेजा।

केन्द्र सरकार द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा के बाद उस पर देशभर में चर्चा हो रही थी। सांसद शंकर लालवानी ने भी नई शिक्षा नीति पर प्रतिष्ठित स्कूलों के प्राचार्य और शिक्षाविदों से बातचीत की। इस बातचीत में कोरोना काल में शिक्षा और नई शिक्षा नीति से जुड़े तमाम मुद्दों पर बातचीत की गई। निष्कर्ष यह रहा कि बच्चों को मानसिक रूप से अधिक मजबूत बनाने की जरूरत हैं। क्योंकि कोरोना के कारण शिक्षा के क्षेत्र पर बहुत प्रभाव पड़ा है।

कोरोना के कारण कनाडा की कई कंपनियां चीन से अपना कारोबार समेटने लगी। ये कंपनियां मेन्यूफेक्चरिंग के क्षेत्र में नई जगह तलाश रही थी। सांसद शंकर लालवानी ने एक वेबिनार में शामिल होकर कनाडा की 100 से अधिक कंपनियों से आग्रह किया कि वे इंदौर में अपना प्लांट लगाए। सरकार की तरफ से उन्हें हर संभव सहयोग दिया जाएगा। इसके साथ ही वे इंदौर के लोगों को समझाइश देते रहे कि बाजारों के खुलने का अर्थ यह नहीं कि कोरोना का खतरा खत्म हो गया है। इसलिए सावधानियों के साथ अपनी दिनचर्या का पालन करें। मास्क का उपयोग बढ़ाने के लिए उन्होंने अभियान भी चलाया और एक मास्क अनेक जिंदगियां नामक इस अभियान में लगातार लोगों को जागरूक किया।

कोरोना के कारण लोक कलाकार, गायक और कलावृंद बुरी तरह प्रभावित हुए थे, क्योंकि आयोजनों पर रोक लग गई थी। सांसद ने ऐसे कलाकारों की मदद के लिए राज्य सरकार से मासिक सहायता योजना की पहल की। मध्यप्रदेश कलाकार कल्याण कोष से भी आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराने का कार्य किया गया। अशासकीय संस्थाओं को भी अनुदान उपलब्ध कराने की मांग भी की गई। कलाकारों की प्रतिभा का प्रदर्शन हो सकें, इसलिए उन्होंने यूट्यूब पर एक चैनल भी शुरू करवाया।

सांसद शंकर लालवानी नेपाली समाज की इंदौर इकाई के संरक्षक भी हैं, उन्हें जब पता चला कि इंदौर में रह रही एक नेपाली युवती परेशानी में है, क्योंकि उसके पास अनाज खत्म हो गया है, तब सांसद खुद उस नेपाली बेटी की मदद करने के लिए खाद्य सामग्री लेकर पहुंचे। ऐसे अनेक उदाहरण है, जब उन्होंने मदद के लिए खुद आगे बढ़कर पहल की और लोगों को भी मदद के लिए प्रेरित किया।

कोरोना काल के दौरान सांसद शंकर लालवानी ने मुख्य समन्वयक

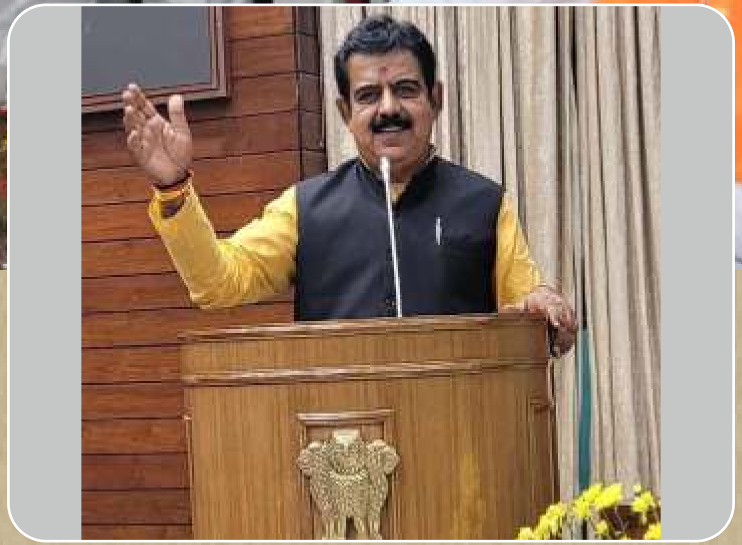

कोरोना काल में कठिन परीक्षाओं में खरे उतरे शंकर लालवानी

की भूमिका में बड़े और कड़े फैसले किए, जिसके कारण इंदौर के लोगों को कोरोना की पीड़ा में मरहम जैसी राहत महसूस हुई। भोजनशालाओं का निरीक्षण करने गए शंकर लालवानी खुद कभी–कभी भोजन बनाने में सहयोग करने लगते, कभी भोजन के वितरण में वे सक्रिय हो जाते। बाहर फंसे हुए लोगों को वापस लाने का मामला हो या इंदौर में फंसे लोगों को उनके गृह नगर या देश में पहुंचाने का मामला वे हमेशा सक्रिय रहे।

कोरोना काल के सबसे भीषण दौर में सांसद शंकर लालवानी ने लगातार 45 दिन तक 7 हजार से ज्यादा जरूरतमंदों को प्रतिदिन भोजन उपलब्ध कराया। कारोबार और उद्योग से जुड़े क्षेत्र के लोगों को राहत पहुंचाने के साथ ही उन्होंने छोटे दुकानदारों, फल विक्रेताओं, कलाकारों, खिलाड़ियों, चिकित्सकों – समाज के हर अंग के लोगों को मदद पहुंचाने के लिए कार्य किया। उन्होंने कोरोना से बचाव के लिए आरोग्य विभाग द्वारा तैयार काढ़े के पाउच सहित हजारों किट्स बांटी, जिनमें सेनेटाइजर और मास्क भी शामिल थे। कोरोना के दौर में उन्होंने शहर का सही मायने में नेतृत्व किया, क्योंकि कार्यकाल समाप्त होने के बाद इंदौर नगर निगम में जनप्रतिनिधियों के सभी पद रिक्त पड़े हुए थे।

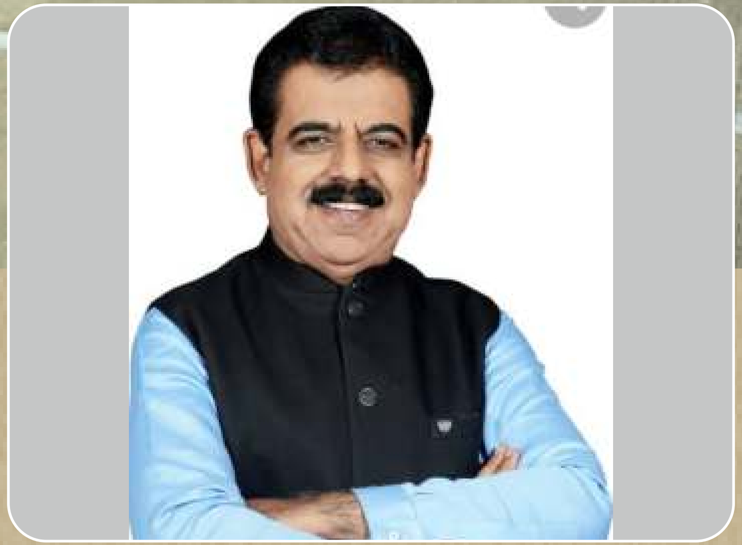

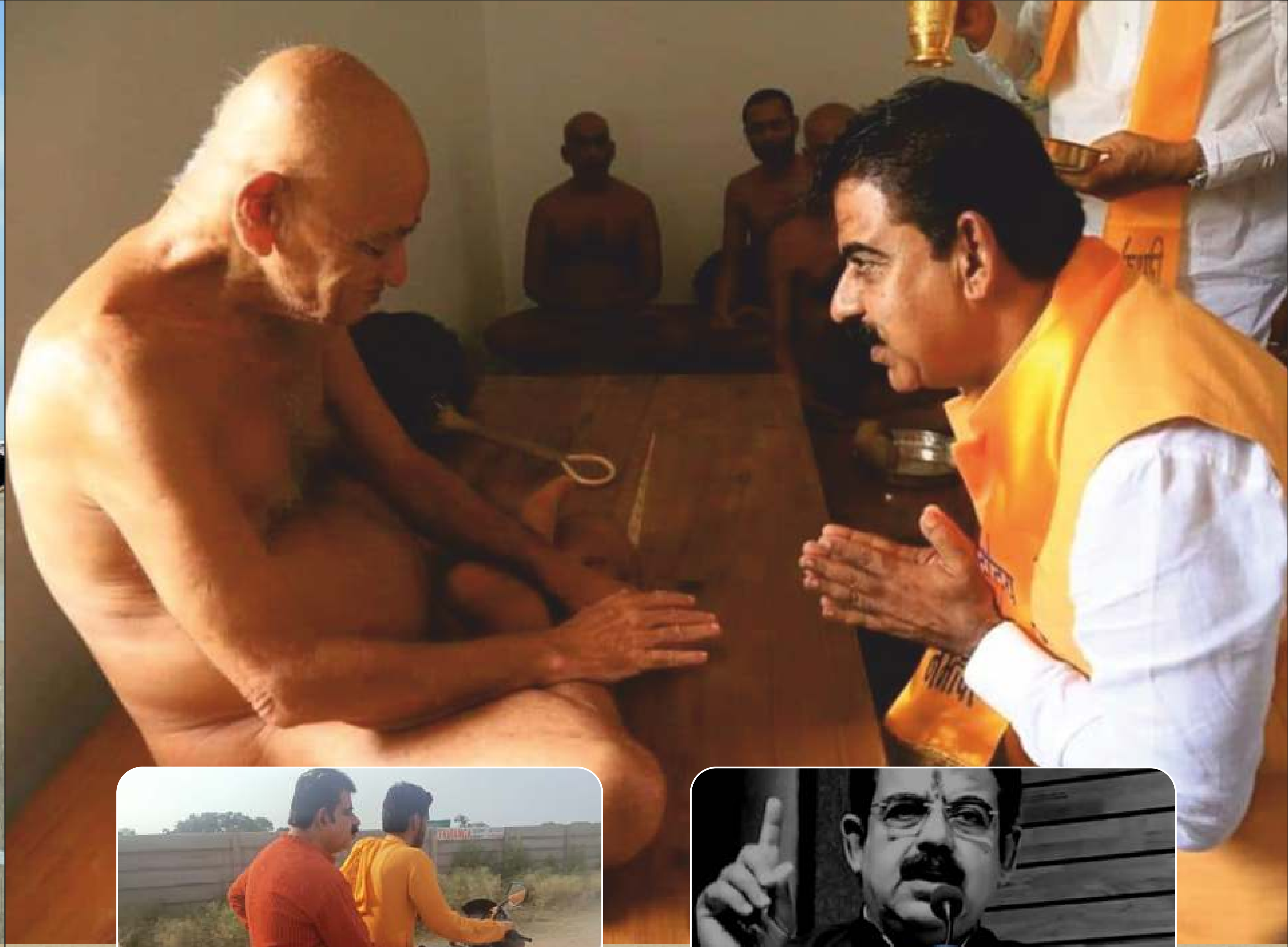

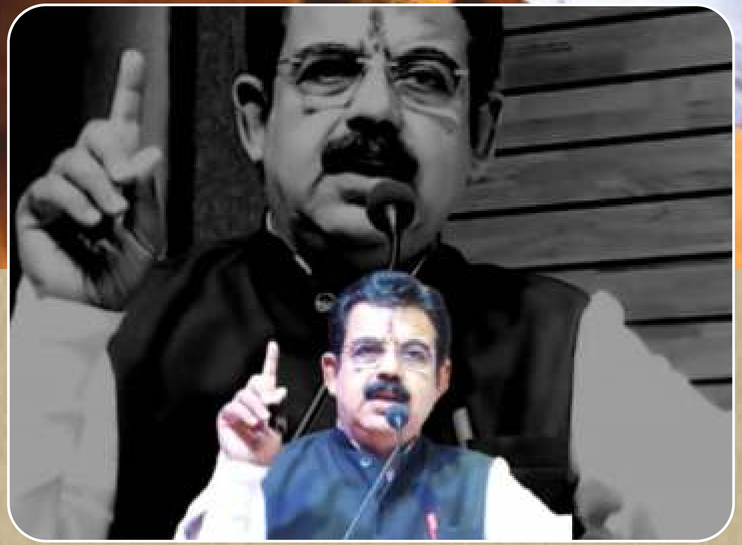

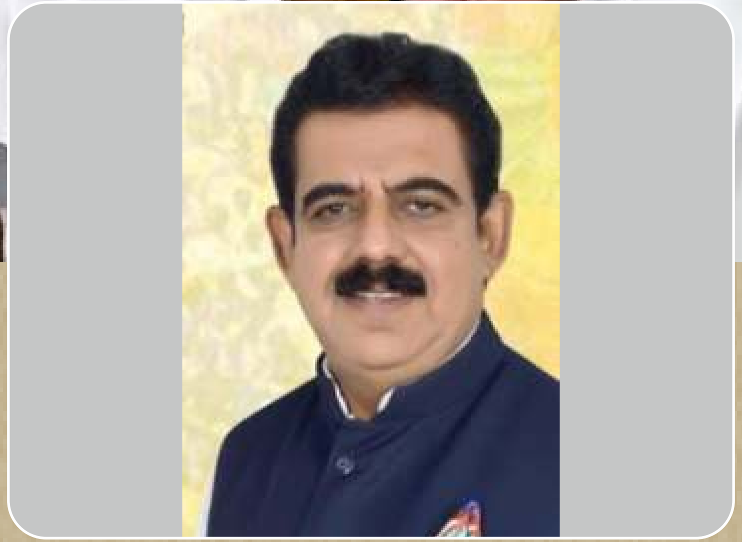

सहपाठियों की निगाह में शंकर लालवानी

जब किशोर कुमार के लाइव शो में मुझे ले गए थे शंकर लालवानी : प्रशांत धोते

श्री प्रशांत धोते इंदौर के सांसद शंकर लालवानी को 1982 से पहचानते हैं और उनके संपर्क में हैं। वे वीजेटीआई में शंकर लालवानी से 2 साल जूनियर थे, लेकिन शंकर लालवानी के केयर टेकिंग स्वभाव, नए छात्रों की मदद करने की रुचि और सहयोग की प्रवृत्ति के कारण शुरू से ही उनके प्रशंसक बन गए।

श्री धोते के अनुसार हम दोनों ही छात्र जीवन में किशोर कुमार के गानों के फैन थे। जिस दौर में सीनियर विद्यार्थी अपने जूनियरों को तरह–तरह से परेशान करते थे। उस दौर में शंकर लालवानी ने हमें छोटे भाई की तरह स्नेह दिया। शंकर लालवानी को सीनियर होने के बावजूद तमाम विषयों में इतनी गहरी जानकारी होती थी कि किस जूनियर विद्यार्थी की रुचियां क्या–क्या है और वह क्या पसंद करता है।

मुझे याद है कि शंकर लालवानी को जब ये पता चला कि मैं किशोर कुमार के गाने सुनना पसंद करता हूं, तब उन्होंने छात्र जीवन में ही मुझे किशोर कुमार से रु–ब–रु करा दिया था। हुआ यह कि एक शाम शंकर लालवानी मुझे लेकर मुंबई के सायन स्थित षण्मुखानंद हॉल में लेकर गए, जहां किशोर कुमार का एक लाइव कन्सर्ट होना था। मेरे लिए यह एक बहुत बड़ा उपहार था। उस दौर में किशोर कुमार के लाइव प्रोग्राम का टिकट जुगाड़ करना मेरे बूते की बात नहीं थी। मेरे लिए वह किसी सपने की तरह था कि मैं अपने प्रिय गायक का लाइव प्रोग्राम देख सकूं। यह बात सन् 1984 की है।

शंकर लालवानी न केवल विद्यार्थियों में लोकप्रिय थे, बल्कि वीजेटीआई के स्टॉफ और फैकल्टीज़ में भी बहुत लोकप्रिय थे। उन दिनों हमारे संस्थान वीजेटीआई के डायरेक्टर थे डॉ. वी.एन. गुपचुप। शंकर लालवानी उनके प्रिय विद्यार्थियों में से थे। स्व. प्रो. विंझनेकर हमारे एचओडी हुआ करते थे, वे भी शंकर लालवानी को बहुत पसंद करते थे।

शंकर लालवानी लीडर ऑफ लीडर्स थे। किंगमेकर। युवा विद्यार्थियों के फादर फिगर। वे एप्रोचेबल थे और सभी विद्यार्थियों से मिलते–जुलते रहते थे। चाहे क्लास रुम हो या होस्टल। डायरेक्टर से लेकर झाड़ू लगाने वाला तक उनके व्यवहार का कायल था। उन्हें इस बात की कला आती थी कि किस तरह वर्क और लाइफ में बैलेंस बनाकर रखा जाए। कॉलेज में उनका अपना दरबार था। हमारे कॉलेज में ही ऐसे विद्यार्थी भी थे, जिनके पिता महाराष्ट्र में मंत्री हुआ करते थे, लेकिन वे भी शंकर लालवानी को पसंद करते थे। महाराष्ट्र में मंत्री रहे हरिभाऊ नाईक के पुत्र संजय नाईक भी हमारे साथ ही थे।

उस दौर में वीजेटीआई में करीब 1800 छात्र पढ़ते थे। अंदाज लगा सकते हैं कि वह कितना बड़ा संस्थान होगा। वैसे भी वीजेटीआई की तुलना आईआईटी से की जाती हैं। सभी छात्रों में शंकर लालवानी का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा हैं। प्रोफेसर ऑफ केमिकल इंजीनियरिंग के इंचार्ज मिस्टर जोशी शंकर लालवानी के व्यवहार को हमेशा सराहते थे।

मैं 26 साल तक विदेश में रहा। कई देशों में मैंने कृषि और रिन्यूएबल एनर्जी पर काम किया। इतने लंबे समय बाद जब मैं भारत आया, तब मुझे खुद शंकर लालवानी का फोन आया और 37 साल बाद 24 नवंबर 2021 को यानी आज मेरी मुलाकात इंदौर में शंकर लालवानी से हुई। मुझे उनका एक वाट्सएप मैसेज मिला और मैं सीधा इंदौर चला आया।

छात्र जीवन में ही हमें पता था कि शंकर लालवानी राजनीति में बहुत आगे जाने वाले हैं, जब उन्हें चुनाव का टिकट मिला, तब उनके सभी सहपाठियों को इस बात का 100 प्रतिशत भरोसा था कि वे बहुत अच्छे वोटों से जीतेंगे।

अपने छात्र जीवन में शंकर लालवानी बहुत भावुक थे, वे धार्मिक प्रवृत्ति के शुरू से ही रहे हैं। हमारे कॉलेज के पास हिन्दू कॉलोनी में एक शिव मंदिर

सहपाठियों की निगाह में शंकर लालवानी

है, जहां पर अक्सर जाते रहते हैं। वे बेडमिंटन और टेनिस खेलने में रुचि रखते हैं। खेलकूद में इसी रुचि के कारण वह हमेशा फिट रहा करते हैं।

सेवाभाव के लिए छात्र राजनीति में सक्रिय थे शंकर लालवानी : जनक पूनिया

श्री जनक पूनिया मुंबई में वीजेटीआई में इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान शंकर लालवानी से एक साल जूनियर थे। शंकर लालवानी के विद्यार्थी जीवन को याद करते हुए जनक पूनिया ने कहा कि हम लोग विद्यार्थी जीवन से ही शंकर लालवानी के नेतृत्व गुरों से परिचित हैं। शंकर लालवानी सेवा के क्षेत्र में तब भी अव्वल थे और अब भी अव्वल हैं।

श्री पूनिया बताते है कि शंकर लालवानी यूनिवर्सिटी रिप्रजेंटेटिव (यूआर) रहे हैं। वे तब भी बहुत सादगीपूर्ण जीवन जीते थे और सक्रिय राजनीति में नहीं होते हुए भी सेवा कार्य में अव्वल थे। वे पूरे सेवाभाव से राजनीति में कार्य कर रहे हैं। छात्र जीवन में ही वे सक्रिय राजनीति में नहीं थे, लेकिन सेवाकार्य में हमेशा आगे रहें। विद्यार्थियों को जरा भी तकलीफ होती, तो वे सामने आ जाते और विद्यार्थियों के लिए हरसंभव प्रयास करते। मैं क्रिकेट खेलता था और मेरे सामने आने वाली सभी परेशानियों को दूर करने के लिए शंकर लालवानी के पास ही जाता था। वे उन दिनों टेबल टेनिस खेला करते थे।

शंकर लालवानी के परिवार के तरह ही हमारा परिवार भी पाकिस्तान से विस्थापित होकर आया था। मेरे दादा–परदादा कराची में रहते थे। शंकर लालवानी के पुरखे भी पाकिस्तान से आए है। इसके अलावा हम लोग इंजीनियरिंग की एक ही ब्रांच में पढ़ाई कर रहे थे। शंकर लालवानी एकदम स्ट्रेट फारवर्ड रहते थे। दोस्ती–यारी में नंबर–1। वे कभी भी अपने दोस्तों की उपेक्षा नहीं होने देते थे। हम दोनों का परिवार एक ही पृष्ठभूमि का था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हमारे व्यक्तित्व को अलग कुछ बनाया था। मैं सक्रिय राजनीति में तो नहीं हूं, लेकिन भारतीय जनता पार्टी का समर्थक हूं। जब वाराणसी सीट से नरेन्द्र मोदी चुनाव में खड़े हुए, तब मैं उनके प्रचार के लिए 10–10 दिन बनारस में गया था। जब मुझे पता चला कि शंकर लालवानी इंदौर से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे हैं, तब मेरी खुशी का पारावार नहीं रहा। मैंने उन्हें फोन पर बधाइयां दी।

पढ़ाई और थोड़े समय के लिए नौकरी के बाद शंकर लालवानी इंदौर चले गए और समाजसेवा के कार्य में जुट गए। साथ ही उन्होंने राजनीति में भी प्रवेश किया और कामयाबी की नई–नई ऊंचाइयां पाते गए। संयोग से मेरी पत्नी भी इंदौर की हैं और इंदौर से मेरा जीवंत सम्पर्क रहता हैं। भले ही शंकर लालवानी से हमारी मुलाकात बार–बार नहीं होती हो, लेकिन हम टेलीफोन के माध्यम से संपर्क में रहते हैं। मैं ओशो की विचारधारा को मानने वाला संन्यासी भी हूं और जीवन देखने का मेरा अलग नजरिया है। मेरे हिसाब से शंकर लालवानी एक ऐसे गृहस्थ संन्यासी हैं, जो अपने परिवार में रहते हुए भी समाज से जुड़े रहते हैं। कोरोना काल में पूरे इंदौर के लोगों ने यह देखा कि भाभी जी यानी श्रीमती अमिता लालवानी को कैंसर होते हुए भी शंकर लालवानी ने किस तरह अपनी पत्नी की सेवा की और सांसद के रूप में जिम्मेदारी निभाते हुए जनसेवा का कार्य भी किया।

छात्र नेताओं के नेता थे शंकर लालवानी : संजय हरिभाऊ नाईक

संजय नाईक भी कॉलेज के दिनों में शंकर लालवानी के सहपाठी रहे हैं। शंकर लालवानी की तरह ही उन्हें भी राजनीति में गहरी रुचि रही हैं। जब छात्र संघ के चुनाव हुए, तब संजय नाईक ने उन चुनावों में हिस्सा लिया और वे छात्र संघ के सचिव चुने गए।

संजय नाईक बताते हैं कि भले ही मैं छात्र संघ में सक्रिय रहा हूं, लेकिन लीडरशिप और नेतृत्व के गुण शंकर लालवानी में ज्यादा रहे हैं। यूआर रहते हुए उन्होंने हमारे वीजेटीआई कॉलेज की अधिमान्यता के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए थे। चुनावी राजनीति में तब उनकी रुचि नहीं थी, लेकिन सेवाकार्यों में अवश्य थी। वे शांति से पढ़ाई करने की प्रवृत्ति रखते हैं। वे हमेशा अच्छे नंबर लाते रहे, लेकिन राजनीति में आने का निर्णय शायद

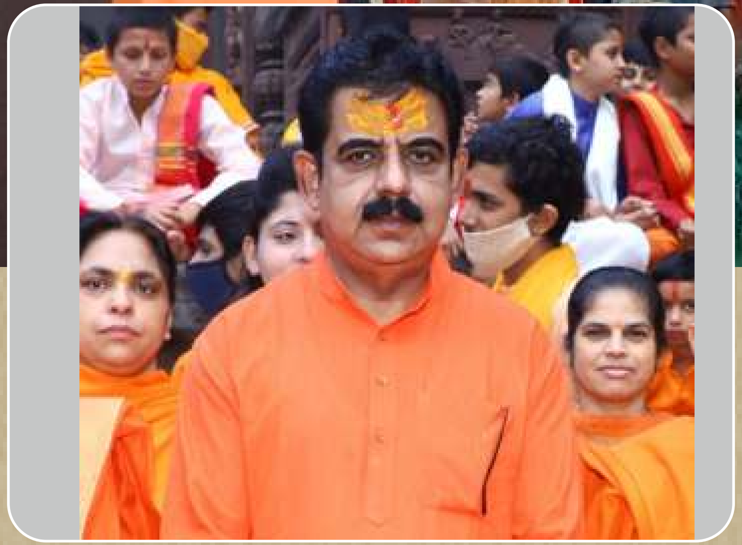

सहपाठियों की निगाह में शंकर लालवानी

उन्होंने कर लिया था।

छात्र जीवन में ही शंकर लालवानी हमारा नेतृत्व करते रहें। वे हमें बताते रहें कि छात्र नेता के रूप में हमें किस तरस से कार्य करना है। विद्यार्थियों की समस्या को समझने की उनमें अच्छी क्षमता थी और वे जानते थे कि किस विद्यार्थी को किस तरह की मदद की जरूरत हैं। वे छात्रों के लिए हरसंभव मदद जुटाने का कार्य करते हैं।

मेरे पिता नागपुर में श्रमिक आंदोलनों से जुड़े रहे हैं। हरिभाऊ नाईक नागपुर के एक बड़े श्रमिक नेता थे। उनके नेतृत्व में अनेक श्रम आंदोलन हुए और वे सफल भी हुए। मुझे राजनीति में उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला, लेकिन शंकर लालवानी ने राजनीति में जो कुछ सीखा, खुद ही सीखा। इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद ही उन्हें राजनीति में जाने की इच्छा हुई और उन्होंने देश की सबसे बड़ी पार्टी को अपनी राजनीति के लिए चुना। उन्हें भारतीय जनता पार्टी में हमेशा से ही भरोसा रहा है। भाजपा अध्यक्ष और अन्य नेताओं के प्रति उनकी निष्ठा रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति शंकर लालवानी की गहरी आस्था रही हैं और शायद इसीलिए पार्टी ने शंकर लालवानी को विभिन्न पदों के लिए समय–समय पर चुना। पार्षद से लेकर सांसद तक का सफर अपने आप में अनूठा है।

भारतीय जनता पार्टी का विश्वास शंकर लालवानी में कितना रहा है, यह इस बात से साबित होता है कि उन्होंने इंदौर जैसी बड़ी और महत्वपूर्ण लोकसभा सीट से उम्मीदवारी के लिए शंकर लालवानी को चुना। इतने बड़े लोकसभा क्षेत्र में शंकर लालवानी ने रिकार्ड वोटों से जीत हासिल की। यह अपने आप में बहुत बड़ा विक्रम है कि शंकर लालवानी लोकसभा में लगभग साढ़े पांच लाख से ज्यादा वोटों से जीते।

शंकर लालवानी की खूबी हैं कि वे हमेशा कूल रहते हैं। विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी वे अपना आपा नहीं खोते। हर बात पर सोच–विचार कर बोलते हैं। लोगों की समस्याओं को समझने की कोशिश करते हैं और उन्हें दूर करने के लिए जुट जाते हैं। वे जानते हैं कि पब्लिक लाईफ में अपनी जगह कैसे बनाई जाए और कैसे लोगों को मुसीबतों से छुटकारा दिलाना चाहिए। मुझे फख्र है कि हमारे सहपाठी इतने बड़े मुकाम पर पहुंचे है। मुझे यह भी पता है कि यह कोई उनकी अंतिम मंजिल नहीं है, वे इसके आगे भी और बड़े–बड़े कीर्तिमान छूने वाले हैं।

राधे
राधे

FICCI
#startupindia
MSME

WORLD BOOK

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

शंकर लालवानी इंदौर के राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य से जुड़े हुए हैं। कार्यकर्ताओं से उनके सीधे संबंध हैं और वे उन संबंधों को हमेशा ताजगी प्रदान करते रहते हैं। भारतीय जनता पार्टी के नेता और कार्यकर्ता जहां उन्हें एक कुशल रणनीतिकार बताते हैं, तो उनके मातहत रहने वाले कर्मचारियों का मानना है कि वे बहुत बड़े विजनरी व्यक्तित्व के धनी हैं। मित्रों में वे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लोकप्रिय हैं, जो व्यसनों से दूर हैं और सात्विक जीवन जीता हैं। शाकाहार और योगासन उनकी जीवनशैली हैं। वे मृदुभाषी हैं, लेकिन स्पष्ट वक्ता है, उनके विचारों में एक तरह की स्पष्ट अवधारणा देखने को मिलती हैं।

सकारात्मक सोच

लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष एवं 8 बार इंदौर का संसद में प्रतिनिधित्व कर चुकीं श्रीमती सुमित्रा महाजन का कहना है – शंकर लालवानी सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति हैं। वे सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं और अपने काम के प्रति हमेशा गंभीर और निष्ठावान हैं। वे किसी भी चक्कर में नहीं पड़ते। कला और संस्कृति के क्षेत्र को अच्छी तरह समझते हैं। हमेशा शांति से सिनसियर होकर काम करते हैं। मैं उन्हें कई दशक से जानती हूं। वे शांति से काम करने वाले व्यक्ति हैं।

सांसद शंकर लालवानी विपरीत से विपरीत स्थितियों में भी नकारात्मक विचार अपने मन में नहीं आने देते। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि जब पूरा देश कोरोना की चपेट में था और सब जगह निराशा का माहौल था, तब भी सांसद शंकर लालवानी ने सकारात्मक सोच रखीं और यह भरोसा वे हर एक को देते रहे कि कोरोना के संकट से हम जल्द ही पार पा जाएंगे।

वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की चर्चा हमेशा करते और बताते कि सरकार युद्ध स्तर पर कोरोना से जूझने के लिए प्रयास कर रही हैं। केवल सरकार ही नहीं, लाखों की संख्या में स्वास्थ्यकर्मी, प्रशासन के लोग और सरकारी कर्मचारी भी इस कार्य में जुटे हैं। ऐसे में कोरोना से निजात पाना कोई बड़ी बात नहीं होगी। बशर्ते कि लोग इसमें सरकार का साथ दें और दो गज की दूरी तथा मास्क है जरूरी वाला फॉर्मूला अपनाते रहे।

इन्दौर के अधिकांश लोग भी इस बात से सहमत हैं कि सकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि सांसद शंकर लालवानी विपरीत स्थितियों में भी अपनी अस्वस्थ धर्मपत्नी की सेवा करते रहें, जो कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से त्रस्त थीं। उन्होंने कभी भी परिवार के फ्रंट पर निराशा का भाव उजागर नहीं किया और अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के लिए भी बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने में जुटे रहे।

इतना ही नहीं, उनके स्वास्थ्य के लिए भी वे चिंतित थे, लेकिन उन्होंने उस चिंता को अपने सहयोगी और सेवाभाव में आड़े नहीं आने दिया। पूरे–पूरे दिन उन्हें अस्पताल में रहकर अपनी अस्वस्थ धर्मपत्नी का हौंसला बढ़ाना होता था। दुर्भाग्यवश उनकी धर्मपत्नी को बचाया नहीं जा सका, लेकिन फिर भी कोरोना पीड़ितों की सेवा में उन्होंने कोई कमी नहीं आने दी।

कर्मठ व्यक्तित्व

अभ्यास मंडल के अध्यक्ष श्री रामेश्वर गुप्ता का कहना है – शंकर लालवानी सहज और सरल व्यक्ति हैं। हर एक के लिए हमेशा उपलब्ध रहते हैं। सभी को एकमोडेट करने की उनकी क्षमता अपार हैं। वे सभी को तवज्जों देते हैं। दूसरी पार्टियों के नेताओं से भी मिल–जुलकर रहते हैं। इंदौर की

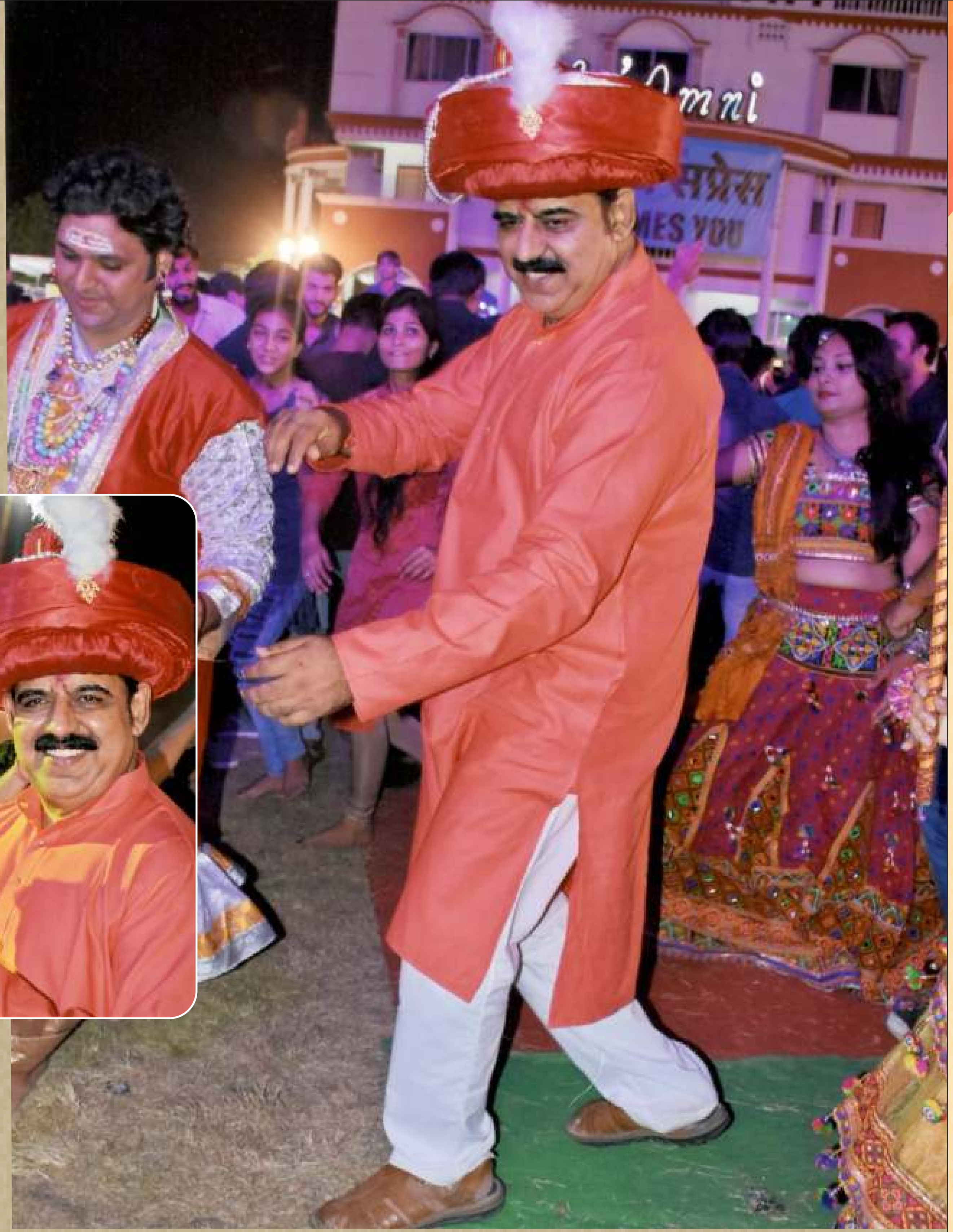

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

समस्याओं को हल करने के लिए हमेशा सक्रिय रहते हैं।

कर्मठता श्री शंकर लालवानी के खून में है। वे कभी भी हवा–हवाई बातें नहीं करते। हमेशा डूबकर अपना कार्य करते हैं। सुबह 6 बजे से योगाभ्यास करते हुए उनकी दिनचर्या शुरू होती है, जो आधी रात तक सतत चलती रहती है। इस दौरान वे विभागीय बैठकों में शिरकत करते हैं।

वरिष्ठ अधिकारियों से मिलते हैं, पार्टी के नेताओं से जनसमस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करते हैं। शहर, क्षेत्र और राज्य के विकास के लिए नई–नई योजनाओं के बारे में विचार करते हैं। एक संसद सदस्य के रूप में वे संसद में अपनी उपस्थिति को लेकर गंभीर रहते हैं और कभी संसद के सत्र में अनुपस्थित नहीं होते। वे संसद में न केवल उपस्थित होते हैं, बल्कि सक्रिय रूप से वहां की गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं।

वे इतनी समितियों में हैं, जो संसद के कार्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन समितियों में जाना और वहां मुद्दों को सही परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करना बहुत महत्वपूर्ण होता हैं। सांसद की सक्रियता का ही नतीजा है कि इंदौर और उसके आसपास का इलाका विकास की राह पर तेजी से चल पड़ा हैं। शहर का न केवल चहुमुखी विकास हो रहा है, बल्कि इंदौर से जुड़े शहरों, गांवों और कस्बों में भी इसके लाभ को देखा जा सकता है। यह कर्मठता उनमें विद्यार्थी जीवन से ही थी और वे तब भी अपने सहपाठियों की मदद करने से कभी पीछे नहीं हटते थे।

नैतिकता की शक्ति

सांसद शंकर लालवानी के बारे में पद्मश्री जनक पलटा का कहना है – मैं उन्हीं 37 वर्षों से जानती हूं। मेरे लिए वे शंकर भैया ही हैं। वे व्यसनों से हमेशा दूर रहते हैं और सहजता से उपलब्ध हो जाते हैं। वे कभी हवा बाजी नहीं करते। गुस्सा उन्हें आता नहीं है। विनम्रता उनमें कूट–कूट कर भरी हुई हैं, जब वे आईडीए के चेयरमैन बनें, तब पहले ही दिन मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। उन्होंने मेरा आशीर्वाद लिया और मुझसे पूछा कि इंदौर के लिए क्या–क्या करना चाहिए। जब मैंने प्लास्टिक के गिलास का बहिष्कार करने की बात बताई, तब उन्होंने उसे बहुत गंभीरता से लिया। वे पीपुल्स पर्सन हैं। ताई सुमित्रा महाजन की तरह ही शंकर भैया भी सादगी पसंद और सहज हैं। वे अपने आप को कभी भी सुपिरियर नहीं समझते। मेरा अनुभव है कि सांसद बनने के बाद वे और भी विनम्र हो गए हैं।

उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही नेतृत्व के गुण विकसित कर लिए थे, लेकिन उन्होंने कभी भी नेतृत्व के लिए अनुचित साधनों का उपयोग करना तो दूर उन पर विचार करना भी मंजूर नहीं किया। उनके सहपाठियों के अनुसार नेतृत्व के गुण होते हुए भी उन्होंने अपने सहपाठियों को छात्र आंदोलनों में आगे बढ़ाया और पर्दे के पीछे से उनका समर्थन करते रहे।

अनेक राजनेताओं पर पद पाने और पद पर बने रहने के लिए अनैतिक कार्यों का साथ देने का आरोप लगता रहा है, लेकिन शंकर लालवानी के साथ ऐसा कभी भी नहीं हुआ। चाहे नगर निगम का चुनाव हो या सांसद का, आईडीए का अध्यक्ष पद हो या नगर निगम में सभापति का पद। लाभ के अनेक पदों पर पहुंचने के लिए जहां कई नेता लालायित रहते हैं और वहां पहुंचने के लिए हर तरह की तिकड़म करते रहते हैं, ऐसे में भी शंकर लालवानी ने अनैतिक साधनों का उपयोग नहीं किया।

भारतीय जनता पार्टी में भी वे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहे, लेकिन वहां भी उन्होंने पद पाने के लिए कभी ऐसे कार्य नहीं किए, जो कई नेता करते देखे जाते हैं। अपने कार्यकर्ताओं को खुश करने के लिए उन्होंने न तो कभी झूठे आश्वासन दिए और न ही अपने वरिष्ठों को अकल्पित कार्य करने का भरोसा दिलाया। उन्होंने जो भी किया, नैतिकता का साथ रखते हुए किया।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन पद पर आसीन होना अनेक पार्टी नेताओं का स्वप्न होता हैं। वहां 5 वर्ष तक लगातार कार्य करने के बाद भी उन्होंने अपने आचरण से साबित किया कि वे सेवा के लिए इस महत्वपूर्ण पद पर आसीन हुए थे। उनके सहयोगी भी उन्हें एक ऐसे अधिकारी के रूप में देखते हैं, जिन्होंने शहर के विकास और लोगों की भलाई को ही अपनी

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

प्राथमिकता माना।

इंदौर विकास प्राधिकरण में उनके सहयोगियों का कहना है कि कई मौके ऐसे आए, जब लोगों ने उन पर दबाव डालकर कार्य कराना चाहा, लेकिन उन्होंने नैतिकता के साथ नियमों और कानूनों का भी परवाह की। उनका मानना रहा कि अनैतिक होकर जो लोग कानूनी खानापूर्ति करते हैं, वे अपने समाज और देश के साथ द्रोह करते हैं। इससे समाज की कई पीढ़ियां भ्रष्ट हो जाती हैं। उनके साथ ही राजनीतिक सफर शुरू करने वाले कई नेताओं की उपलब्धियां व्यक्तिगत रूप से भले ही शंकर लालवानी से अधिक हो, लेकिन शंकर लालवानी जैसा नैतिक साहस उन नेताओं में शायद ही कहीं हो।

जब इंदौर से लोकसभा का टिकट दिए जाने की चर्चा चल रही थी, तब अनेक लोगों ने उनकी प्रतिभा, नैतिकता, निष्ठा और योग्यता की सराहनाह करते हुए, उनके पक्ष में राय रखी थी। शंकर लालवानी के साथ जो सबसे बड़ी शक्ति जुड़ी हुई है, वह है उनका अपना नैतिक बल। उन्होंने कभी भी नैतिक मूल्यों से खिलवाड़ न तो खुद किया और न ही किसी और को करने दिया। कई लोग उनके इसी गुण की वजह से उन्हें नापसंद भी करने लग गए, लेकिन ऐसे लोगों की संख्या भी बहुत बड़ी है, जो उनके इसी गुण के कारण उनके पास चुम्बक की तरह खींचे चले आते हैं।

निष्ठावान कार्यकर्ता

एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज के अशोक बड़जात्या का कथन है – शंकर लालवानी कम बोलकर ज्यादा काम करने वाले नेता हैं। ज्यादा काम करते हैं और उसे कम दिखाते हैं। वे इंदौर के निर्विवाद नेता हैं। शहर में उनकी गहरी पैठ हैं।

शंकर लालवानी भले ही लोकसभा के सांसद हो और पार्टी तथा सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर रहे हों, लेकिन वे आज भी अपने आप को कार्यकर्ता ही कहते हैं। वे भारतीय जनता पार्टी के सिपाही के रूप में अपने आप को प्रस्तुत करते हैं। एक ऐसे सिपाही के रूप में, जो हमेशा अपनी पार्टी और उसकी सरकार के प्रति निष्ठावान रहें।

शंकर लालवानी ने व्यक्तियों के बजाय सिद्धांतों को महत्व दिया और उनकी निष्ठा व्यक्तियों के प्रति कम और संस्थाओं के प्रति ज्यादा रहीं। शंकर लालवानी ने हमेशा पार्टी के निर्देशों का पालन किया हैं और पूरी निष्ठा से उस कार्य को अंजाम तक पहुंचाया हैं। कई बार उन्होंने अपने निजी कार्यों को छोड़कर भी पार्टी के लिए वक्त दिया है। वे अपने सहयोगियों और वरिष्ठ नेताओं से हमेशा विचार विमर्श करके ही फैसला करते रहे हैं।

पार्टी ने जो भी काम जिस भी स्तर पर उन्हें सौंपा, उन्होंने तन–मन–धन से उस दायित्व का निर्वहन किया। ऐसे बिरले नेता पार्टी, समाज और देश के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

जब शंकर लालवानी को लोकसभा का टिकट दिया गया, तब हमें इस बात का पूरा भरोसा था कि जीत उनकी ही होगी और वे ऐतिहासिक संख्या में वोट पाकर विजयी होंगे तथा रिकॉर्ड बनाएंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लहर के कारण अधिकांश भाजपा उम्मीदवारों की तरह उनकी जीत भी तय ही थी, लेकिन उनके व्यक्तिगत प्रयासों ने उस जीत को ऐतिहासिक बना दिया।

शंकर लालवानी को चुनाव में लोकसभा की पूर्व स्पीकर तथा इंदौर की लगातार 8 बार सांसद रहीं ताई सुमित्रा महाजन का भी आशीर्वाद प्राप्त था। जिस तरह उन्होंने चुनाव में अपने लिए प्रचार किया, अगर पार्टी उनकी जगह किसी और को टिकट देती, तब भी वे उतनी ही निष्ठा और ईमानदारी से पार्टी की जीत के लिए दिन–रात कार्य करते। जब भी कोई कभी सांसद के पास अपने क्षेत्र की समस्याएं लेकर गए, उन्होंने पूरी ईमानदारी से उसे हल करने के प्रयास किए।

कई बार तो हम अपने निजी कार्य लेकर भी उनके पास जाते, लेकिन वे उसकी समीक्षा करते और देखते कि उस कार्य का नैतिक पक्ष कहीं कमजोर तो नहीं। नियमों के विरूद्ध कोई भी कार्य वे नहीं करते। भले ही कार्यकर्ता उनसे रूठ जाएं, उन्हें भरोसा होता है कि अगर सांसद शंकर

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

लालवानी ने कोई काम करने के लिए भरोसा दिया है, तो वे उसे अंजाम तक पहुंचाएंगे।

कठोर परिश्रमी

सेवा सुरभि के अध्यक्ष ओम नरोड़ा के शब्दों में – शंकर लालवानी कठोर परिश्रमी, सरल, नेक और सकारात्मक सोच वाले नेता हैं। सांसद होने के बाद भी वे सरल बने हुए हैं। जनकार्य समिति के प्रमुख के रूप में उन्होंने अपने कठोर परिश्रम की छाप छोड़ी थी। बाद में आईडीए के चेयरमैन के रूप में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। उनकी एक खास बात यह है कि वे कार्य करने में विश्वास करते हैं। क्रेडिट लेने में नहीं।

अनेक लोगों का मानना है कि शंकर लालवानी की शख्सियत में उनका कठोर परिश्रम करने का गुण बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे बिना थके लगातार घंटों तक कार्य कर सकते हैं। चाहे वह कार्य मैराथन बैठकों का हो या दिन रात मतदाताओं से संपर्क करने का हो। वे काम के लिए कभी भी शार्टकट नहीं खोजते। उनका मानना है कि सभी शार्टकट उपयोगी नहीं होते। कुछ कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें कोई शार्टकट होता ही नहीं। अपने संपूर्ण राजनैतिक जीवन में उन्होंने ऐसे शार्टकट अपनाने के बजाय श्रम साध्य कार्य करना पसंद किया।

उनके कार्यों में कुछ कार्य ऐसे हैं, जो घंटों की मेहनत मांगते हैं। चाहे वह ऐतिहासिक मालवा उत्सव का आयोजन हो या कोरोना से जूझ रहे लाखों शहरवासियों की मदद करना हो। संगठन के लिए प्रतिबद्ध होकर घंटों ऐसे कार्य करना, जो शारीरिक रूप से बहुत सुविधाजनक नहीं होते। वहां भी शंकर लालवानी अपने कार्य में जुटे रहते हैं।

शंकर लालवानी जानते हैं कि राजनीति में लोगों की भलाई के लिए कठोर परिश्रम करने का अर्थ यह है कि किसी भी मुद्दे पर लगातार सतत अध्ययन और प्रयास करते रहें। इसके लिए वरिष्ठ नेताओं से मिलना पड़ेगा, तो उनसे मिलो। उनके कठोर परिश्रम की राह में कभी भी निजी कार्य नहीं आए। न ही उन्होंने कभी थकने का बहाना बनाया और न ही अपनी सेहत का हवाला दिया।

रणनीतिकार

अपने छात्र जीवन से ही शंकर लालवानी रणनीतिकार रहे हैं। जब वे मुंबई में वीजेटीआई में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे, तब अपने कॉलेज के विश्वविद्यालय प्रतिनिधियों के कार्यों की वे समीक्षा करते रहते थे और उन्हें बताते रहते थे कि उन्हें विश्वविद्यालय की सभा में कॉलेज की तरफ से कौन–कौन से मुद्दे उठाने हैं। इतना ही नहीं वे उन्हें यह भी बताते थे कि अगर इन मुद्दों को इस तरह की रणनीति के साथ प्रस्तुत किया जाए, तो उसमें विश्वविद्यालय और वहां के विद्यार्थियों का ज्यादा लाभ होगा।

मुंबई विश्वविद्यालय में उनके कॉलेज वीजेटीआई के प्रतिनिधि प्रशांत धोते ने कहा कि हम जानते थे कि शंकर लालवानी जी के लिए विश्वविद्यालय छात्र संघ में कोई भी पद पाना या विश्वविद्यालय प्रतिनिधि बनना, कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन उन्होंने अपने साथियों को महत्वपूर्ण माना और उन्हें यह जिम्मेदारी दी कि वे उस कार्य को किस तरह सफलतापूर्वक संपन्न करें।

अपनी राजनीति के प्रारंभिक दिनों में जब वे पार्षद बनें, तब उन्होंने अपने क्षेत्र का विकास करने में उन बातों पर बहुत ध्यान दिया, जो पार्टी के लिए भी लाभदायक साबित हुईं। उनकी इसी योग्यता से प्रभावित होकर पार्टी ने उन्हें नगर निगम में सभापति बनाया। अपने 5 वर्ष के कार्यकाल को उन्होंने इतनी कामियाबी से संपन्न किया कि पार्टी ने फिर अगले 5 सालों के लिए उन्हें सभापति पद पर आसिन किया।

नगर निगम में सभापति जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण पद पर रहते हुए उन्होंने अपने विवेक से ऐसे कार्य किए, जिनके कारण इंदौर आज भी लाभान्वित हो रहा है। सभापति रहते हुए उन्होंने ऐसी रणनीति बनाई, जो न केवल भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों के हित में थी, बल्कि विपक्षी पार्टियों के सदस्यों के भी पक्ष में थी। इस तरह की रणनीति के कारण नगर निगम इंदौर का विकास बेहतर तरीके से कर पाया।

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

जनसमस्याओं को दूर करने के लिए भी उनके पास हमेशा रणनीति होती है। कोरोना संकट से निपटते हुए उन्होंने जो रणनीतियां प्रशासन के सामने रखी थी, वे सकारात्मक परिणाम देकर गई। कई बार उन्होंने बड़े और कड़े फैसले लिए, जिसका लोगों ने तात्कालिक रूप से विरोध किया, लेकिन शहर, समाज और देशहित में जो कड़े फैसले जरूरी थे, वे उन्होंने लिए और प्रशासन के अधिकारियों को भी प्रेरित किया कि वे ऐसी रणनीति बनाकर काम करें, जिससे कोरोना के संकट को दूर करने में मदद मिलें और लोगों को कम से कम परेशानी हो।

दूरदर्शिता

सांसद शंकर लालवानी के अधिकांश फैसले दूरदृष्टि वाले माने जाते रहे हैं। यहीं उनकी लोकप्रियता का कारण भी हैं। उन दूरदृष्टि फैसलों के कारण वे अपने परिवार, पार्टी, सहयोगियों और मतदाताओं में लोकप्रिय हैं। शहर के विकास के लिए उन्होंने हमेशा ऐसी योजनाओं को तवज्जों दी, जिसका लाभ शहर को लंबे समय तक मिलता रहे और मिल भी रहा है। मामला चाहे, रेल्वे के विस्तार का हो या हवाई सेवाओं के विस्तार का। शहर में सड़कों का जाल बिछाना हो या नए फ्लायओवर बनाने हो।

नई शिक्षा संस्थान खड़े करने हो या नए खेल परिसर बनाने हो। विभिन्न समाजों की धर्मशालाएं बनानी हो या शहर के विकास का कोई नया लैंडमार्क खड़ा करना हो, वे हर मामले में दूरदर्शितापूर्ण फैसले लेने के आदि रहे हैं। इस स्वभाव के कारण वे न केवल अपनी पार्टी में बल्कि सरकार में भी खासे लोकप्रिय हैं। अगर इंदौर का विकास शंकर लालवानी के दूरदर्शितापूर्ण फैसलों और योजनाओं के अनुसार आगे भी चलता रहा, तो कुछ ही वर्षों में इस पूरे क्षेत्र का कायाकल्प हो जाएगा। इंदौर को देश में एक अलग से नई पहचान मिलेगी।

इंदौर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन के रूप में उन्होंने तात्कालिक योजनाओं के बजाय दीर्घकालिक योजनाओं को प्राथमिकता दी। उन योजनाओं के अमल के बाद शहर का कायाकल्प होना शुरू हुआ।

टेक्नोक्रेट

श्री शंकर लालवानी खुद पेशे से इंजीनियर हैं। अपनी उच्च शिक्षा का उपयोग वे पार्टी और सरकार में रहते हुए बखूबी करते रहे हैं। फ्लायओवर की डिजाइनों का मामला हो या शहर में स्वच्छता का नक्शा बनाने की पहल हो। कचरा निपटान की आधुनिक पद्धतियां हो या इंदौर एयरपोर्ट का विस्तार करना हो। हर मामले में उनकी सोच वक्त के साथ कदमताल करते हुए चली हैं। कई मौके तो ऐसे भी आए, जब वे वक्त के आगे की बात सोचते रहे। उनके सहयोगी अनेक बार यह बात कहते हुए देखें गए कि जहां हमारी सोच खत्म हो जाती है, उसके आगे से तो शंकर भैया की सोच शुरू होती हैं।

अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पढ़ाई तथा लालन–पालन के कारण शंकर लालवानी को कोई भी नौकरशाह भ्रमित नहीं कर सकता। यह बात नौकरशाह भी जानते हैं और तमाम विभाग के अधिकारी–कर्मचारी भी। उनकी वैज्ञानिक सोच न केवल तकनीकी रूप से हमारी मदद करती हैं, बल्कि कई बार वे हमारी तकनीकी और विभागीय व्यवस्था में भी कोई न कोई नया रास्ता निकाल ही लेते हैं।

निर्व्यसन व्यक्ति

कांग्रेस के नेता और पूर्व मंत्री चन्द्रप्रभास शेखर का कहना है – शंकर लालवानी व्यसनों से दूर हैं। सराफा क्षेत्र में उनके पिता की दुकान हमारे घर के नीचे थी। तब से ही मेरे परिवार का उनके परिवार से स्नेहपूर्ण संबंध हैं। हमारी राजनैतिक विचारधाराएं अलग–अलग हैं, लेकिन फिर भी हमारा एक–दूसरे के घर आना–जाना हैं। अभी भी हमारे परिवार अक्सर मिलते हैं। वे बहुत ही संस्कारवान और सुलझे हुए व्यक्ति हैं।

सांसद शंकर लालवानी के भाई प्रकाश लालवानी का कहना है कि भैया में कोई भी व्यसन नहीं है। उन्होंने कभी भी तम्बाकू, गुटखा, मदिरा आदि को छुआ तक नहीं। यहां तक कि विद्यार्थी जीवन में भी वे अपनी अनुशासन प्रियता और निर्व्यसनी जीवन के लिए लोकप्रिय थे। उनके संस्कारों का असर पूरे परिवार पर हैं। लोक परंपराओं के निर्वाह के लिए वह

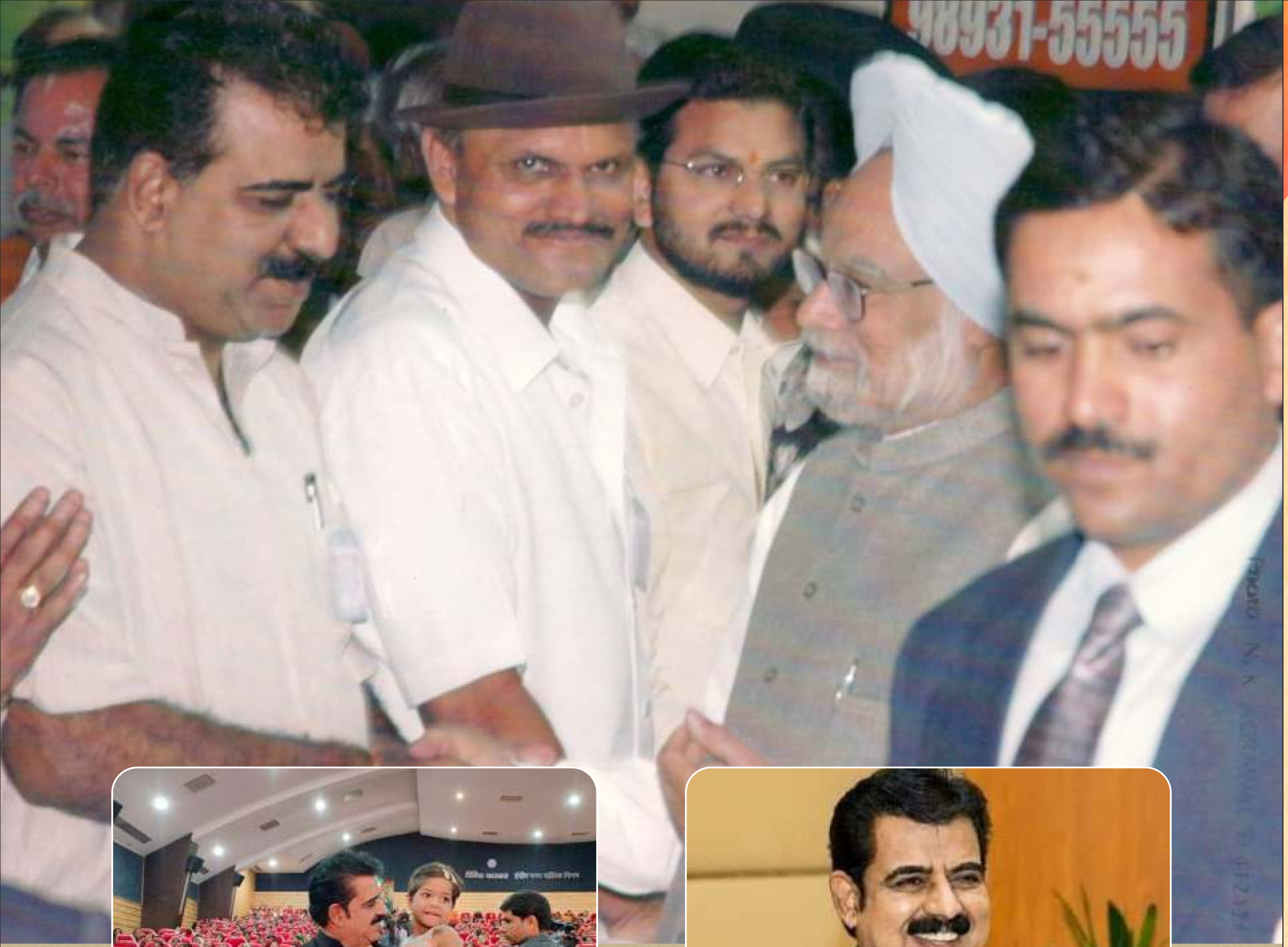

शंकर लालवानी की 10 खूबियां

चाय अवश्य पीते हैं, लेकिन उसके आदी नहीं हैं। ऐसे कभी नहीं हुआ, जब उन्होंने कहा हो कि चाय के बिना मेरा काम नहीं चलता.

व्यसन मुक्त जीवन के अलावा सांसद शंकर लालवानी अपने भोजन और उसकी पवित्रता को लेकर भी बहुत गंभीर रहते हैं। उनका भोजन हमेशा सात्विक होता हैं। वे पूरी तरह से शाकाहार का पालन करते हैं और उन्होंने कभी सामिष भोजन को छुआ तक नहीं। अपने भोजन में वे ताजा सब्जियों और फलों को महत्व देते हैं। उनकी अपनी पसंद होती है कि आर्गेनिक तरीके से उगाए गए फल और सब्जियां ही उनके आहार में शामिल हो, जहां तक संभव होता है, वे इसका पालन भी करते हैं।

मृदुभाषी और स्पष्ट वक्ता

यह बिरला गुण बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। राजनीतिज्ञों में तो यह गुण अक्सर नदारद रहता हैं। यह माना जाता है कि जो व्यक्ति मृदु भाषी हैं, वह स्पष्ट वक्ता नहीं होता, लेकिन शंकर लालवानी में ये दोनों गुण हैं। वे किसी भी मुद्दे पर किसी भी पूरे सफाई से अपनी बात कहते हैं और अपने विचारों पर दृढ़तापूर्वक टिके रहते हैं। उस पर भी खास बात यह है कि वे कटु शब्दों का कभी भी उपयोग नहीं करते। उनकी निर्णय लेने की क्षमता अद्भूत हैं और वे अपनी निर्णय लेने की क्षमता और शब्दों के प्रवाह से किसी भी व्यक्ति को यह बात अच्छी तरह से समझा सकते हैं कि सही और गलत में क्या फर्क हैं।

कई बार पार्टी कार्यकर्ता उनके पास ऐसे–ऐसे कार्यों को करवाने की सिफारिश लेकर जाते हैं, जो उचित नहीं होते। ऐसे में वे विनम्रतापूर्वक और दृढ़ता से कार्यकर्ताओं को समझाते हैं कि इस तरह के कार्य करना संभव नहीं है। मेरे पास आगे से ऐसे कार्य लेकर आना बंद कर दीजिए, लेकिन अगर कोई ऐसा कार्य करवाना हो, जिसमें उनकी मदद आवश्यक होगी, तब वे हमेशा आगे आएंगे और उनकी मदद करेंगे।

शंकर लालवानी के स्टॉफ के एक कर्मचारी ने बताया कि हमारे एक सहयोगी कार्यकर्ता अपने बेटे को मेडिकल कॉलेज में प्रवेश दिलाने के लिए हर तरह की कोशिश करने का आश्वासन चाहते थे। शंकर लालवानी जी ने उनको स्पष्ट कहा कि आपके बेटे के अपेक्षित अंक नहीं आए हैं, ऐसे में उसे अनुचित तरीके से मेडिकल कॉलेज में प्रवेश नहीं दिलाया जा सकता। अगर उसके अपेक्षित नंबर आए होते और मेडिकल कॉलेज में एडमिशन मिलने में कोई रुकावट होती, तो मैं उसके लिए एडी–चोटी का जोर लगा देता। आगे भी मैं तुम्हारी मदद हर तरीके से करता रहूंगा, लेकिन अपने बेटे को पढ़ाई की तरफ उन्मुख करने के लिए और बेहतर नतीजे लाने के लिए प्रेरित करना आपका काम हैं।

Kids Shoes
LADIES

(म.प्र.) इन्दौर

समाज के राष्ट्रीय प्रतिनिधि

पूर्व विधायक और कांग्रेस नेता अश्विन जोशी के अनुसार शंकर लालवानी पढ़े–लिखे नेता हैं और ताई के उत्तराधिकारी सांसद हैं। समाज के हितैषी हैं और पढ़े–लिखे तथा शरीफ नेताओं में शुमार होते हैं।

शंकर लालवानी का बहुचर्चित लेख

विरोध विपक्ष का अधिकार, लेकिन सत्र निर्बाध चलाने की जिम्मेदारी भी तो ले

शंकर लालवानी

यूं तो मैं पहली बार लोकसभा का सदस्य निर्वाचित हुआ हूं तो कोई भी छोटे मुंह बड़ी बात कहने की हिमाकत नहीं कर सकता। फिर भी अपने अल्पकालीन कार्यकाल के मद्देनजर जिन बातों पर गौर कर पाया हूं,उसमें से कुछ आपके साथ साझा करना चाहूंगा। इसमें सबसे उल्लेखनीय बात यह पाता हूं कि भारतीय संसद के इतिहास में हम सबसे कमजोर और गैर जिम्मेदार विपक्ष के साथ सदन को देख पा रहे हैं। यह लोकतंत्र के लिये चिंतनीय है ही, विपक्ष के लिये भी विचारणीय पहलू है। सत्ता पक्ष में होने से भारतीय जनता पार्टी की भी इस मुद्दे पर चिंता अपनी जगह है ही।

इस समय देश देख रहा है कि विपक्ष याने हंगामा,सडक़ से लेकर तो संसद तक अवरोध,मर्यादाहीनता,फिजूल की बहसबाजी,देश,समाज के प्रति सकारात्मक रवैये के अभाव की गहरी खाई है। मानसून सत्र हो या बजट सत्र, विपक्ष में गंभीरता का सर्वथा अभाव है। ऐसा क्यों है, इसका अनुमान तो लगाया जा सकता है, किंतु वास्तविक प्रकाश तो विपक्ष ही डाल सकता है।

बीते कुछ समय से यह देखने में आ रहा है कि विपक्ष एक सूत्रीय कार्यक्रम पर चल रहा है। वह है, सरकार के हर कदम का विरोध करना। न कोई तर्क, न कोई आधार, न मुद्दा, न औचित्य और न ही राजनीति का तकाजा। राजनीति में एक सीमा तक बेवजह विरोध भी होता है, लेकिन जब विपक्ष विरोध के अलावा दूसरा तरीका ही अख्तियार न करे तो कहना पड़ेगा कि ऐसे तो संसदीय परंपरा,कार्य पद्धति और आचरण ही खत्म हो जायेगा।

अब जबकि करीब एक साल तक किसानों के नाम पर विरोधी राजनीतिक दलों के एजेंडा पर चले आंदोलन के मद्देनजर तीनों कृषि कानून वापस लेने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है, ऐसे में 29 नवंबर से शुरू होने वाले शीतकालीन सत्र में विपक्ष की भूमिका का इंतजार देश कर रहा है।

आप देखें कि जब भी संसद का सत्र प्रारंभ होता है, तब तात्कालिक रूप से ऐसा कोई मुद्दा उछाल दिया जाता है, जिसका कोई सिर–पैर नहीं होता। चूंकि मकसद ही हंगामा खड़ा करना होता है तो विपक्ष इसमें दिमाग ही नहीं लगाता। यदि कहीं कुछ गड़बड़ महसूस कर रहे हैं तो देश की जनता के जिम्मेदार प्रतिनिधि होने के नाते आप संसद में जोर–शोर से वे मुद्दे लाकर सरकार को कटघरे में खड़ा कर सकते हैं। आप जनता की अदालत में मामले को ले जा सकते हैं। लोकतंत्र के मजबूत और विश्वसनीय स्तंभ मीडिया के सामने वस्तु स्थिति रख सकते हैं। विपक्ष वैसा कुछ करने से बचता है, क्योंकि असलियत वह भी जानता है।

जब भी संसद का सत्र होता है, देश को यह उम्मीद रहती है कि वहां स्वस्थ बहस होगी, जन हित के मुद्दों पर चर्चा होगी, जन कल्याण के फैसले लेने में विपक्ष भी सरकार के साथ बराबरी से खड़ा रहेगा, किंतु हम देख रहे हैं कि ये सब कपोल कल्पित होता जा रहा है। विपक्ष ने निश्चित ही ऐसा तय किया लगता है कि कुछ भी हो, वह सरकार के कामों की छिछालेदार ही करेगा।

अब यह बात समझ से परे हैं कि सरकार और विपक्ष दोनों का ही काम जब जन कल्याण है और चुनाव के पहले तमाम दल अपने घोषणा पत्र जारी कर जनहित की योजनाओं की बात करते हैं तो सदन में उन पर चर्चा के समय हंगामा,विरोध या सदन से उठकर चले जाने का क्या मतलब है? यह तो पलायनवादी रुख है। विपक्ष संभवत यह मानता है कि सरकारें कोई काम अच्छा नहीं करती तो सवाल यह है कि जब वे सत्ता में होते हैं तब क्या सोचते हैं?

दरअसल, लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त ही यह है कि विपक्ष न्यायकर्ता की भूमिका न निभाये, बल्कि वह प्रतिस्पर्धी बनकर पेश आये। जब आप

शंकर लालवानी का बहुचर्चित लेख

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करेंगे तो जनता के लिये बेहतर कर सकेंगे। यदि दो दशक पहले की बात करें तो संसद में सत्तारूढ़ दल को आड़े हाथों लेने में विपक्ष का सानी नहीं था। तब अनेक ऐसे सासंद हुए, जिन्होंने लोकतंत्र की मर्यादा के भीतर सरकार को खूब कोसा, उनकी नीतियों की मीमांसा की,उसकी तथ्यपरक आलोचना की और सरकार को अनेक फैसले वापस भी लेने पड़े। इसके विपरीत अब विपक्ष में अजीब तरह की जिद नजर आती है, जो अबोध बच्चे के चांद मांगने की तरह होती है।

मुझ जैसे नये, पहली बार के सांसद बेहद उम्मीदों के साथ संसदीय आचरण सीखने को उत्सुक रहते हैं, लेकिन तब घोर निराशा होती है, जब विपक्ष सदन नहीं चलने देता और उठकर चले जाते हैं, कार्रवाई रोक देना पड़ती है या सत्र समाप्ति की घोषणा करना पड़ती है। अनेक मौके ऐसे आते हैं जब आसंदी तक की मर्यादा का ध्यान भी नहीं रखा जाता और उस पर कागत,वस्तुएं फेंक दी जाती हैं। यह लोकतंत्र का उपहास है और जनता की उम्मीदों पर तुषारापात भी।

आप सरकार के कामों की कमियां उजागर करें, उसे ठीक करने के ठोस उपाय बतायें, पूरे जोर-शोर से अपनी बात रखें, किंतु सदन की कार्रवाई बाधित कर देश के सामने गलत छवि पेश की जा रही है। विदेश में भी हम पर अंगुलिया उठती हैं। पक्ष-विपक्ष दोनों को मिलकर इस पर गंभीरता और पूरी जिम्मेदारी से सोचना होगा। जिसमें एक बात तो सर्व सम्मति से तय कर लेना चाहिये कि चाहे जो हो, सदन तो निर्बाध चलाया जायेगा। किसी मुद्दे पर सहमति,असहमति आपका अधिकार है, लेकिन सदन की मर्यादा भंग करने का अधिकार तो किसी को नहीं होना चाहिये। हम उम्मीद करें कि आने वाले सत्रों में तमाम दल इस पर जरूर गौर कर अपने सदस्यों को ताकीद करेंगे कि पहली अनिवार्यता सदन के संचालन की होना चाहिये।